CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

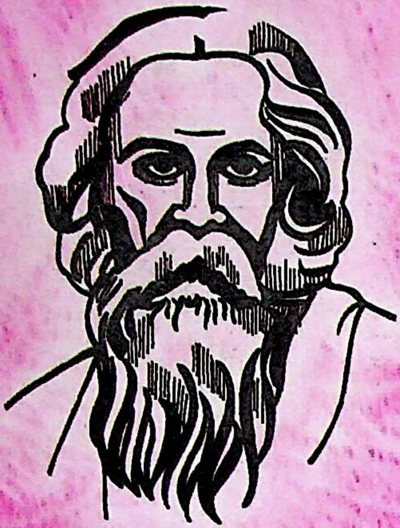

गाजीपुर संवाद

विवेकी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर संवाद

लेखक
डॉ. विवेकी राय

प्रकाशक
स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृतिकेन्द्र
गाजीपुर, उ०प्र०.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

GHAZIPUR SAMVAD
by: DR. VIVEKI RAI

© लेखक

प्रकाशक
श्री रामचन्द्र शर्मा
स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृतिकेन्द्र,
बड़ीबाग, गाजीपुर, उ. प्र. २३३००१

प्रथम संस्करण: २०००२

मूल्य:- १५० रुपया

मुद्रक: सी. एम. सी. प्रिंट्स, प्रो. कालोनी सकलेनाबाद, गाजीपुर, फो. २२४३७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

इस

'गाजीपुर संवाद'

में

सम्मिलित उन सभी सुधी व्यक्तियों को

जिनका नामोल्लेख

इस कृति में सादर हुआ है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द विनम्र निवेदन के

अपने प्रिय जनपद से मेरा हार्दिक लगाव है। इसी लगाव के दबाव से यह "गाजीपुर-संवाद" पूर्णता तक पहुँचा। इसे लिख कर तथा प्रकाशित कर सन्तुष्ट तो हूँ परन्तु इसके साथ ही भीतर घोर संकोच भी है। इस संवाद में जो गाजीपुर की साहित्यिक चेतना के विकास वाला प्रकरण है, उसमें संभव है बहुत से दोष हों, होंगे ही। क्षमाप्रार्थी हूँ। कार्य शीघ्रता में हुआ है। क्रम और विभाग आदि व्यवस्था से सम्बन्धित जाँच-पड़ताल के तनाव को अधिक दिनों तक झेलने की मेरी स्थिति नहीं रही। जल्दी में गलतियाँ हुई होंगी। सही सिर्फ इतना है जिसे पूरे विश्वास के साथ कहना चाहता हूँ, कि सावधानी के साथ और जो जैसा मिला है, जितना मिला है, वह सब अपनी समझ के अनुसार यथातथ्य रूप में प्रस्तुत करता गया हूँ। सजग रहा हूँ कि अन्याय न हो और हर अक्षर -पुरुष को न्याय मिले। अक्षर - पुरुष न छोटा होता है और न बड़ा और वह न ही किसी जाति-वर्ग या राजनीति के खानों वाला होकर अपना-पराया या प्रिय-अप्रिय होता है। ऐसे सभी लोग अपने-अपने ढंग से समाज की सेवा करते हैं। उनकी सेवाओं का सबको जाने-अनजाने लाभ मिलता है। इस प्रकार साहित्य के साथ साहित्यकार भी अपनी विशिष्टता में अमर है। उसके इस अमरत्व को समग्र रूप में देखना पर्याप्त कुतूहलवर्द्धक और प्रेरणाप्रद होगा। इससे जो आत्मगौरव का भाव जगेगा वह बहुत मूल्यवान् होगा। लाख अवमूल्यन के बाद भी अपनी संस्कृति के लिए तथा अपने साहित्य और साहित्यकार के लिए जन-मानस में एक सम्मान का कोना सुरक्षित है। अपने जनपद गाजीपुर के इसी सम्मान मंच को कोने-कोने से उठा कर विस्तृत फलक पर समवेत रूप में प्रदर्शित करना इस साहित्यिक संवाद का उद्देश्य है। इस 'गाजीपुर संवाद' से अपने प्रिय जनपद के प्रति आपके हृदय में यदि सम्मान -भाव उदित हुआ तो अपने श्रम को सार्थक समझूँगा

'गाजीपुर की साहित्यिक चेतना का विकास' में जिन पुस्तकों से सहायता ली गयी है उनके नाम हैं 'गंगा और गोमती के कोण पर' (सन् १९६८) सम्पादक डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक और डॉ. विश्वनाथप्रसाद श्रीवास्तव, 'गहमर गौरव' (सन् २०००) प्रधान सम्पादक पद्मश्री डॉ. कपिलदेव द्विवेदी और श्री सत्यनारायण सिंह 'नन्दा जी', 'गाजीपुर का इतिहास' (सन् १९९८ ई.) डॉ. शिवमंगल राय, 'जमदग्नि की धरती' (सन् २०००ई.) ले. मार्कण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राय, और 'जमदग्नि वीथिका'(पत्रिका- प्रवेशांक १९९९ ई.)सम्पादक संजयकृष्ण। इसके अतिरिक्त डॉ. मान्धाता राय, डॉ. पी. एन. सिंह,डॉ. सरजू तिवारी,श्री हरिनारायण 'हरीश', श्री रामचन्द्र शर्मा और श्री शेषनाथ राय, एडवोकेट आदि साहित्यकार मित्रों ने अपेक्षित सूचनायें देकर इस पुस्तक को पूर्ण करने में मदद की है। इन सभी जनों के प्रति तथा 'गाजीपुर की जनपदीय चेतना का विकास' की श्रमपूर्ण लेखकानुक्रमणिका बनाने के लिए प्रकाशक श्री रामचन्द्र शर्मा के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

इस कृति के परिशिष्ट में 'बलिया जनपद की साहित्यिक परम्परा' नामक एक अपना निबन्ध जोड़ दिया है। यह कार्य आवश्यक था। इन दोनों जनपदों का अन्तर सम्बन्ध बहुत गहरा है। सन् १९१४ के पूर्व दोनों दो नहीं, बल्कि एक थे, दोनों का इतिहास एक था। इसके अतिरिक्त एक और कारण भी है। आरंभ से ही बलिया जनपद से मेरा गहरा आत्मीय सम्बन्ध रहा है। विशेष कर वहाँ का साहित्यिक संसार एक युग तक मेरा अपना संसार रहा है। उसी आत्मीयता ने उक्त निबन्ध को रुचिपूर्वक तैयार करा दिया था और गाजीपुर के साथ उसे मैंने सँजो दिया है। इससे हमारे मित्रों को सन्तोष होगा, ऐसी आशा है।

बलिया से सम्बन्धित मेरा उक्त निबन्ध बहुत पहले का लिखा गया है। उसके अन्त में एक 'विशेष टिप्पणी' जोड़ कर उसे वर्तमान समय तक पहुँचा दिया गया है। इस संक्षिप्त टिप्पणी को तैयार करने में मुझे बलिया के डॉ. आद्याप्रसाद द्विवेदी, डॉ.अशोक द्विवेदी, डॉ. अनिलकुमार 'आंजनेय' तथा कु. विनीता दत्त से सहयोग मिला। एतदर्थ इन सब लोगों के प्रति मैं आभारी हूँ। सी.एम.सी. प्रिंट्स (गाजीपुर) के युवा मुद्रकों प्रणव प्रकाश द्विवेदी और श्रीरंग प्रकाश द्विवेदी ने बहुत उत्साह से इस कृति को सँवारने-सुधारने और अंतिम रूप देने में योगदान किया है। इसके लिए इनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन करना आवश्यक समझता हूँ।

'गाजीपुर की साहित्यिक चेतना का विकास' से सम्बन्धित त्रुटियों के विषय में संशोधन-परिवर्द्धन सम्बन्धी पाठकों और साहित्यकार मित्रों के सुझावों का हार्दिक स्वागत होगा और कृति के अगले संस्करण में उनका उपयोग किया जायेगा।

विवेकी राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय सूची

(क) गाजीपुर की एक सांस्कृतिक परिक्रमा

१. फले -फूले गाजीपुर गंगा की गोद में — १

२. लहुरी काशी बनाम गाजीपुर — ६

३. सन् ६४ का गाजीपुरः चौराहे से छराहे तक — ९

४. लार्ड कार्नवालिस का स्मारक — १४

५. विश्वकवि का अवसादपुर बनाम गाजीपुर — १८

६. सिद्ध सन्त पवहारी बाबा, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी निर्वेदानन्दः कुर्था गाँव से प्रज्ञाधाम तक — २४

७. श्रीराजन शुक्ल का अवदानः रामलीला मैदान — ३१

(ख) गाजीपुर की जनपदीय साहित्यिक चेतना का विकास

१. आरंभ और विकास — ४१

२. आधुनिक काल — ४६

३. प्रगति के बढ़ते चरण — ५५

४. साहित्यसेवा के बहुआयामी परिदृश्य — ६७

५. नयी शताब्दी और सहस्राब्दी के अवदान — ७९

६. बाहर के प्रवासी साहित्यकारों की सेवायें — ९०

(ग) परिशिष्ट

१. बलिया जनपद की साहित्यिक परम्परा — ९९

२. लेखक की अन्य रचनाओं में गाजीपुर — ११३

३. लेखकीय परिचय — ११७

४. नामानुक्रमणिका ('गाजीपुर की जनपदीय चेतना का विकास' से सम्बन्धित) — १२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर की एक सांस्कृतिक परिक्रमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फूले-फले गाजीपुर गंगा की गोद में

गाजीपुर जनपद न केवल प्राचीन काशी-खण्ड से जुड़ा रहा है बल्कि इसके इतिहास ने अनार्य, द्रविड़ और विभिन्न प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के बीच से अपनी विकास-धारा के लिये मार्ग बनाया है। ऐसे स्पष्ट साक्ष्य मिले हैं कि यह क्षेत्र आर्य-अनार्य संस्कृतियों की टकराहटों का भी केन्द्र रहा है। इसके इतिहासफलक पर वेदकालीन सम्राट् देवदास और महाकाव्यकाल के रघुवंशी राजा कभी उभरे थे, विशेषकर राजा दशरथ। यह जनपद युगीन जैनधर्म और बौद्धधर्म का प्रचारक-प्रसारक भी रहा। मौर्य, गुप्त, शुंग राजाओं की कालावधि के क्रियाकलाप यहाँ अपनी स्पष्ट छाप छोड़ते हैं। मध्यकालीन राजा पृथ्वीराज के उत्तराधिकारी महाराजा मान्धाता का राज्य-काल और उनका एक इतिहास तो सीधे गाजीपुर नगर की स्थापना से जुड़ा हुआ कहा जाता है। यहाँ के ऐतिहासिक स्थल स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि गाजीपुर जनपद ने मुसलिम सहित विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

मेरे इस भारतीय पुराण -इतिहास से सीधे जुड़े गाजीपुर नगर और जनपद का वर्तमान स्वरूप भी कदापि हीन नहीं है। यहाँ महीनों प्रवास कर गुरुदेव रविबाबू ने 'नौका डूबी' और "मानसी" की रचना की। "मानसी" में गाजीपुर नगर का जो चित्रण है वह बहुत मोहक और रागाकुल है। यहीं तीन मास तक प्रवास कर स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका जाने के पूर्व प्रसिद्ध सन्त पवहारी बाबा से आशीर्वाद लिया। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान ने यहाँ के लिए अपने यात्रावर्णन में, चीनी भाषा में "चीन-चू" शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ होता है 'अतिभव्य स्थल।' "चित्रावली" के लेखक प्रसिद्ध सूफी कवि उसमान का अपना शहर, बाबरी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त कवि भीखा-गुलाल आदि के उद्भव -स्थल भुड़कुड़ा सहित संगीत-क्षेत्र के महान् शिखरपुरुष पं. उदयशंकर के जन्मस्थल बहरी वाला यह प्रतिष्ठित जनपद सचमुच महान् है।

मेरे ऐसे महान् और रईस शहर गाजीपुर की कोई निन्दा करता है, इसे कोई जब ऊँघता हुआ, नशे में झूमता हुआ और पिछड़ेपन में डूबता हुआ ठण्डा शहर कहता है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या कहता है कि यह लाहौरी ईंटों और ताड़-खजूर-मकबरों-खण्डहरों का उदास शहर है तो अन्याय करता है। मैं कहता हूँ कि यही सब देखा है आपने इस शहर में? लगता है, आपने उत्तर ओर से इसे ट्रेन पर सफर करते हुए देखा है। तो यह राहचलन्ता देखना तो कुछ बना नहीं। उत्तरपक्ष के इस यथार्थवादी वाम से हट दक्षिणाभिमुख हो इसके अभिजात सांस्कृतिक आदर्श रूप को भी तो देखिये।

देखिये कि कितना खुशनसीब है यह शहर जिसकी पूरी आठ-नौ किलोमीटर तक की लम्बाई में एकदम सटी-सटी पवित्र गंगा नदी बह रही है। हरिद्वार और काशी की तरह इसके सतत पार्श्व-प्रवाहिनी होने का ऐसा पुण्य कितने शहरों को प्राप्त है? लोग झूठ नहीं कहते कि काशी से मात्र पचहत्तर किलोमीटर पूर्व बसा गाजीपुर अनेक दृष्टियों से एक और काशी है, लहुरी काशी है। गंगातट का ठीक वैसा ही अर्द्धचन्द्राकार रूप, वैसे ही मन्दिर, वैसे ही घाट,एक-दो नहीं, कुल बीस भव्य घाट, प्रशस्त, मजबूत ऊपर से नीचे तक देवालयों से शोभित, जिनके पीछे ऐतिहासिक साक्ष्य खड़े हैं। कुछ झलक तो उनके नामों में ही मिल जायेगी।

पश्चिम से चलें तो महादेवा घाट, नवापुरा घाट, ददरी घाट, ठाकुरद्वारा घाट, कलक्टर घाट, बुलाकी घाट, स्टीमर घाट, चीतनाथ घाट, नकटवा घाट, राम घाट, खाकीबाबा घाट, नेपाली घाट, बीच में कुछ और घाट जैसे पक्का घाट, अनजही घाट, कोयला घाट , खिड़की घाट, जनाना घाट, इस्लामियाँ घाट और गोला घाट आदि घाट ही घाट। इस प्रकार मेरे पवित्र घाटों और मन्दिरों वाले शहर के लहुरी काशी होने में सन्देह है? नहीं। संक्षेप में कुछ और भी देखें, वाराणसी की भाँति यहाँ संकटमोचन का पवित्र स्थान, वैसी ही रामलीला की परम्परा वाले लंका आदि मुहल्ले, वैसी ही जगन्नाथ जी के प्रसिद्ध मंदिर से जुड़ी रथयात्रा की भव्य परम्परा... कितना कहें? डर लगता है, आप आधुनिक आदमी हैं, गंगा नदी, मंदिर, घाट और धर्म-संस्कृति से जुड़ी परम्परायें संभव है, आप की रुचि के अनुकूल न पड़ती हों। तो क्या करूँ? क्या अब अपने शहर की गरीबी की चर्चा आप से करूँ ? अरे हाँ, याद आया। दिल्ली में एक व्यक्ति से इसकी चर्चा की तो उसने चौंक कर कहा, गरीबी? गाजीपुर को आप गरीब कहते हैं? पता लगा लीजियेगा, जब स्वराज्य से पूर्व जिलों पर प्रायः एक ही स्टेटबैंक हुआ करता था, गाजीपुर में चार-चार बैंक थे। फिर यह क्यों नहीं देखते कि इस पार -उस पार मिलाकर छोटी लाइन-बड़ी लाइन के तीन स्टेशन किस बात के प्रमाण हैं? दो-दो हवाई अड्डे भी गाजीपुर के अगल-बगल हैं, और इन बातों को सुनकर मैं हक्का-बक्का। याद आया, अर्थशास्त्र में कहा जाता है, भारत एक धनी देश है मगर यहाँ के लोग गरीब हैं, ऐसा ही कुछ कारण है क्या? तब मैं दिल्ली की बात झुठला कैसे दूँ? दिल्ली दिल्ली है , ऊँची बात सोचती है, वह जब भी जोड़ेगी तो गाजीपुर को गुलाब से ही जोड़ेगी। हालाँकि गाजीपुर और गुलाब का वही सम्बन्ध रह गया है जो कभी महाकवि बिहारी के एक दोहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में उभरा था, 'जिन दिन देख्यौ वे कुसुम गयी सु बीति बहार, अब अलि रही गुलाब की अपत कँटीली डार'। कभी गुलाब की खेती के लिए, सुगन्धित फूलों के लिए रही भारी शोहरत और वे ही दिन थे कि कवीन्द्र रवीन्द्र ने अपने प्रवास से जिसे गौरवान्वित कर 'नौका डूबी' और 'मानसी' की रचना की, अपने आध्यात्मिक गुरु की तलाश में स्वामी विवेकानन्द ने जिसकी फूलों की सुवास में डूबी हवा में महीनों साँस लेकर तृप्ति का अनुभव किया। तब इसका एक और उपनाम था फूलनपुर। अब फूलनपुर में गुलाब नहीं, उसके काँटे शेष हैं। गुलाब कहीं और चला गया, शायद दिल्ली चला गया। पहले वह इंग्लैण्ड जाया करता था। डॉ. धर्मवीर भारती ने एक दिन बताया कि उन्होंने एक बार इंग्लैण्ड में घूमते हुए लार्ड कार्नवालिस के स्मारक के पास एक सुरक्षित क्यारी में खिले हुए गुलाब का एक खूबसूरत पौधा देखा। उसके पास ही एक सूचनापट्ट पर अंग्रेजी में लिखा था कि यह गुलाब गाजीपुर से आया है। कितनी रोमांचक बात है! मेरे शहर का गुलाब इंग्लैंड में खिला है और उसके काँटे यहाँ बिखरे हैं। एक बड़ा भारी,मजबूत और खूबसूरत काँटा लार्ड कार्नवालिस का मकबरा है। बेचारा इसी जिले में मर गया। हम रवीन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, इंदिरा गांधी, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्र प्रसाद, लालबहादुर शास्त्री, अम्बेडकर और महात्मा गांधी को स्मारकों और मूर्तियों के रूप में आदर देने के साथ लार्ड कार्नवालिस को भी सम्मान दे रहे हैं। एक भोजपुरी कवि ने गाजीपुर शहर की विसंगतियों का विस्तारपूर्वक चित्रण करते हुए अन्तिम पंक्ति में यहाँ के लोगों की मानसिकता और विवशता पर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि 'इहे जानि मन सब्बुर बा, लाट साहब के कब्बुर बा'। अर्थात् चलो, यहाँ कल-कारखाने, अच्छी सड़कें , रंगमंच, खूबसूरत पार्क, सार्वजनिक पुस्तकालय और सफाई की व्यवस्था आदि नहीं है तो क्या हुआ? सब्र करने के लिए लाट साहब की कब्र तो है न?

सचमुच ही हम गाजीपुर की पुरानी प्रसिद्ध वस्तुओं, जैसे अफीम की फैक्ट्री, महाराजा गाधि की गढ़ी, कोट वाले हनुमान जी का मंदिर, नबाब का किला, नबाब की चहारदीवारी , नबाब का फाटक, प्याला की बारी, एक ताख की मस्जिद, हिजड़ों की मस्जिद, पहाड़ खाँ का पोखरा, पवहारी बाबा का समाधि-स्थल, जगन्नाथ जी का मन्दिर और बाला जी का मंदिर आदि के साथ लार्ड कार्नवालिस के मकबरे का भी नाम लेते हैं। वह है भी नाम लेने लायक।

नये दौर में नाम लेने लायक कुछ और छोटे-मोटे स्थल भी उगे हैं। जैसे पश्चिम की ओर से दो महाविद्यालय, आर.टी.आई.,हमीद सेतु, ददरी घाट का संकटमोचन मंदिर, विकास निगम , गाजीपुर सिटी का नवनिर्मित स्टेशन,गायत्री शक्तिपीठ , स्नातकोत्तर महाविद्यालय का पुस्तकालय, नेहरू स्टेडियम और गाजीपुर का प्रसिद्ध ऐतिहासिक और विशाल रामलीला- मैदान। अच्छा रुकिये, यहाँ इस अंतिम नाम की चर्चा पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपको लग सकता है कि मैं कुछ शरारत कर रहा हूँ। संभव है, आपके मुँह में थूक भर गया हो और आपने पिच्च करके सिक्के भर जमीन को गाजीपुर का लंकास्थित रामलीला-मैदान बना दिया हो। संभव है, आपको लग रहा हो, यह तो सारा मजा किरकिरा हो गया और सारा सारा सौन्दर्य-संभार गन्दगी और गलीज से भर गया। तो क्या कीजियेगा? मेरा दोष भी क्या? क्या हुआ जो कभी का पवित्र रामलीला-मैदान और सार्वजनिक धरोहर आज सार्वजनिक शौचालय बना हुआ है, निःशुल्क और मुक्त, फिर ऐतिहासिक महत्ता तो इसकी माननी ही पड़ेगी।

यह मैदान न केवल राष्ट्रीय स्मृति के रूप में नमक-सत्याग्रह से जुड़ा है बल्कि २ अक्टूबर सन् १९२९ को महात्मा गांधी के आगमन और उद्बोधन से पवित्र हो चुका है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रधानमंत्री राजीव गांधी, चौधरी चरण सिंह और लोकनायक जयप्रकाश आदि जैसे व्यक्तियों के भाषणों से गुंजित हो चुका है। अब भी साल में एक बार दशहरे भर तक पूरे शहर की धड़कनों की भाँति धड़कता रहता है और विशाल रावण के पुतले को जलाकर राम के विजयघोष में डूब जाता है। लेकिन उसके बाद अगले ही दिन से यह क्या शुरू हो जाता है? अगणित प्रदूषण के रावण के सिर सुबह -शाम के अंधेरे में ही नहीं,दिन के उजाले में भी परम बेहयाई के साथ जमीन पर उगने लगते हैं।

नाना प्रकार के आदर्शवादी नारों से अलंकृत और रामलीला मैदान में सगर्व सिर उठाये खड़ा नेताओं का पक्का भाषण-मंच इस गन्दे घिनौने यथार्थव्यूह में घिर जाता है। लोकतांत्रिक उपलब्धियों के बीच यह यथार्थवादी उपलब्धि गाजीपुर के संदर्भ में सबसे क्रूर-कठोर सत्य है। बेशक, लंका का रामलीला मैदान गाजीपुर का एक भद्दा यथार्थ है। प्रदूषण इसकी मूल प्रवृत्ति है। राम -जानकी के आरती-मंच और राम-जानकी मंदिर के बीच यह अखिल प्रदूषण की कुरूप प्रदर्शनी इस नगर की मूल प्रवृत्ति का प्रतीक बन जाती है। नगर के सुन्दरीकरण के विशाल और मजबूत सरकारी हाथ इसका स्पर्श भी नहीं कर पाते हैं।(सुन्दरीकरण हो रहा है। चित्रण आगे है)

वास्तव में सरकार की योजनाएँ परिधियों पर चलती हैं और उनमें नये मौकों की खोज होती है। पुराना जो कुछ है सड़कर बजबजा रहा है। यही गाजीपुर की स्थायी नियति है। हमने शहर के मध्य में ऐतिहासिक पहाड़ खाँ के सड़ते पोखरे को मच्छरों की होल-सेल सप्लाई का केन्द्र बना रखा है और हम निश्चिन्त हैं। आप कहेंगे निश्चिन्त नहीं हैं, अफीम के नशे में कहीं खोये हैं। लेकिन ठहरिये, शायद ऐसा नहीं है। क्या हुआ जो अन्तरराष्ट्रीय ख्याति की यह अफीम फैक्ट्री अब शहर के हृदयभाग में पड़ गयी है। वास्तव में इसका सारा विष गंगा जी खींच लेती हैं। एकदम तट पर है न ? बहुत महिमा है गँगिया माई की। उसी के राखे यह शहर है। यहाँ के लोगों की मति शुद्ध है। कलक्टर-एस.पी. सहित सारे अधिकारियों के बंगले और यहाँ तक कि पूरी कचहरी गंगातट पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। गाजीपुर की राजी खुशी का यही राज है। अधिकारियों के लिए तो यह फिरदौस बररूये जमीनस्त है। वे इसकी उदासी-मलिनता पर खीझते-झींकते आते हैं और चन्द दिनों में रीझकर हरे हो जाते हैं। यहाँ के सभ्य लोग उन्हें भरपूर समादर देते हैं। वे भी उन्हें नेताओं की भाँति आदर देते हैं। चूँकि यहाँ प्रथम श्रेणी के नेताओं का अभाव है इसलिये हर व्यक्ति द्वितीय-तृतीय श्रेणी का नेता है। शायद इसीलिए यहाँ अपेक्षाकृत बहुत शान्ति है। उपद्रवों की जड़ तो नेता होते हैं। जहाँ जितने बड़े नेता वहाँ उतना ही बड़ा उपद्रव, उतना ही बड़ा दुर्भाव। साम्प्रदायिक सद्भाव का तो गाजीपुर पूरे देश में उदाहरण है। एक तो गंगातीरी किसान-संस्कृति के अवदान और दूसरे सूफी तथा सन्त कवियों की पुष्ट परम्परा से आयी शालीनता के कारण मेरे शहर में शिक्षा, राजनीति, साहित्य, समाज, पत्रकारिता और क्रीड़ा आदि के क्षेत्रों में सहअस्तित्व के अन्तरभाव प्रभावी रहते हैं। कविसम्मेलनों के मंच पर हिन्दी, उर्दू और भोजपुरी के कवि साथ-साथ बैठते हैं। राजनीति में सबकी बातें शांतिपूर्वक सुनने और अयोग्य प्रतिनिधियों को भी धैर्यपूर्वक झेलने की सहिष्णुता यहाँ अभी भी विद्यमान है।

काफी दिनों तक यह गाजीपुर शहर साम्यवादी और समाजवादी आंदोलनों का गढ़ रहा परन्तु उनके प्रभाव से जनता में जुझारूपन की कोई सही दिशा विकसित नहीं हो सकी। आरंभिक दौर के गांधीवादी जनान्दोलनों और बलिदानी कीर्तिमानों सहित स्वातंत्र्योत्तर कांग्रेसी कार्य-कलापों के प्रभाव भी धुल पुँछ कर साफ हैं। कुल मिलाकर रईस शहर गाजीपुर का राजनीतिक रूप कोरे कागज की तरह है। इस पर एक अदृश्य लिखावट में सांस्कृतिक सूत्र अंकित है। इस शहर के सनातन सांस्कृतिक रूप का प्रतिनिधित्व स्वयं माता गंगा करती हैं। इस शहर को उनका अकूत प्यार मिल रहा है और उनकी पवित्र गोद में यह स्वयमेव फूल-फल रहा है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहुरी काशी बनाम गाजीपुर

गाजीपुर एक ऐसा ऐतिहासिक नगर है जो पौराणिक नगरी काशी के पड़ोस में स्थित है। यह उसी की तरह सतत पार्श्वप्रवाहिनी गंगा के अर्द्धचन्द्राकार तट पर एक और लहुरी काशी जैसा प्रतीत होता है और बीस नामित ऐतिहासिक घाटों सहित होने के कारण ऐसा लगता है कि सचमुच ही घाटों की नगरी के पड़ोस में होने के कारण पड़ोसी का धर्म निभा रहा है। इन घाटों में कुछ तो अतिभव्य, प्रशस्त और मजबूत पत्थरों से निर्मित हैं और ऊँचे तट से नीचे दूर तक गंगा की पेटी में समाये हुए हैं। तटवर्ती मंदिरों और देवस्थानों की शृंखला में एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक वातावरण की पवित्र अनुभूति होती है। इस स्थिति पर सभी को गर्व होना चाहिए। गर्व से सिर ऊँचा उठ जाना चाहिये और उठता भी है। लेकिन घाटों की सुन्दरता और उपयोगिता के गुलाब को गंदगी और उपेक्षा के कीड़े भी कम नहीं खाते हैं। लगभग हर घाट के अगल-बगल गंदे नाले पवित्र गंगा को अपवित्र बनाया करते हैं। इन नालों का जिक्र कर पाठकों को गंदगी में डुबाना रचना का उद्देश्य नहीं है। इन घाटों सहित गंगा की अवशिष्ट रमणीयता में क्षण भर के लिए उन्हें उतारना है।

दो रेलवे स्टेशनों और दो हवाई जहाज के अड्डों वाला ऐतिहासिक शहर गाजीपुर पूरब-पश्चिम को गंगा के किनारे-किनारे लगभग आठ-नौ किलोमीटर की लम्बाई में फैला है। जैसा कि पिछले निबन्ध में चर्चा है, पश्चिम से घाटों को देखें तो सबसे पहले महादेवा घाट पड़ेगा। यहाँ से क्रम से नवापुरवा घाट, ददरी घाट, नकटवा घाट, रामघाट, खाकी बाबा का घाट और नेपाली घाट आदि सबको एक सिलसिले से देख सकते हैं। घाटों के ये नाम स्वयं अपने आप में इतिहास, संस्कृति, समाज और धर्मव्यवस्था के उद्घोषक हैं। कुछ के पीछे अनुरंजनकारी किंवदन्तियाँ लगी हुई हैं। काल के धक्के से छूटने और खदरने से जो घाट बचे हुए हैं उन्हें तथा उनसे जुड़े मंदिरों को देखकर और गंगा के सतत सान्निध्य, स्नान और पूजापाठ की चहल-पहल को देखकर आज भी किसी आध्यात्मिक ऊँचाई को छूते अतीत से जुड़ते दर्शकों का मन मुग्ध हो जाता है। इन घाटों का प्रशस्त रूप और इनका विस्तार चकितकारी है। गर्मी के दिनों में भी, पानी सूखकर कम हो जाने पर भी, ये जल के भीतर बहुत दूर तक गहराई में गये हुए मिलते हैं और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नगर को एक अपूर्व-अनिर्वचनीय स्नान-लाभ प्रदान करते हैं। ददरी घाट जैसे कुछ विशाल घाट ऐसे भी हैं, जिन्हें सम्पूर्ण रूप से मिट्टी के भीतर से खोदकर निकाला गया है। संभव है मिट्टी की परतों में दबे कुछ और घाट भी यहाँ उद्धार की प्रतीक्षा में हों। यह और बात है कि इस महत्ता को नालों की गंदगी अत्यधिक आहत करती है और प्रदूषण की समस्या अपनी पूरी भयंकरता से सामने आकर खड़ी हो जाती है।

गंगा को प्रदूषित करने वाले नालों को पश्चिम ओर से ही एक-एक कर देखें तो सुविधा होगी। इनकी शुरुआत पवहारी आश्रम के पास वाले नाले से होती है। इस के बाद पुलिस अधीक्षक के बंगले के पास का नाला , अफीम फैक्ट्री का नाला, ददरी घाट का अतिप्राचीन अण्डरग्राउण्ड नाला, कलक्टर घाट का नाला, मसूद घाट का नाला, गोला घाट के पूरब का नाला, चीतनाथ घाट के पश्चिम वाले दो नाले तथा अनजही घाट का नाला। वाराणसी की गंगा को यदि उनहत्तर नाले प्रदूषित कर रहे हैं तो गाजीपुर शहर की गंगा के लिए दस नाले अनुपात में कम नहीं हैं। उत्तर प्रदेश का गंगाजल जो छप्पन प्रतिशत प्रदूषित है उसमें गाजीपुर के अंशदान को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। इन नालों से उठने वाला प्रदूषण का ज्वार सबसे अधिक प्रभावित स्वयं अपने शहर को कर रहा है। प्रत्यक्ष रूप से शहर पर चाहे जिसका भी शासन हो, अप्रत्यक्ष रूप से इन गन्दे नालों का सम्पूर्ण शहर पर शासन है। भद्दगी, गन्दगी और बीमारी के अनुशासन में शहर मर रहा है।

बेशक गंगाघाटों के रूप में भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने वाले भारत के शहरों में गाजीपुर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। महादेवा घाट, ददरी घाट और चीतनाथ घाट तो तीर्थस्थल हैं और विभिन्न ऋतुओं में लगने वाले मेलों के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। कुछ घाटों पर स्थित मंदिर अपनी भव्यता प्राचीनता और मौलिकता के संदर्भ में आज भी अनूठे हैं। पक्का घाट पर जगन्नाथ जी का मंदिर ऐसे ही मंदिरों में से एक है। आज भी वहाँ मंदिर से जुड़ी पूजापाठ आदि की सांस्कृतिक परम्परा सुरक्षित है। वहाँ से रथयात्रा का जुलूस जगन्नाथ जी के रथ के साथ अब भी प्रतिवर्ष यथासमय निकलता है। इसी प्रकार खिड़की घाट पर बाला जी का मंदिर भी दर्शनीय है। यहाँ के घाट, मन्दिर और आसपास के परिवेश को देखकर दर्शक भूल जाता है कि वह गाजीपुर में है या काशी में। वास्तव में यह एक अनुसन्धान का विषय है कि गाजीपुर पर वाराणसी की कितनी गहरी छाप है। वाराणसी की ही भाँति यहाँ ददरीघाट पर संकटमोचन का अतिप्राचीन, प्रख्यात और भक्तों की भीड़ वाला स्थान है। यहाँ रामलीला के संदर्भ वाले पृथक्-पृथक् मुहल्लों में पृथक् -पृथक् स्थान हैं। एक पूरे मुहल्ले का नाम ही वाराणसी की भाँति लंका है, जिसके विशाल मैदान में रामलीला का अन्तिम मेला लगता है। इसी प्रकार विश्वेश्वर गंज, लंका , संकटमोचन, सैय्यदबाड़ा और गुरुबाग आदि मुहल्लों के नाम भी वाराणसी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभाव का भरपूर समर्थन करते हैं। वाराणसी में एक मुहल्ला यदि 'नीचीबाग' है तो गाजीपुर में 'बड़ी बाग', जहाँ के ऐतिहासिक अखाड़े पर कभी गामा पहलवान के पधारने की बात कही जाती है।

यह एक सच है कि गाजीपुर का प्राचीन सांस्कृतिक वैभव और गंगाघाटों सहित उससे जुड़े समूचे संदर्भ बहुत उत्साहवर्धक हैं। आज जब वे ऐतिहासिक घाट समय के धक्के से टूटकर सुरक्षा के लिए गुहार लगा रहे हैं तो उसकी अनसुनी करना राष्ट्रद्रोह है। यह गुहार महात्मा दर्दर के आश्रम, सर्वधर्म संत मंदिर, बलराम-रोहिणी तथा भैरव जी के मंदिर जैसे दुर्लभ स्थलों की ओर से ही नहीं, बल्कि साम्प्रदायिक सद्भाव के ऐतिहासिक प्रतीक इस्लामियाँ घाट की ओर से, जनाना घाट और पक्का घाट की ओर से जिन्हें गाजीपुर के नबाब को प्रसन्न करने के लिए आजमगढ़ के लोगों ने बनवाया था, उन अनजही और गोलाघाट जैसे प्राचीन ऐतिहासिक व्यापारिक घाटों की ओर से भी हो रही है। इन घाटों से कलकत्ता आदि शहरों से व्यापारकार्य चलता था। इसी साधन से तथा इन्ही घाटों पर कभी स्टीमर द्वारा यात्रा समाप्त कर कवीन्द्र रवीन्द्र और विवेकानन्द जैसे लोग गाजीपुर आये। स्वामी विवेकानन्द जनवरी १८९० में स्वास्थ्यलाभ के लिये आये। उन्होंने पवहारी बाबा (कुरथा आश्रम) के दर्शन किये। वे यहाँ लगभग ३ मास तक रहे। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर सत्ताइस वर्ष की आयु में फरवरी सन् १८८८ में अपनी किशोरी पत्नी के साथ भ्रमण के लिए गाजीपुर आये और लगभग सात मास के इस प्रवास में "नौका डूबी" और 'मानसी' आदि को लिखा। सो, गाजीपुर का यह स्टीमर घाट भी इन विश्व-विभूतियों की स्मृति से जुड़ गया।

कहते हैं, गंगा नदी के किनारे बसने वाले शहरों में हरिद्वार और काशी के बाद गाजीपुर ही ऐसा शहर है जहाँ के घाट तीन सौ वर्ष से लेकर चार सौ वर्ष पुराने काल के बने हुए हैं। इन घाटों की सुरक्षा वास्तव में गाजीपुर की सुरक्षा है।

उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के सुन्दरीकरण की जो योजनाएँ चल रही हैं, पर्यावरण -प्रदूषण की रोकथाम के जो यत्न चल रहे हैं तथा गंगाजल -शुद्धीकरण के जो अभियान चल रहे हैं उनसे गाजीपुर अछूता नहीं है। यहाँ भी इस सन्दर्भ में कुछ कार्य हुआ है। जिस दिन यह कुछ पूर्ण में परिवर्तित हो जायेगा उस दिन यह गंगाघाटों वाला प्रसिद्ध पौराणिक-ऐतिहासिक शहर अपनी पवित्रता और सुन्दरता से अति आकर्षक हो जायेगा तथा भारत के मानचित्र में इसकी घाट - संस्कृति से जुड़ी चमक पृथक् से पहचानने योग्य हो जायेगी।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९६४ का गाजीपुर

चौराहे से छराहे तक

उस साल फिर एक नये "भैंसलोट रोड" से पाला पड़ गया। उसके पूर्व वर्ष जुलाई के महीने में बलिया जिले के एक कोने में उस "भैंसलोट रोड" को देखा था और ३१ जुलाई, ६३ के 'आज' में उसका बखान करना पड़ा था। इस वर्ष गंगाजी के छोह से अपने खास जिले पर यानी गाजीपुर में ही बरसात भर इस "भैंसलोट रोड" पर दँवरी करनी पड़ी है।

नित्य विद्यालय जाते-आते इस फैंसी रोड के कमाल देखने को मिलते हैं। यहाँ यह बता देना अत्यावश्यक है कि इस अवर्णनीय पथ का आरम्भ एक चौराहे से होता है और अन्त एक छराहे पर हो जाता है। एक ओर चतुर्मुख, दूसरी ओर षट्मुख और बीच में यह छपछपिया भवानी।

कोई पहेली नहीं बुझा रहा हूँ, सही बात कह रहा हूँ। हाँ, यदि अभी तक आप नहीं पहुँचे तो आइये अब आपको इस दर्शनीय स्थल पर ले चलूँ। आप कहाँ जाना चाहते हैं? डिग्रीकालेज जाइयेगा? ठीक, समझा। आप इसी सिलसिले में प्रसिद्ध लार्ड कार्नवालिस का स्मारक भी देखना चाहते हैं। घबरायें नहीं, कचहरी के बाद पीरनगर डाकखाने से कुछ आगे तक, चाय की दूकान तक पीच रोड है। यहाँ चौराहा है। दो ओर आर.टी.आई. का राजकीय वैभव धवल भवनों में झलक मारता मिलेगा।

यहीं पर कोने से घायल छिपकली की भाँति यह भैंसलोट रोड फूटता है। आप आगे बढ़ने में सहम रहे हैं? देखिये साहब, खिलवाड़ नहीं है, यह सड़क है। इसी सड़क पर डिग्रीकालेज है। इसी पर से नित्य डिस्ट्रिक्ट एग्रीकल्चर अफसर, पुलिस कप्तान और डिस्ट्रिक्ट जज गुजरते हैं। साहब लोगों के बंगलों तक यही सड़क जाती है। स्टेशन क्लब या अफसर क्लब इसी पर स्थित हैं। डाकबंगले जाने का यही रास्ता है। ए.डी.एम. (जे) भी इसी सड़क पर रहते हैं। क्या इन भारी -भारी नामों से आपको उत्साह मिलेगा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा, तो आप यह कह रहे हैं कि ये साहब लोग तो कार में चलते हैं, इनके लिए क्या पार्लियामेंट रोड और क्या "भैंसलोट रोड"? खैर, आप आगे बढ़िये तो पता चलेगा कि यहाँ कार भी बेकार है। फिर, कारवाले ही क्यों? हजारों छात्रों का नित्य आवागमन, सुदूर देहात से खिंचकर आते अगणित लोगों का पद-स्पर्श। साइकिल, रिक्शा, बैलगाड़ी और ताँगा, ये एन.सी.सी. के कैडेट जा रहे हैं, ये एन.सी.सी. के अफसर जा रहे हैं, ये डिग्रीकालेज के प्रिंसिपल साहब जा रहे हैं, ये गोराबाजार के चेयरमैन साहब जा रहे हैं और ये मैच के खिलाड़ी जा रहे हैं, ये प्रोफेसर जा रहे हैं, सारी चहल-पहल है परन्तु पग-पग पर गढ़ों का पैबन्द लगाये यह बेआबरू सड़क हाय-हाय करती है। हर जानेवाला या तो संकटमोचन का पाठ कर रहा होता है या भुनभुना रहा होता है अथवा जली-कटी बकबक कर रहा होता है। अगणित आशीर्वाद सरकार को, बेहद संवेदना सड़क की दशा पर।

बेचारी सड़क! कभी अंग्रेजों के दमकते वैभव के बीच रजत-लेखा बनी रही। कभी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे महामानवों के चरणस्पर्श से यह उपकृत हुई। आज "करके मीड़े कुसुम लौं" होकर उसी गत वैभव और गलित यौवन पर आठ-आठ आँसू बहा रही है। आँसू पोंछने वाला कोई नहीं। सम्पूर्ण पावस इसकी अमावसी आँखें भरी रहती हैं। शीत में यह सिहकती रहती है। गर्मी आते ही धूल-बवण्डर के बीच हाय-हाय कर तड़प उठती है।

इसने एक इतिहास बनाया, इसने एक इतिहास देखा और आज यह स्वयं इतिहास बनी हुई है, विचित्र भूगोल बनी हुई है। संसार के भूगोल में एक सजीव आश्चर्य। बीच सड़क पर असंख्य डबरे। अधिक अन्न पैदा करने की योजना के अन्तर्गत सरकार सड़क को "धनखरि"तो नहीं बनाना चाहती है? पता लगाना चाहिये। जगह-जगह "लेंव" लगाकर छोड़ दिया गया है। जीप और ट्रक आदि के पहियों के निशान "हराइयों" की तरह दिखाई पड़ते हैं। यह साक्षात् जैसे कुशासन का खेत है और स्वराज्य के "जोड़ी-बैल" की जुताई है। जनमार्ग पर कीचड़, पाँक, सड़े गढ़े जैसे भ्रष्टाचार की लीपापोती। क्षत-विक्षत राह! वह राह जिस पर पैदल चलने वाला भी सुरक्षित नहीं। सवारियों पर भी आफत। तनिक भी राह इधर-उधर हुई तो रिक्शा करवट बदलने लगा और भले आदमी बीच सड़क शीर्षासन करने लगे।

यात्री जैसे-जैसे खीझता है इस मौसमी सड़क की मौज बढ़ती जाती है। सावन-भादों जमकर दधि-कादों का त्योहार रहा। साइकिल-मोटर के पहियों के स्पष्ट निशान जैसे चौका पूरा गया है। मस्ती-पानी और रंगबाजी के लिए कीचड़ का कोश रिक्त होने वाला नहीं। बगल से चलने वाला शरीफ पैदल यात्री यदि चूक गया और कोई कार सामने से निकल गयी तो फिर सड़क का उल्लास ही मानो उछलकर, छप-छपाकर यात्री को माटी के पावसी रंग में सराबोर कर देता है। चलने वाला घूर-घूर कर चलता है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

सजग होकर गहरी सावधानी के साथ चलता है।

यह वह सड़क नहीं कि आँख मूँदकर कोई सरपट चले। सड़क पर बुद्धि-परीक्षा के, पौरुष-परीक्षा के और साधारण समझ की जाँच के जगह-जगह प्राकृतिक अखाड़े बने हैं। नजर चुकी नहीं कि साइकिल घुटने भर कीचड़ में गयी, जूता पंक-जल में गोते मारकर पवित्र हो गया और एक वैतरणी तर कर भी निस्तार कहाँ? चौराहे से चले तो छराहे तक रुद्राष्टक का पाठ करते चलिए। यदि रिक्शे पर हैं तो राम-नाम जपते रहें। सड़क सीधी है पर गाड़ी को सर्पाकार चलना पड़ता है।

पग-पग पर मोड़, झटके पर झटका, ऊपर-नीचे, ठक-ठक,ठँय-ठँय, दायें-बायें, अजीब नक्शेबाजी। यह यात्रा क्या होगी देश की राजनीति का साक्षात् दर्शन हो जायेगा। सूरदास को शायद ऐसे ही किसी मार्ग से पाला पड़ गया था और चिचियाना पड़ा- "काहे को रोकत मारग सूधो?"इसके आगे शायद वे यह लिखते-लिखते रुक गये-

ऊबड़-खाबड़, कीचड़-कादो, गड़हा-गुड़ही रूधो
लायो कत विकास जन-मग में यह उपकारी ऊधो?

सचमुच यहाँ विकासयोजनाओं का काव्यात्मक प्रतीक उभर उठा है। अब मेढकों, मच्छरों को बरसात बिताने के लिए जनमार्ग में जगह मिल गयी है। अब लोगों को कम्पोस्ट के गढ़े नहीं खोदने हैं। संयोगवश इस "भैंसलोट रोड" पर ग्रामसेवकों और ग्रामसेविकाओं का प्रशिक्षणकेन्द्र है। सवारियाँ और यात्री तो अगल-बगल से, आड़ी तिरछी-गोल मार्गरेखाओं से बच-बचकर निकल ही जाते हैं। सो, बीच की लघु-लघु, जलपूर्ण पोखरियों में बेड़ वगैरह लगाने का प्रयोग करना चाहिये। संभव है, सड़क के बीच पौधा उगाने की पद्धति से कोई उपयोगी निष्कर्ष निकल जाय। जनमार्ग के कीचड़ में बड़ी ताकत होती है। जब पानी बरसता है तो सड़क के बीच में नाले-नालियों की कतारें उभर पड़ती हैं और "महावृष्टि चलि फूटि कियारी" की याद आने लगती है।

तुलसीदास ने बहुत सोच-समझकर यह लिखा था, क्योंकि इसी के बाद स्वतंत्र होकर नारियों के बिगड़ जाने की चार्चा है। सो, यहाँ तक तथ्य एकदम प्रत्यक्ष है। यह सड़क स्वतंत्रता के बाद ऐसी बिगड़ी कि कहीं-कहीं तो भ्रम होने लगता है कि कहीं सड़क है या नहीं? इसके सजीव व्यक्तित्व पर देश की राजनीति का प्रभाव दिखायी पड़ता है। सड़क के बीच गढ़े जैसे जनहित के कार्यों में स्थिर स्वार्थियों के कलंक कारनामे, काली कमाई, पार्टीबन्दी, भाई-भतीजावाद, लालफीताशाही, नौकरशाही और खुली लूट। कहाँ रह गया विश्वास कि आँख मूँदकर चलते चलें? न इस सरकार का और न इस सड़क का।

सारे भारत की सड़कों पर यदि इसी प्रकार मृत्यु-कुण्डों की सहज उत्पत्ति का विकास हो जाय तो आबादी घटाने की समस्या हल हो जाय। शहर और गाँव में अन्तर न रह जाय। भावनात्मक एकता का मार्ग प्रशस्त हो। जनता के भीतर दृढ़ता आवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कठिनाइयों को बरदाश्त करने की आदत बढ़े। इस प्रकार सड़कों की बरबादी कर देने से एक और लाभ होगा। देश के ऊपर खतरा है। सो, शत्रु भी यह सुनेंगे कि वहाँ आने-जाने का मार्ग निरापद नहीं तो उनको रुककर सोचना पड़ेगा। इसीलिए देश को बीहड़ बना देना है। राह-घाट में जानलेवा दलदल बना देने हैं। मुसीबतों में ही आदमी की परीक्षा होती है।

बेशक इस सड़क पर हर आने-जाने वाला यात्री एक परीक्षा से गुजरता है। विशेषकर साइकिल -सवारों को काफी बुद्धि-व्यायाम करना पड़ता है। तमाम सड़क में गढ़े बने हैं, गढ़ों में पानी भरा है और उसके इधर-उधर मार्ग है। फिर गढ़े किसी क्रम से नहीं हैं। कहीं-कहीं पर कई एक ही जगह सटे हैं। आने-जाने वाला कतरा-कतराकर, बच-बचकर और सामने से आने वाले का ख्याल करता हुआ निकलता है। खुली सड़क पर बरसात में बने ये चक्रव्यूह बड़े-बड़े महारथियों के दाँत क्यों न खट्टे कर दें? और समय के फेर से यहीं पर गर्मियों में जब मोटी तह वाली, फलकती हुई धूल के उड़ंछू गड्ढे बन जाते हैं, तब मुक्त हस्त से आने-जाने वालों पर धूल झोंकती यह सड़क कुछ और ही रंगों की हो जाती है। यह ठीक वही रंग है जो लावारिस जनता का रंग है।

सचमुच, यह सड़क लावारिस ही है क्या? ठीक-ठीक पता नहीं चलता है कि यह चौराहे से छराहे तक इस चाय की दुकान तक सड़क किसकी है? यह जिला परिषद् की है या पी.डब्लू.डी. की है? पी.डब्लू.डी. का कथन है कि यह सड़क हमारी किसी सड़क से नहीं मिली है, हम इसके मालिक नहीं हैं। इसी प्रकार का कुछ उत्तर, कुछ घुमा-फिराकर जिलापरिषद् का है। उसका कथन है कि एक मील सड़क को पीच करने में लाखों रुपये लग जाते हैं। सो, मेरी सामर्थ्य कहाँ कि इसकी ओर ध्यान दें? वही लावारिस वाली बात आ गयी।

सच्चाई तो यह है कि यहाँ शायद एक राष्ट्रीय प्रतिशोध का उच्चस्तरीय षड्यन्त्र चल रहा है। यह स्थान है अंग्रेजों का। वह कस्बा जिसके एक छोर से दूसरे छोर तक यह सड़क जाती है गोराबाजार कहलाता है। गोरा का अर्थ है अंग्रेज। अंग्रेज भारत के शत्रु रहे। अतः स्वराज के बाद उनके स्थान पर, उनके नाम पर बसे कस्बे की मुख्य सड़क को एकदम लावारिस छोड़ दिया गया, भले ही अंग्रेजी और अंग्रेजियत से देश अंग्रेजों के जमाने से भी आज ज्यादा चिपक गया है। क्या हुआ जो वह आवागमन का एक प्रमुख मार्ग है? क्या हुआ जो महत्त्वपूर्ण, ऐतिहासिक और सार्वजनिक स्थानों को जाने वाला एकमात्र मार्ग है? उसे पूर्ण उपेक्षित छोड़कर पुनीत कार्य किया जायेगा, क्योंकि उस सड़क में गोरापन है। वह गोराबाजार की सड़क है। फिर यह भी तो है कि यह सड़क डिग्रीकालेज को जाती है।

शिक्षा संस्थओं की ओर जाने वाले मार्गों की बीहड़ता ही प्रशंसनीय है। इससे छात्रों के सामने बराबर कठिनाई रहेगी। कठिनाई में विद्याभ्यास खूब होता है। दूसरी बात है कि सरकार अभी लोहे की फैक्टरियों को गढ़ने में व्यस्त है, उसे आदमी बनाने वाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

संस्थाओं की सुध नहीं है। उसे छेड़ा न जाय। तीसरी बात यह है कि यदि शिक्षा-संस्थाओं का मार्ग प्रशस्त हो जाय तो खतरा है। इन्हीं सब कारणों से इस सड़क की यह दुर्गति है।

एक दिन लोगों ने देखा कि चौराहे के पास कुछ कंकड़ पड़ रहा है और सड़क की कुटाई -सफाई हो रही है। महीनों पहले की बात है। लगा कि अब इसके भाग्य का फाटक चरमरा रहा है।

कुछ भैंसलोट पाट दिये गये अर्थात् कुछ कंकड़ पत्थर के पैबन्द लगा दिये गये। इस प्रकार चौराहे के पास सैकड़ों इंच सड़क की मरम्मत हो गयी। फिर यह दल अन्तर्धान हो गया और फिर पता नहीं चला। वहाँ के दृश्य को देखकर भगवान् और भाग्य की याद आती है। ठीक चौराहे के बीच बगल में एक मशहूर भैंसलोट सही - सलामत रह गया। मानो चौराहे के मध्य पंकमय पार्क छोड़कर वैज्ञानिक युग में , आदर्श के बुलन्द नारों के युग में, पंकिलता का स्मारक बना दिया गया। पानी जमा है। वह सड़कर बदरंग हो जाता है। देखने वालों को देखने की आदत पड़ गयी है। देखने वालों में इन्सान ही नहीं शंकर भगवान् भी हैं। ठीक इस "मानसरोवर" के बायें उनका मंदिर है। वहीं पर उनका एक झण्डा गड़ा है। नहीं, नहीं, ये झण्डा नहीं, एक सरकारी बोर्ड है। ऊपर अंग्रेजी, नीचे हिन्दी में लिखा है- "निरीक्षणगृह" और एक बाण का संकेत ठीक भैंसलोट रोड की ओर बना है। जो व्यक्ति यह बाण का निशान नहीं बूझता है, उसके लिए यही "निरीक्षणगृह" है। यह टूटा-फूटा शंकरालय, यह चतुष्पथस्थित भैंस-लोट और "निरीक्षणगृह" अर्थात् डाकबंगले की ओर खुलता मनहूँस सड़काभास।

बात अच्छे वक्त पर याद आयी। दूर देश के निवासी एक दूर के सज्जन गाजीपुर में आये। अकेले घूमने निकले। उनसे गोराबाजार की ओर की दर्शनीय जगहों की चर्चा की गयी थी। पीरनगर के डाकखाने के आगे प्रसिद्ध चौराहै पर पहुँचे। एक कप चाय पीकर आगे बढ़े। खूब पानी बरसा था। बात यह हुई कि इस चौराहे के बीच "निरीक्षणगृह" के बोर्ड के सामने जो गढ़ा है उसमें गाड़ी की पहिया पड़ गयी ओर झटके से जो निकली तो पानी-मिट्टी का एक जबरदस्त छपका ऊपर पड़ गया। उससे "गृह" शब्द छिप गया। उस सज्जन ने देखा कि लिखा है "निरीक्षण" और आगे की ओर संकेत है। बस उन्होंने वहाँ से निरीक्षण करना शुरू किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि चौराहे से चलकर छराहे तक नहीं पहुँचे कि हिम्मत छूट गयी और लौट आये। अपने देश जाकर गाजीपुर जिलापरिषद् के अध्यक्ष के नाम उन्होंने एक चिट्ठी लिखी और लिखा कि देख ली मैंने आपके गाजीपुर की दर्शनीय वस्तु। असंख्य सड़ते से फोड़ों वाली सड़क जिसके दोनों ओर ठूँठ जैसे नीम के पेड़ों की कतारें।

बहुत दिनों तक वह चिट्ठी जिलापरिषद् में रही। पता नहीं, अब है या नहीं।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लार्ड कार्नवालिस का स्मारक

सन् १९३९ में मिडिल स्कूल की परीक्षा देने मैं गाजीपुर आया था। उसी समय लार्ड कार्नवालिस के स्मारक को देखने का मौका मिला।उसकी भव्यता, विशालता, रमणीयता और गुरुता की जो छाप मस्तिष्क पर बनी, वह कुछ इस प्रकार की रही कि गाजीपुर में भी एक ताजमहल है।

युगों बाद सन् ६५ में इस स्थान पर पुनः आया। देखा स्मारक वैसे ही खड़ा है। उसकी भव्यता में रत्ती भर भी फरक नहीं आया है। हाँ, उस समय का वह बहुत कुछ यहाँ अब नहीं है, जिसका समग्र प्रभाव मन में एक मधुर महान् चित्र लेकर बैठा था। कुछ वीरान और उदास सा लगता है। लेकिन ठहरिये। मैं स्पष्ट देख रहा हूँ कि इस विशाल मैदान में गाजीपुर का 'ताज' ही नहीं खड़ा है, बल्कि इस 'काशी' का एक हिन्दू विश्वविद्यालय भी सिर उठा रहा है।

काल का गहरा थप्पड़ यहाँ लगा है। इस चोट में वह चर्च उड़ गया। ठीक स्मारक के पीछे उत्तर ओर जहाँ वह चर्च था, अति विशाल चर्च, गगनचुम्बी मीनारों वाला, जिसके वजनी घंटे की गम्भीर टन-टन आवाज कई कोस तक सुनाई पड़ती थी, अत्यन्त स्वच्छ सुरुचिपूर्ण दिव्य वह भगवान् का पूजागृह आज नहीं है। वहाँ नये स्टाइल का बना विशाल डाक्टर सैयद महमूद छात्रावास है, महाविद्यालय, गाजीपुर का छात्रावास।

इस छात्रावास के गृहपति प्रोफेसर रामनयन सिंह प्रशस्त प्रवेशद्वार पर खड़े हैं।

आप कुछ सोच रहे हैं? मैंने पूछा।

सोच रहा हूँ, उन्होंने उत्तर दिया कि पहले ठीक यहीं उस अंग्रेजों के चर्च का भी गेट था जिसकी एक ईंट का भी आज पता नहीं। इस गेट से जो सड़क स्मारक तक जा रही है यह भी उसी की है। इस गेट से प्रवेश करने वाले तब के पुजारियों-पादरियों और आज के छात्रों के मनोभावों में और परिवेश में कितना अन्तर है?

आप मनोविज्ञान के पण्डित हैं। स्थान -मनोविज्ञान पर एक लेख लिख दीजिये। मैंने कहा। तभी आ गया बृजमोहन, सत्तर वर्ष पुराना चपरासी जिसके पुरखे भी चर्च और स्मारक के चपरासी रहे, जिसने स्वयं भी लम्बे अरसे तक साहबों को सलामी बजायी थी।

हैरी साहब, पामर साहब, लप्टीयर साहब, हेनू साहब, अटून साहब; हिल साहब, टटरी साहब, गिल साहब....., बृजमोहन अपने शब्दों में कहता गया, एक से एक साहबों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को हमने देखा, एकदम दगदग गोर, बनारस से बड़े पादरी पूजा कराने के लिए आते थे। १५ मिनट पहले घंटा घनघना उठता था।

वह फिर कहता है, साहब लोग गोल्फ का खेल खेलते थे। सैयद बाबा के तीरे-तीरे बरम बाबा होते हुए आइना कोठी और फिर इधर से कालेज के भट्ठे तक कुल १८ गोल बनाना होता था। भट्ठे के पास वाली गड़ही में गेंद गिर जाता था तो मेरे लिये मेम साहब का हुक्म होता कि 'ओ पिल्ले' गेंद निकालो तो दो आने पैसे मिलेंगे। इसी गोल सड़क पर रेस होता था। जी हाँ, मेम साहब भी रेस में शामिल होती थीं। रौब के साथ पड़पड़-पड़पड़ घोड़े दौड़ते।

वह कहता जाता है, मैनपुर वाली सड़क पर नयी बस्ती के पास सेमेटरी है। वहाँ हर कब्र पर साहबों का नाम लिखा है। वह इधर हाथीखाना है। वह उधर आइना कोठी है। उसमें तमाम सीसा जड़ा है। लाट-गवर्नर लोग आकर उसी में रहते थे। वह इधर फाक साहब का बंगला है। वह उधर फाक्सगंज है। बाहर से बंगला खँड़हर तो हो गया मगर उसका रोब अब भी प्रकट होता है। सामने पत्थरघाट है। तब रेल-मोटर नहीं था। पानी का जहाज आकर यहीं लगता था। लाट साहब का स्मारक बनाने के लिए पत्थर लाद-लाद कर यहीं गिरा। इसीलिए पत्थरघाट नाम पड़ गया। अब भी यहाँ पत्थर के टुकड़े बिखरे हैं... असली गाजीपुर उधर नहीं, इधर ही था और तब के रौनक और रोब-दाब का बयान नहीं हो सकता। अब तो सब बीत गया और उजड़ गया। परन्तु यह जमीन बहुत खुश-नसीब है। फिर इसकी तकदीर का सितारा चमका है।

मैं मन ही मन बृजमोहन अर्थात् डिग्रीकालेज के उस बूढ़े चपरासी की बात दुहरा रहा हूँ। असली गाजीपुर इधर ही था और फिर सोचता हूँ कि भविष्य में भी इधर ही रहेगा। पीर बाबा, ब्रह्म बाबा, विशाल स्मारक, विशाल मैदान ,गंगातट, संस्कृतियों का संगम जहाँ शहर और गाँव एकाकार हो जाते हैं, विशाल छात्रावास, कम्पनीबाग जो बुटानिकल गार्डन होने जा रहा है, टेढ़वा का गड़हा जो सन्तरणसरोवर होने जा रहा है, कालेज, अध्यापकों के क्वार्टर, सड़क, चौराहा, दूकानें, चहल-पहल, नयी सज्जा, नयी कृषि, नयी हरियाली, नये फूल, खिंचता-सा आता विशाल जनसमुदाय, सौन्दर्यप्रेमी, भ्रमण-प्रेमी और शिक्षाप्रेमी जमीन पुकार रही है, यह पुराना इतिहास देखो, यह नया भारत देखो, ये नये भारत के नये-नये फूल देखो, इनकी चहक देखो, इनका महत्त्व देखो और एक विराट् कल्पना पूरे जनपद के सुनहरे भविष्य का जहाँ निर्माण हो रहा है, पूरे जनपद के मस्तिष्क की जहाँ साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक ढलान हो रही है, यह नया तीर्थ, नया महाविद्यालय व मंदिर और नया आकर्षण और प्रहरी या साक्षी रूप यह दृढ़ स्मारक आसमान में सिर उठाये खड़ा है। यह यहाँ की भूमि के भविष्य का सुनहरा सन्देश लेकर एक सौ उनसठ वर्ष पूर्व खड़ा हो गया और हम आज अपना नया उद्देश्य लेकर यहाँ पहुँचे हैं। यह स्मारक तब हँसता था और आज फूला नहीं समाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर से नहीं आइये, निकट से इसे देखिये, जितना ही पास आयेंगे इसकी भव्यता खुलती जायेगी। वह भव्यता जो मन को बदल देती है और ऊँचा उठा देती है। वह भव्यता जो इस कथन पर गुणे का निशान लगा देती है कि गाजीपुर एक उदास शहर है और यहाँ दर्शनीय कुछ भी नहीं। लाहौरी ईंट, ताड़-खजूर और मकबरों वाले इस पुराने शहर का यह वैभव है। यह लार्ड कार्नवालिस की कब्र नहीं है, यह इंग्लैण्ड के एक महान् व्यक्ति, भारत के गवर्नर जनरल और कमाण्डर-इन-चीफ का स्मारक है।

सात-आठ वर्ष के अनवरत श्रम से इसे भारतीय और ब्रिटिश कलाकारों ने रूपायित किया है। यह एक श्रेष्ठ कलाकृति है। यह यूरोप और भारत का -पश्चिम और पूरब का -समन्वय है। यह उस महान् व्यक्ति का स्मारक है, जिसके महान् उपकार से अब भी ग्रामीण भारत लाभान्वित है। गाँव -गाँव घूमकर भूमि परख कर, बहुत पक्का इस्तमरारी बन्दोबस्त करने वाला, पहली बार किसानों को भूमि का स्वामित्व प्रदान करने वाला, यदि परायेपन की भूमि से ऊपर उठकर देखें, अनुभव करें तो एक महान् आत्मा का जीवन्त स्पर्श पाकर क्या हम यहाँ पुलकित नहीं हो जाते हैं?

डेढ़-दो बीघे भूमि में बना यह गोल स्मारक हमें दृढ़ता का सन्देश देता है। इसके हलके गुलाबी रंग के पत्थर को देखिये, कहीं दाग नहीं है। लौहफलक के विशाल घेरे को देखिये, कहीं मोर्चे का नाम-निशान नहीं। इस सैकड़ों फूट ऊँची कला की उत्कृष्ट उपलब्धियों को देखकर मन भी कितना ऊँचा हो जाता है? जमीन से सोलह सीढ़ियों को पार कर इसकी प्रशस्त ऊँचाई पर पहुँचिये।

ध्यान दीजिये, चार तरह के पत्थर हैं। खम्भों में प्रयोग किये गये पत्थर पर नीले-नीले छींटे हैं। भीतर की गोल दीवार एकदम साफ है, फर्श का संगमरमर शुक्ल-कृष्ण वर्ण की नैसर्गिक आँखमिचौनी का सहज शिल्प प्रस्तुत करता है और मध्य स्तम्भ का दुग्ध-धवल पत्थर अद्भुत चिकना है। सामने लार्ड कार्नवालिस का चित्र, जिसके अगल-बगल हिन्दू और मुसलमान शोकमग्न खड़े हैं, बीच में कमल का फूल, बायें पार्श्व में पत्रमाला का सूक्ष्म कलात्मक बन्धन, पीछे की ओर दो सिपाही बन्दूक नीचे किये मुरझाये खड़े हैं, फूल-पत्तियों की सजावट और ब्रिटिश सरकार का राजकीय चिह्न, दाहिनी ओर पत्रबन्ध की एक माला खूब उभरी हुई , आकर्षक शिल्प -चमत्कार से युक्त। सामने अंग्रेजी में और पीछे उर्दू में लार्ड कार्नवालिस के आने और दिवंगत होने आदि की सूचना तथा परिचय, बारह-बारह विशाल खंभे, पाँच गज मोटे, लगभग ४० फूट ऊँचे मगर सिर्फ पाँच प्रस्तरखण्ड वाले। वह विशाल जुड़ाई, वह भव्य बंधान!

......मगर यह सब कुछ ही कुल स्मारक नहीं है। वह बहुत कुछ ऐसा है, जो भाषा की सीमा के बाहर है। उसका अनुभव होता है, मगर कहा नहीं जा सकता। खैर, अभी साथ आइये।

यह चाँदनी रात, स्मारक, सड़क, विशाल मैदान और डिग्रीकालेज, सब मिलाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा लग रहा है। खूब शान्ति है और विशालता का एकान्त है। यहाँ सरों और अशोक के वृक्ष हैं। पुरवा हवा में दोनों संदेश दे रहे हैं। एक ईसामसीह की भाषा में बोलता है और दूसरा गौतम बुद्ध की भाषा में। प्रोफेसर रामनंयन सिंह कहते हैं कि ये सरों शोक-प्रदर्शन के वृक्ष हैं और मुझे ले जाकर एक पेड़ के पास खड़ा कर देते हैं। वहाँ सरसर - सरसर का मंद संगीत है। नदी की मधुर धारा की तरह, सावन की वर्षा की तरह, प्रेमियों की साँय-फुस वाली मधुर वार्ता की तरह, चाँदनी के हास की तरह, निर्झर के विलास की तरह, एकान्त की भाषा की तरह। फिलहाल मुझे इसमें शोक की कोई ध्वनि अनुभूत नहीं हो रही है। यह इंगलैंड का वृक्ष वहाँ चाहे जो संदेश देता हो, यहाँ भारत में बदली हुई स्थिति में तो यह उल्लास का, विकास का और प्रगति का दम भरता प्रतीत हो रहा है।

अन्त में एक विशेष बात।

ऊपर लार्ड कार्नवालिस के स्मारक का जो सौन्दर्यवादी रिपोर्ताज है तथा उससे भावात्मक रूप में जुड़ने का जो प्रयास हुआ है वह एक पक्ष है। इस पक्ष का एक महत्त्वपूर्ण प्रतिपक्ष भी है। उस पर ध्यान जाते ही इसका सारा अर्थ ही उलट जाता है।

गाजीपुर के एक कवि ने इस शहर पर एक बहुत विरोधाभासी कविता लिखी है। पूरी कविता शहर के उटपटाँग, अविकसित, पिछड़े और उजाड़पन पर व्यंग्य है। चोट इस मर्मस्थल पर है कि यहाँ कुछ भी नहीं है जिसे स्मरण कर गर्व किया जा सके। जो है भी वह सब अतीत का है। वर्तमान इसका प्रत्येक प्रकार के अभावों की दुखद गाथा है। आगे चलकर उपसंहार के रूप में दो पंक्तियाँ इस प्रकार आयी हैं:-

"इहे जान मन सब्बुर बा,
लाट साहब के कब्बुर बा।"

(पिछड़े जनपद के अभागे लोगों को बस इतने मात्र से सब्र कर लेना पड़ता है कि चलो यहाँ कुछ नहीं तो क्या? लाट साहब की एक कब्र तो है।)

लाट साहब की कब्र!

शोषक, उत्पीड़क और भारतीय इतिहास में लज्जास्पद पराधीनता के कलंक को थोपने वाले अंग्रेजी राज के प्रतिनिधि की कब्र!

यह स्मारक जनपद का गौरव है या इसका एक कलंक है? यह वास्तव में इसकी छाती पर खड़ी गुलामी के दिनों को स्मरण कराती एक भव्य प्रेतछाया है। इस यथार्थ को स्वीकार करते हुए स्मारक का मूल्यांकन होना चाहिए और प्रतिपक्ष की दूसरी ओर जो पक्ष है उसकी पुरातात्त्विक तथा दर्शनीय महत्ता को रक्षणीय मानना चाहिए।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वकवि का अवसादपुर बनाम गाजीपुर

आइये, मैं आपको एक शताब्दी पूर्व की एक इतिहास-भूमि का दर्शन कराना चाहता हूँ। तब काशी और कलकत्ते के बीच गंगा-मार्ग से यात्रियों और व्यापारियों की बड़ी-बड़ी नौकाएँ और स्टीमर चला करते थे। इस यात्रा में गाजीपुर एक महत्त्वपूर्ण स्थान था।

एक अजीब सी उलझन की विषम स्थिति में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के श्रेष्ठ उपन्यास 'नौका डूबी' का नायक रमेश अपनी कथित पत्नी कमला के साथ कलकत्ते से पश्चिम की ओर भागता है। वह ग्वालन्द स्टेशन से स्टीमर द्वारा अनिर्दिष्ट स्थान की ओर प्रस्थान करता है। काशी के अतिरिक्त चार ही स्थान उसके सामने विकल्प रूप में हैं- पटना, मुंगेर, दानापुर और गाजीपुर।

रमेश कमला को समझाता है कि ये प्राचीन स्थान हैं। ये 'ऐतिहासिक स्थान' हैं। ये 'स्वास्थ्यवर्धक स्थान' हैं। यहाँ 'क़िले' हैं, 'महल' हैं और तीर्थ हैं।

अर्थात् तब महल-किले वाला यह प्राचीन ऐतिहासिक, स्वास्थ्यवर्धक तीर्थस्थल गाजीपुर अपने में इतना आकर्षण रखता था कि बंगाल से चले अनमने यात्री का मन यहीं रमता है। रमेश गाजीपुर में आकर रुका।

मैं कहने जा रहा हूँ कि 'नौका डूबी' का नायक ही नहीं, स्वयं उसके रचयिता कवीन्द्र रवीन्द्र कुछ इसी प्रकार यहाँ आये।

शरद् काल के मेघखण्ड की भाँति पाल उड़ाती,भागीरथी के निर्मल जलमार्ग को कलगान से विभूषित करती आती विशाल नौकाओं के बीच एक दिन कल्पनाकुंज की इन्द्रधनुषी तितली जैसी आकृति वाली, एक लघु परन्तु दिव्य नौका पर से उतर कर रेशमी वस्त्रों में लिपटी एक लम्बी देवोपम काया, प्रलम्ब भुजाएँ, बड़ी-बड़ी सतेज आँखें और ऋषितुल्य दर्शन, कमल-कोमल कविगुरु के दो चरण गाजीपुर की धरती पर पड़े।

तब यहाँ के इतिहास में दो महत्त्वपूर्ण बातें हुईं। एक तो यही कि 'जोड़ा साँकों भवन' का यह राजकुमार और भावी विश्व को अपने प्रेमसंगीत की अलौकिक माधुरी से विभूषित करने वाला कविगुरु आया और दूसरे यह कि इस जिले में रेल आयी। एक शाश्वत विश्वसंस्कृति और अन्तरवैभव का प्रतीक बनकर आया और दूसरी नयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैज्ञानिक सभ्यता और बाह्य वैभव की दूतिका बनकर आयी। मानो अपने आगमन से कवि यथार्थ रूप में ही घोषित करता है:-

'हेथाहते जाओ पुरातन
हेथाय नूतन खेला आरम्भ हयेछ।
आबार बाजिछे बांशि, आबार उठिछे हासि
बसन्तेर बातास वयेछे।'
(कड़ि व कोमल में 'पुरातन')

(हे पुरातन, यहाँ से प्रस्थान करो। यहाँ नूतन का खेल आरम्भ हो गया। अब वंशी बज रही है। हास्यतरंगें उठ रही हैं। वसन्ती बयार चल रही है।)

एक दिन श्री उमेशचन्द्र मिश्र लिखित 'विश्वकवि रवींद्रनाथ' नामक पुस्तक उलटते समय पृष्ठ ८९ की निम्न पंक्तियों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया-

"उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक के अन्तिम भाग में कवि कुछ दिन गाजीपुर में रहे। उन दिनों वे एकान्त जीवन के बहुत इच्छुक थे। गाजीपुर अपने गुलाब के बगीचों के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं गुलाबों के बगीचों में बैठकर एकान्त चिन्तन करते हुए कवि ने कई सुन्दर गीतों की रचना की थी। पीछे से इन कविताओं का संग्रह 'मानसी' नाम से प्रकाशित हुआ।"

गाजीपुर नगर के लिये सन् १८८८ के फाल्गुन से लेकर आश्विन तक की कालावधि बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह समय सत्ताइस वर्षीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रवास का था। अपनी किशोरी पत्नी मृणालिनी देवी और पंचवर्षीय कन्या बेला के साथ वे यहाँ गोराबाजार -निवासी अपने नातेदार गगनचन्द्र राय के अतिथि रहे। अपने शील-सौजन्य के लिए विख्यात रायसाहब स्थानीय अफीम फैक्ट्री के उच्चाधिकारी थे। उनके स्नेहिल आतिथ्य, टटकी गृहस्थी के प्रवासी माधुर्य और आवास की गंगातीरी सुषमा ने कवि की सौन्दर्यानुभूति को नये स्तर पर जगा दिया। उनकी लेखनी से तीव्रतम जीवनानुभूतियों का काव्य प्रवाहित होने लगा। इस प्रवास के बीच लिखी २८ कवितायें रवीन्द्रनाथ की प्रसिद्ध कृति'मानसी' में संकलित हैं। इन कविताओं में गाजीपुर की प्रकृति के साथ तत्कालीन सामाजिक जीवन का मौसम बोलता है। इस प्रकार शाश्वत विश्वसंस्कृति और वैज्ञानिक सभ्यता के अन्तरंग-बहिरंग वैभव को अपने विराट् रचनात्मक अवदान से उद्घाटित करने वाले महान् मनीषी कविगुरु के प्रवास का कालातीत सान्निध्य गाजीपुर नगर को प्राप्त हुआ।

निस्सन्देह वह गाजीपुर गुलाब का नगर था और आज का गाजीपुर ताड़, खजूर, टूटे मकबरों, लाखौरी ईंटों और खण्डहरों का शहर है। काशी की तरह वह गाजीपुर घाटों का रम्य नगर था और आज तो उन घाटों का बस नाम ही रह गया चीतनाथ घाट, स्टीमर घाट, कलक्टर घाट, ददरी घाट, आम घाट, पोस्ता घाट, कोयला घाट और ताड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घाट आदि।

हिन्दी के रवीन्द्र महाप्राण कवि निराला ने एक पुस्तक लिखी 'रवीन्द्र कविता कानन' और पृष्ठ-२० में एक सूचना दी–

"१८८७ में रवीन्द्रनाथ गाजीपुर गये। कल्पना की मृदुल गोद का सुकुमार युवक कवि हरे-भरे दृश्यों में घिरा हुआ, अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए दत्तचित्त हो रहा है। 'मानसी' के अधिकांश गीत यहीं लिखे गये थे। मानसी रवीन्द्रनाथ की कविता की नन्दन-भूमि है।"

गुलाबों के शहर, पावन प्राकृतिक दृश्य और कविप्राणों में भाव-सुरभि को भरने वाले गाजीपुर की हवा में काव्य -कुहुक का अत्यन्त सूक्ष्म संक्रामक संवेदनशील तत्त्व है।

"हम विषपायी जनम जनम के" के प्रकाशन के बाद हमने जाना है कि हिन्दी के सिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने उक्त काव्यग्रन्थ के अनेक महत्त्वपूर्ण गीतों की रचना गाजीपुर जेल में पड़े-पड़े की। "कविता की नन्दनभूमि" की स्निग्ध शीतल लहरियों को भला जेल की दीवारें रोक सकती हैं। 'नवीन' के इन गीतों में प्रेम, प्रकृति और स्वदेश-भक्ति के स्वर हैं और ये ही मूल स्वर 'मानसी' के भी हैं।

सत्ताइस वर्ष की उम्र में कवि रवीन्द्रनाथ गाजीपुर में आये और इसके ३ वर्ष बाद सन् १८९० में 'मानसी' का प्रकाशन हुआ।

'मानसी' कवि की उत्कृष्ट कविताओं का संग्रह, जिसमें देहातीत सौन्दर्य -चेतना, तरुण कविहृदय का मौलिक काव्य-वैभव, निर्मल कविमानस की अलौकिक अकूत सम्पत्ति, निगूढ़ एकान्त परिचय, तीव्रतम जीवनानुभूति, कल्पनावैभव का विस्तार जिसमें 'आकुल सागर माझे चले छे आसिया जीवनतरणी' और शब्दचयन में निसर्ग के नूपुर, भाव-भूमि में आलोक की लीलाभूमि का मुग्ध हास, साथ ही देश-जाति, समाज की चिन्ता, विपन्नता-हीनता और मूढ़ता-मलिनता का मार्मिक चिन्तन, गुलाम था न देश तब? 'मानसी' में कवि का राष्ट्रमानस कितना सजग है?

निभृत ए चित्त माझे
निमेषे-निमेषे बाजे
जगेतर तरंग आघात।
ध्वनित हृदये ताई, मुहूर्त विराम नाई
निद्राहीन सारा दिन-रात।
('मानसी' में उपहार)

(इस हृदय के एकान्त कोने में क्षण-क्षण संसार की तरंगों का आघात बज रहा है। वही हृदय में ध्वनित हो रहा है। पल भर के लिए भी उसे विराम नहीं। इसी लिये सारी रात और सारा दिन निद्राहीन अवस्था में ही बीत जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मानसी' में व्यक्त होकर भी गाजीपुर- प्रवासकाल की शेष अनुभूतियाँ संचित रहीं और उनकी अभिव्यक्ति 'मानसी' के प्रकाशन के १६ वर्ष बाद 'नौका डूबी' के प्रकाशन के साथ साहित्यजगत् के सामने आयी। उक्त उपन्यास में आज के 'अभागे' गाजीपुर नगर की एक मूक मर्मस्पर्शी कहानी संकेतित है जहाँ से उपन्यास की घटना एक महत्त्वपूर्ण मोड़ वहाँ लेती है जहाँ उपन्यास के पात्र त्रिलोक चक्रवर्ती चाचा का मकान है। यह मकान गोरों की बस्ती, आज के गोराबाजार के पास है। चक्रवर्ती चाचा गाजीपुरी गुलाब की खेती की चर्चा करते हैं। गंगातट पर ही उनका बंगला है, जहाँ ताड़ के पेड़ से फैनिल ताड़ी निकाली जाती है।

'नौका डूबी' उपन्यास में रवि बाबू जब गाजीपुर में फेनिल ताड़ी उतारने की बात करते हैं तो हमारा ध्यान 'ताड़ीघाट' शब्द पर चला जाता है। (पहले तो मालूम होता था नहीं बनेगा यहाँ 'पुल'। कभी ठीक ही कहा था डॉक्टर राममनोहर लोहिया ने कि जब यहाँ का कोई आदमी मिनिस्टर नहीं है तो जल्दी से पुल बनने का सवाल ही कहाँ ? मगर ताड़ीघाट में हमीदसेतु नामक पुल बन ही गया।)

तो हम चर्चा कर रहे हैं रवि बाबू के उपन्यास 'नौका डूबी' के गाजीपुरनिवासी एक पात्र चक्रवर्ती चाचा के बंगले की और उसके आस-पास की स्थिति की। वहाँ गंगा का पानी हट जाने से ज़मीन निकल आती है। वहाँ खरबूज-तरबूज बोये जाते हैं। दूर-दूर से दृष्टि दौड़ाने से गंगा का दियारा रेगिस्तान-सा नजर आता है। उस पार घाटों पर गाँवों की स्त्रियाँ घूँघट काढ़े पानी भरने आती हैं।

उपन्यास में वर्णित स्थल

किसी स्थान में बीती एक शताब्दी कितना हेर-फेर कर देती है, यह विचार करने पर साफ प्रकट हो जायेगा। परन्तु आइये हम 'नौका डूबी' के किंसी चक्रवर्ती चाचा का बंगला गाजीपुर में खोजें। खोजें कि खोजते-खोजते यहाँ की धूल में 'खेया' के अमर गायक के चरणों का शीतल स्पर्श मिल जाय। खोजें कि यहाँ के आम्रकुंज में 'सोनार तरी' के दिव्य कवीश्वर का स्वर कोकिल की सुमधुर कूक में समाया हुआ मिल जाय। और खोजें कि मधुर-मन्द्र स्वरलहरी की वह गूँज साक्षात् हो उठे-

'आमि ढालिब करुणाधारा,
आमि भाँगिब पाषाणकारा।' (निर्झर स्वप्न भंग)

चक्रवर्ती चाचा के बंगले के पीछे आम का बगीचा है। उससे सटा एक पक्का कुआँ है। सामने नीची दीवार है। कुएँ के पास सब्जी का खेत है। वह सींचा जाता है। खेत में मटर बोयी जाती है।

अब आपने पहचाना कहाँ है यह बंगला? कहाँ है यह पावन स्थल? लेकिन पहचान में बहुत अधिक मेहनत करने की आवश्यकता नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुश्रुतियाँ हमारी सहायता करती हैं। निर्दिष्ट स्थान के निवासी बंगाली परिवारों में से एक परिवार के सदस्य मण्टो बाबू अपने बंगले के पास एक चबूतरा जहाँ पीपल का एक पेड़ है, दिखाते हैं। कहा जाता है कि यह स्थान हमारे कविगुरु को बहुत प्रिय था।

कहते हैं कि गाजीपुर में यहाँ पर कवीन्द्र रवीन्द्र का स्मारक बनाने की एक विस्तृत योजना है जो शनैः शनैः कार्यान्वित होगीं और जो कवि की जगद्व्यापी धवल कीर्ति के रूप में होगी। फिलहाल वहाँ रवीन्द्र और विवेकानन्द का एक स्मारक बना हुआ है। जिसका उद्घाटन २४ फरवरी, १९६७ ई. को शृंगेरी पीठ के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने किया। बाद में श्री राजन शुक्ल तत्कालीन जिलाधिकारी, गाजीपुर ने इसका जीर्णोद्धार और सुन्दरीकरण कराया जिसका भव्य समारोह २३ मार्च १९९९ को सम्पन्न हुआ। यह स्थान स्नातकोत्तर महाविद्यालय से लगभग डेढ़ सौ मीटर पूरब सीधे रास्ते पर है और उक्त पुराने बंगाली परिवार के बंगले के उत्तरी भाग के एक कोने में है। इस बंगले को अब एक प्रोफेसर साहब ने क्रय कर लिया है। उस रास्ते से आते-जाते इस छोटे से स्मारक पर ध्यान जाता है। मन के भीतर बैठा एक आदरास्पद अतीत पनपना उठता है। इसके साथ ही साथ वर्तमान के अवसाद भरे धूमिल वातावरण का प्रभाव हमें जकड़ लेता है। इसलिए इस स्मारक से परे किसी भाव-जगत् की तलाश में मन भकटने लगता है।

इसीलिए मैंने कहा, विश्वकवि का एक और स्मारक गाजीपुर में है जिसके इतिहास में सदियों पूर्व उगा विपन्नता का धूमकेतु अभी अस्त नहीं हुआ। कवीन्द्र रवीन्द्र का यह स्मारक गाजीपुर में वही है जिसने उनकी 'मानसी' को भावभूमि और 'नौका डूबी' को पृष्ठभूमि प्रदान की। क्या पता कवि ने इसी शहर को लक्ष्य कर इस कविता का निर्माण किया हो–

"आमरा कोथाय आछी
कोथाय सुदूरे।
दीपहीन जीर्ण भित्ती
अवसाद पुरे भग्न गृहे, सहस्रेर
भृकुटिर नीचे
कुब्ज पृष्ठे नतशिरे
सहस्रेर पीछे
चलियाछि प्रभुत्वेर तर्जनी संकेते
कटाक्षे काँपिया,
लइयाछि शिरे पेतें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्र शासन शास्त्र,
संकुचित काया।
कांपितेछे रचि निज
कल्पनार छाया
सन्ध्यार आंधारे बनि
निरानन्द घरे।
दीन आत्मा मरितेछे
शत लक्ष डरे।"

(नैवेद्य ५९)

अर्थात् दुनिया से दूर हम उस नगर में हैं जो बहुत विषादपूर्ण है। उसी 'अवसादपुरे' के एक टूटे-फूटे मन्दिर में हम हैं। उसकी दीवारें जीर्ण हो गयी हैं। वहाँ परम अन्धकार है। वहाँ हम हजारों लोगों की बंक भृकुटि के नीचे कुब्जे की तरह, सिर झुकाये, हजारों लोगों के पीछे-पीछे उनके इशारे के बन्दे बने और उनकी शान-शौकत को ढोते हुए चल रहे हैं। हम इस सीमा तक संकुचित हो गये हैं कि अपनी ही कल्पनाओं की छाया देखकर काँप रहे हैं। इस संध्या के अन्धेरे में मानो निरानन्द बैठे हैं। हमारी दीन-हीन आत्माएँ लाखों विपत्तियों की आशंका कर-कर क्षण-क्षण में मर रही हैं।

इस 'अवसादपुर' को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यह इक्कीसवीं शताब्दी का गाजीपुर है जहाँ उन्नीसवीं शताब्दी में विश्वकवि का शुभागमन हुआ था। इस मुहल्ले का नाम 'गोराबाजार' पड़ गया था और अब रवीन्द्रपुरी हो गया है और इसमें रवि बाबू की एक मूर्ति भी लग गयी है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्ध संत पवहारी बाबा, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी निर्वेदानन्द

कुरथा गाँव से प्रज्ञाधाम तक

स्वामी विवेकानन्द कुरथा गाँव (गाजीपुर) में २२ जनवरी सन् १८९० ई. को सिद्ध सन्त पवहारी बाबा का दर्शन करने के लिए उनके आश्रम पर गये थे। तब गाँव का यह आश्रम साक्षात् ज्ञान, भक्ति और योग का आश्रयभूत था। स्वाभाविक है कि बीतते समय के साथ अब उसकी स्मृतियाँ मात्र शेष रह गयी हैं। किन्तु ये स्मृतियाँ सामान्य नहीं हैं। असामान्य के साथ जुड़ने के कारण ये ऊँचे लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हमारा सारस्वत संबल हो जाती हैं। ये हमें बारम्बार खींच कर कुरथा गाँव में ले जाती हैं। गंगा के किनारे स्थित आश्रम पर जाकर व्यक्ति अब भी कहीं खिंच कर शांति का अनुभव करता है। लगता है, वहाँ का रोमांच अभी शेष है। उसकी अज्ञात-अलक्षित चुम्बकीय शक्ति चुक नहीं गयी है। वहाँ के कण-कण में व्याप्त तप-तेज की पवित्र ऊर्जा बहुत आकर्षित करती है। आधुनिक व्यक्ति सवाल कर सकता है कि क्या उपयोगिता है इस आकर्षण की? और तब उस व्यक्ति के सवाल को सुनकर लगता है कि वह लगभग सौ वर्ष बाद स्वामी विवेकानन्द के सवाल को ही दुहरा रहा है। दर्शन होने पर उन्होंने कुछ ऐसा ही सवाल, एकान्त साधना के सार्वजनिक उपयोग का सवाल उठाया था। पवहारी बाबा ने उन्हें इसका उत्तर भी दिया था और सन्तुष्ट कर दिया था। परन्तु आज के बुद्धिवादी आधुनिक आदमी को उस उत्तर से सन्तुष्ट कर देना कठिन है। हाँ, उस व्यक्ति को एक बार कुरथा गाँव में चलने के लिए आमन्त्रित किया जा सकता है। उसे विश्वास दिलाया जा सकता है कि नाना प्रकार के अंतर्विरोधों, तनावों और संत्रासग्रंथियों को यहाँ की सहज रमणीय गंगातटीय आश्रमी एकान्त की अलौकिक शांति में डुबो कर उक्त प्रकार के प्रश्नों से निपटने योग्य मानसिक भूमिका का निर्माण हो सकता है।

बेशक, आश्रम का सहज आकर्षण अप्रतिम है, प्रारम्भ में पवहारी बाबा का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दर्शन न होने पर भी स्वामी विवेकानन्द को इसी आकर्षण के कारण निराशा नहीं हुई। गाजीपुर से उन्होंने श्री प्रमदादास मित्र को जो पत्र लिखा है और जो "विवेकानन्द साहित्य" (ग्रन्थावली) के प्रथम भाग में संकलित है, उससे तत्कालीन आश्रम का प्रामाणिक परिचय मिलता है। तब पूरा आश्रम ऊँची-ऊँची दीवालों से घिरा था। बाहर से देखने में वह साहबों के बंगलों-सा प्रतीत होता था। उसके भीतर रमणीय उद्यान था। ऊपर-ऊपर से ही दो चिमनियाँ दिखायी पड़ती थीं। आश्रम के भीतर प्रवेश कठिन था। पवहारी बाबा भीतर गुफा अथवा तहखाने में रहते थे। वे प्रायः समाधिस्थ रहते थे। अब आश्रम बड़े-बड़े पेड़ों के बीच एक कुटिया जैसा लगता है, वैसी ही कुटिया जैसी भारत के गाँवों में प्रायः मिलती है और यहाँ का बाह्य परिवेश कुछ इस विशिष्ट प्रकार का होता है कि झट देखते ही समझ में आ जाता है, यहाँ भौतिक विश्व से ऊपर उठे लोग रहते हैं।

हाँ, जिन ऊँची दीवारों की चर्चा विवेकानन्द ने की है, उनमें से तीन तरफ की दीवारें अभी ज्यों की त्यों खड़ी हैं। सचमुच ये दीवारें असामान्य रूप से ऊँची हैं। इनके भीतर वह स्थान अभी सुरक्षित है जहाँ बाबा गुफा से निकल कर कभी कुछ लिखते-पढ़ते थे। एक पूरब की दीवार तोड़ कर नवनिर्मित समाधिस्थल बन गया है। समाधिस्थल पर उनकी खड़ाऊँ अभी सुरक्षित है। एक पांडुलिपियों का संग्रहालय भी है। इनमें भागवत और गीता की हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ हैं जो दर्शकों को बेहद आकर्षित करती हैं। इनके भीतर उत्कृष्ट कला-कुशलता देख वास्तव में स्तब्ध रह जाना पड़ता है। तनिक भी मद्धिम नहीं पड़ने वाले विविध चटकीले रंगों के प्रयोग की यह सिद्ध चित्रकला उसी सिद्ध सन्त के हाथों की है, यह जानकर कौतूहल और गहरा जाता है। इतना ही क्यों, पूज्य देवविग्रह, सीता, राम, लक्ष्मण, रंग जी, बाबा जी, कृष्ण, राधिका और बलदाऊ के मुकुट आदि अलंकारों के नमूने भी उनके अपने हाथों द्वारा प्रस्तुत किये गये थे। इस सम्बन्ध में अनेक चकितकारी अनुश्रुतियाँ भी प्रचलित हैं। जो हो, भक्ति और योग के साथ उच्चकोटि की कला, चित्रकला आदि का योग अप्रतिम है। कुरथा कुटी की अवशिष्ट समस्त ऐसी कलात्मक वस्तुओं का पुरातत्त्व -विभाग द्वारा १९७८ में ही रजिस्ट्रेशन हो जाना सुरक्षा की दृष्टि से उत्तम कार्य हुआ। विशेषकर मूर्तियाँ और उनके अलंकरण जो तापस ह. ाों की सृष्टि हैं, परम रक्षणीय हैं। मूर्तिपूजा, शास्त्रोक्त कर्मकाण्ड एक ओर तथा पाँच-पाँच वर्षों की अखण्ड समाधि, नित्य गुफावास और पवहार दूसरी ओर। स्वामी विवेकानन्द को इस पर कितना आश्चर्य हुआ था?

अपने ४ फरवरी वाले पत्र में उन्होंने लिखा, "बड़े भाग्य से बाबा जी का दर्शन हुआ। वास्तव में वे महापुरुष हैं। बड़े आश्चर्य की बात है कि इस नास्तिकता के युग में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्ति एवं योग की अद्‌भुत क्षमता के वे अलौकिक प्रतीक हैं। मैं उनकी शरण गया और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया।" २४ जनवरी सन् १८९० और २ अप्रैल के बीच वाले उनके एक दर्जन पत्र प्रकाशित हैं जो गाजीपुर से पवहारी बाबा के सन्दर्भ में लिखे गये हैं। पाँच वर्षों की अखण्ड समाधि की चर्चा इन पत्रों में भी है। इन पत्रों में प्रकाशित तथ्यों पर अविश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये उस धर्म-जिज्ञासु मनीषी के पत्र हैं जिसके भीतर अन्धश्रद्धा नहीं थी। यहाँ तक कि पत्रों में एकाध स्थान पर उनकी झुँझलाहट इस रूप में अभिव्यक्त हुई है कि यहाँ आश्रम पर अटक कर रुकना ऊँचे उद्देश्यों में बाधक है। किन्तु अटकना तो पड़ा ही, कोई चारा नहीं था। "बाबा जी मधुसिक्त शब्दों की वर्षा करते हैं और जाने से रोकते हैं।" इस प्रकार की लाचारी साधारण नहीं थी। वे एक पत्र में लिखते हैं, "इतनी मीठी वाणी मैंने कहीं नहीं सुनी।" विवेकानन्द के जाने के आठ वर्ष बाद जब योगाग्नि में अपने शरीर को भस्म कर पवहारी जी ब्रह्मलीन हो गये तो अत्यन्त भावविभोर होकर श्रद्धांजलि के रूप में जो एक लंबा निबन्ध स्वामी जी ने लिखा उसमें ऐसा लगता है कि उनकी समस्त प्रकार की रही-सही शंकाएँ निर्मूल हो गयी हैं। उन्होंने उनके असंदिग्ध महापुरुषत्व का चुने हुए मार्मिक शब्दों में स्तवन तथा उनके भौतिक जीवन का आध्यात्मिक विश्लेषण किया है।

सिद्ध सन्तों और योगियों के जीवन-विश्लेषण की जो बात आधुनिक मन में जल्दी नहीं जमती है वह है चमत्कारों की बात। पवहारी बाबा के सम्बन्ध में जो तीन पुस्तकें मिलती हैं, उनमें सबसे कम चमत्कारों का वर्णन स्वामी विवेकानन्द ने किया है। फिर कुछ प्रमुख चमत्कार उनमें भी आ गये हैं। इसके बाद ऋषिकेश के स्वामी निर्वेदानन्द की पुस्तक "पौहारी बाबा ए सेन्ट आफ द नाइन्टिन्थ सिन्चुरी" में भी पर्याप्त चमत्कारों का उल्लेख है। सबसे अधिक अलौकिक चमत्कारों का जिक्र रायबहादुर गगनचन्द्र राय की बंगला पुस्तक "महात्मा पवहारी बाबा" में किया गया है। इस पुस्तक का हिन्दी रूपान्तरण पवहारी बाबा के सिद्ध साहित्यकार वंशज श्री रंगनाथ त्रिपाठी "राकेश" ने किया है। तो, हम उनके उन चमत्कारों को यहाँ छोड़ दें तब भी एक सहज चमत्कारपूर्ण आकर्षण शेष रह जाता है और वह है उनका अवशिष्ट आश्रम। जहाँ गंगा उत्तरवाहिनी होकर बहती हैं ऐसे गाजीपुर शहर से नातिदूर कुरथा गाँव से सटी वह तपःस्थली अपने सम्मोहक प्राकृतिक परिवेश में दर्शकों को विरमा लेती है। बहुत काट-छाँट और सँवार-सुधार के बाद भी अरण्य का अवशिष्ट किसी अलिखित आरण्यक की भाँति कण-कण में मुखर है। पवहारी बाबा के हाथों लगाया मौलसिरी का प्रौढ़ वृक्ष मुख्य चहारदीवारी के भीतर खड़ा है तो उनका समकालीन विराट् अश्वत्थ वृक्ष पूरब ओर तट पर सुरक्षित है। हाँ, "तट" अब नाम मात्र का है, वैसे ही जैसे पक्का घाट, क्योंकि गंगा अब पूरब ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

हट गयी हैं। बहुत मनोरम लगता है पक्के घाट की सीढ़ियों की ऊँचाई पर खड़ा होकर गंगा मैया का दर्शन।

सामने के दियारे का विस्तृत शून्य जिसे पवित्र जल की मोटी लकीरों से गंगा नदी रेखांकित करती है बबूल के पेड़, अरहर, मटर और गेहूँ-चने के खेतों की हरियाली, उग आये हेमन्त-वसन्त के फूल, उस पार बगीचों से झाँकते गाँव, अगल-बगल कनेर, नीम, झड़बेरी, पारिजात, चिलबिल, अकोल, श्रीफल, आम, शीशम, सेमल और अशोक आदि से शोभित सहज-सघन वनराजि, डीह, ढूह, किम्वदन्तियों को छिपाये कहानी किसी फाक्स साहब की, किसी शंकर धोबी की, किसी गाँव के श्रद्धालु किसान की, जंगली जानवरों की, साँप, नेवला, चूहा और बिल्ली की कि ये बाबा के पालतू जीव जब कुटीरद्वार पर आ जाते तो लोग समझ जाते अब बाबा भूगर्भ से बाहर आ गये हैं, अब वे इन्हें दूध पिलायेंगे, अब फाटक के पीछे से भक्तों को आशीर्वाद देंगे। हाँ, वे गुफा में प्रवेश के बाद किसी को दर्शन कहाँ देते थे ? कहता है एक किसान, भाग्यवान् था वह एकमात्र बंगाल से आया एक विद्वान् जवान। बेशक स्वामी विवेकानन्द बहुत भाग्यवान् थे। डटे रहे, विना दर्शन किये नहीं जायेंगे। दर्शन के बाद बाबा ने महीनों तक रोक लिया तो रुके रहे, विना आज्ञा के कैसे जायँ? "कुछ दिन यहाँ ठहर कर दास को कृतार्थ कीजिए।" ऐसी ही विनम्र वाणी थी, अतिथिदेवों के चरणों में सेवार्थ बिछी जैसी। गंगातीरी संत-परम्परा का एक चमत्कार कि आश्रम सही अर्थ में जनसेवा के केन्द्र थे, लोक के लिए सेवा, परलोक के लिए सेवा। इस प्रकरण के बाद पवहारी बाबा का परिचय आवश्यक हो जाता है।

१९ वीं शताब्दी के महान् सन्त पवहारी बाबा का जन्म जौनपुर के पास प्रेमपुर में १८९६ वि. (सन् १८४० ई.) में हुआ था। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार इनका जन्मस्थान गूँजी (वाराणसी) और स्वामी निर्वेदानन्द के अनुसार प्रेमपुर (जौनपुर) है । बचपन का नाम हरभजन था। पिता का नाम था अयोध्या तिवारी और चाचा लक्ष्मीनारायण थे। आपके बचपन की शिक्षा, उपनयन और वेदशास्त्रादि का अध्ययन कार्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी और श्री सम्प्रदाय के तपस्वी चाचा लक्ष्मीनारायण के साथ रहकर सम्पन्न हुआ जिनकी तपःस्थली कुरथा (गाजीपुर) में थी। बचपन में चेचक ने एक आँख ले ली तब् भी वे बहुत सुन्दर और गठीले शरीर वाले थे। अविवाहित रह तपस्वी जीवन बिताने के उद्देश्य से विद्याध्ययन समाप्त कर आपने १८५६ ई. में चारों धाम सहित हिमालय-क्षेत्र की यात्रायें सम्पन्न कीं और अनेक शक्तिधर योगियों का सान्निध्यलाभ प्राप्त किया ।

वे अब जड़वाद से ऊपर उठ पूर्ण तेजस्वी हो गये थे। आहार के रूप में काली मिर्च का रस और दूध रह गया था। तत्पश्चात् स्वामी निरंजनानन्द (वाराणसी) से अद्वैत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदान्त का अध्ययन समाप्त कर वे कुरथास्थित अपनी गुफा में बन्द हो कठोर तपस्या में लीन हो गये। इसके कुछ दिन बाद योगियों की सिद्ध साधनास्थली गिरनार पर्वत, अयोध्या और बंगाल प्रान्त की यात्रायें हुईं। वापस होकर वे गुफा में इस प्रकार साधनारत हो गये कि महीनों-महीनों बाद दर्शन देने लगे। स्वामी विवेकान्द मार्गदर्शन के लिये २ फरवरी १८९० ई. को आश्रम पर पधारे थे और प्रतीक्षा में लगभग तीन मास रुकना पड़ा था। सम्वत् १९५५ की ज्येष्ठ अमावस्या को अपनी ही होमाग्नि में आत्माहुति बन बाबा का देहावसान हुआ।

इसके पूर्व उन्होंने महीने भर चलने वाला एक विशाल यज्ञ किया था। अतिथि-सत्कार, विनयशीलता, आडम्बरहीनता, शिल्पकला और पाकशास्त्र -दक्षता, हिन्दी, संस्कृत, बंगला और तमिल-तेलगू भाषा-ज्ञान, कम से कम उपदेश कर अधिक से अधिक अन्तःप्रेरणा उत्पन्न करने की क्षमता, भक्ति, योग, प्रेम, अहिंसा और तप -त्याग के जीवन्त प्रतिमान होना आदि-आदि आपके योगिवत् व्यक्तित्व की विशेषतायें थीं। आपकी तप-शक्ति के चमत्कारों की अगणित किंवदंतियाँ कही जाती हैं। "सर्वं विष्णुमयं जगत्" आपके उपदेशों का सार था।

जैसा कि आरम्भ में कहा जा चुका है, स्वामी विवेकानन्द का गाजीपुर में २१ जनवरी सन् १८९० ई. को पदार्पण हुआ। कुरथा (गाजीपुर) के पवहारी बाबा का दर्शन करना उद्देश्य था। वे यहाँ गोराबाजार के बाबू सतीशचन्द्र मुखर्जी के अतिथि रहे। दर्शनार्थ आने-जाने की कठिनाई के कारण बाद में कुछ दिन आश्रम के पास किसी गाँव में गुप्तवास किया। बहुत कठिनाई से बाबा के दर्शन हुए। गोराबाजार -निवासी रायबहादुर गगनचन्द्र राय (अफीम फैक्ट्री के उच्चाधिकारी) ने उनका बाबा से प्रथम परिचय कराया। अपने तीन मास के इस प्रवास के बीच स्वामी जी अपने कलकत्ते आदि के मित्रों, विशेषकर प्रमदादास मित्र को दो दर्जन से ऊपर पत्र लिखे। इन पत्रों में उन्होंने स्वीकारा है कि इस महापुरुष के दर्शनों से वे बड़भागी हुए, वे उनके शरणागत हुए और उन्हें उपदेश प्राप्त हैं। स्वामी जी ने "गाजीपुर के सिद्ध सन्त पवहारी बाबा" नामक एक पुस्तक भी लिखी। गाजीपुर-प्रवास में स्वामी जी बराबर कटि-पीड़ा झेलते रहे तथापि यहाँ की जलवायु की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। यहाँ का गंगातटीय आवास उन्हें बहुत मनोरम लगता था परन्तु अनेक कारणों से स्नान को कष्टसाध्य बताया है। दर्शनों की उद्देश्यपूर्ति के बाद वे शीघ्र जाना चाहते थे परन्तु बाबा के विनम्र-मधुर आग्रह उन्हें रोके रहे। यहाँ से जाने के बाद दो-तीन वर्षों तक वे नयी ऊर्जा के साथ स्वदेश भ्रमण करते रहे और अन्ततः ११ सितम्बर १८९२ ई. में शिकागो के धर्म-सम्मेलन में विश्व के शिखरपुरुष के रूप मे प्रतिष्ठित हुए।

कुरथास्थित पवहारी आश्रम से जुड़े व्यक्तियों में विश्वपुरुष स्वामी विवेकानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अतिरिक्त भारतवर्ष के सिद्ध महात्मा स्वामी निर्वेदानन्द का नाम आदर के साथ लिया जाता है।

श्री स्वामी निर्वेदानन्द जी का जन्म २३ दिसम्बर सन् १८२३ ई. में केरल के चित्तूर ग्राम (पालघाट) में हुआ। माता-पिता का नाम लक्ष्मी अय्यर एवं लक्ष्मण अय्यर था। इन दोनों के धर्मिष्ठ होने का प्रभाव पुत्र वेदगिरि (स्वामी जी का पूर्व नाम) पर भी भरपूर पड़ा। सीनियर कैम्ब्रिज पास करने के बाद पिता का निधन हो गया। परिवार का बोझ उठाने के लिए उन्हें सेना में और फिर बाद में वर्मा सेल (बम्बई) में नौकरी करनी पड़ी। वहाँ रामकृष्ण मिशन से जुड़ने और सत्संग-लाभ से अध्यात्म के ऊँचे शिखरों पर आरोहण का संस्कार जाग उठा। वे हिमालय की ओर दौड़े। अन्ततः उन्हें वशिष्ठ गुहा आश्रम (टिहरी गढ़वाल) में सिद्ध महापुरुष पुरुषोत्तम नन्द का आध्यात्मिक आश्रय मिला। आत्मदर्शन की लालसा और वैराग्य के दबाव में ग्यारह वर्ष पुरानी वर्मा सेल की नौकरी छोड़ दी और सन् ५७ में स्वामी पुरुषोत्तमानन्द से मंत्रदीक्षा ले वे संन्यासी हो गये।

सन् ६१ में गुरुदेव की महासमाधि के बाद स्वामी जी कठोर तप और परिव्रजन में लीन हो गये। इसी क्रम में वाराणसी आकर स्वामी विवेकानन्द के उदबोधक पवहारी बाबा के प्रति आकर्षण बढ़ा और सन् ६६ में निर्वेदानन्द जी कुरथा (गाजीपुर) के इस प्रज्ञाधाम में आ गये। पवहारी आश्रम से कुछ हटकर शान्त, एकान्त, आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण और आसेतु हिमांचल परिव्रजन करने वाले स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती, पंजाबी बाबा और विष्णुबाबा आदि-आदि महात्माओं के चरणरज से पवित्र गंगातट को पाकर कुटिया बनाकर रम गये। लगभग दो दशक तक उनके आध्यात्मिक जीवन की उच्च तरंगों का लाभ इस अंचल के भोले-भाले ग्रामीणों और दूर-दूर के श्रद्धालु भक्तों को मिलता रहा। सन् ८६ में वे अकस्मात् कैंसर से आक्रान्त हो गये और बम्बई से उपलब्ध चिकित्सा सुविधा और भक्तों की समर्पित सेवा के बावजूद गाजीपुर नगर-स्थित मानव सेवा संघ में २८ फरवरी सन् १९९१ को महासमाधि में लीन हो गये। रोग की असह्य पीड़ा, एक-एक हड्डी चिटक जाने की स्थिति में साक्षीभाव में अविचलित वे कहा करते–"आध्यात्मिक प्याले में ग्रहण किया गया कष्ट भी एक आनन्द है।" ऐसे भयंकर रोग के प्रति उनमें स्वागतभाव था और प्रायः समाधिस्थ हो जाया करते थे। इस पीड़ित अवस्था में भौतिक शरीर से परे हो उन्होंने एक पुस्तक लिखी, "एट द फीट आफ माई गुरु"। उनकी अन्य पुस्तकें "ए पीप इन टु द गीता", "स्पिरिचुअल टाक" और "गाइड टु स्पिरिचुअल एस्पीरेन्ट" हैं। स्वामी जी यम-नियम के साथ-साथ विचार, विवेक और वैराग्य पर बहुत बल देते थे। उनका लोकैषणा -रहित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और धर्मानुशासित तपस्वी जीवन इतना पवित्र था कि उनका दर्शन कर साक्षात् ईश्वर की सत्ता के सान्निध्य का अनुभव होता था। वे अपनी ही कविता की निम्नांकित पंक्तियों की व्याख्या थे -

"यदि उसका अनुभव हो गया,
यहीं इस संसार में।
(इसी जन्म में)
तभी सार्थक होगा जीवन
अन्यथा सर्वनाश है निश्चित।"

पवहारी आश्रम से कुछ दूर हटकर गंगातट -स्थित केरल बाबा के इस प्रशान्त प्रज्ञाधाम के कण-कण में उनके पावन अस्तित्व की अनुभूति आज भी होती है। इस आश्रम का नया नाम "श्रीमद् आद्यशंकरादित्य प्रज्ञाधाम, गंगाघोष (कुर्था) हो गया है और इसके व्यवस्थापक दण्डी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी हैं। समय-समय पर यहाँ यज्ञ, संत-सभा, प्रवचन, व्रत-अनुष्ठान आदि के भव्य आंयोजन हुआ करते हैं।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राजन शुक्ल का अवदानः रामलीला मैदान

(१)

आप यदि वाराणसी से गाजीपुर आ रहे हैं तो शहर में प्रवेश करते ही चुंगी चौकी के बाद भव्य रूप में घिरा हुआ लंका का रामलीला मैदान मिलेगा। इसकी प्राचीर पर एक शिलालेख लगा है। उसकी कुल ग्यारह पंक्तियों में अंकित है-

'ओ३म्/अतिप्राचीन रामलीला कमेटी, गाजीपुर के/लंका के मैदान का/ जीर्णोद्धार/ श्री राजन शुक्ला आई.ए.एस. की प्रेरणा से/गाजीपुर के प्रबुद्ध नागरिकों,संस्थाओं एवं सरकारी कर्मियों द्वारा स्वसंसाधनों से/किया गया/राकेश चन्द्रा/अपर जिलाधिकारी गाजीपुर।'

इस शिलालेख से स्पष्ट है कि इस ऐतिहासिक-सांस्कृतिक मैदान का जीर्णोद्धार हो गया है। अब वह नये रूप में निखर गया है। उसका यह नया रूप वास्तव में बहुत आकर्षक है। बहुत ऊँची,लम्बी, सुदृढ़, भव्य और कलात्मक प्राचीर तथा सड़क, गरिमायुक्त विशाल गगनचुम्बी लौह-कपाट, सब मिलाकर गाजीपुर के गौरवास्पद स्थलों के बीच उल्लेखनीय एक स्थल प्रतिष्ठित हो गया। गाजीपुर के पूर्व जिलाधिकारी श्री राजन शुक्ल के स्थानान्तरण के बाद जो कार्य शेष रह गया था उसमें से कुछ अपने कार्यकाल (सन् २०००) में जिलाधिकारी श्री रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी ने पूर्ण कराया।

रामलीला मैदान के तत्कालीन जीणोद्धार कार्य ने लेखक को बहुत प्रभावित किया और उसने इस पर आधारित एक रिपोर्ट तैयार किया। वह 'आज' (वाराणसी) में २१ और २२ फरवरी सन् १९९९ के दो अंकों में प्रकाशित हुआ। उस फीचर को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(२)

मेरी इस पुस्तक का नाम "गाजीपुर संवाद" है। मैं इसमें से एक रचना निकाल कर देखता हूँ, "फले -फूले गाजीपुर गंगा की गोद में।" इसमें एक स्थान पर इस प्राचीन शहर के दर्शनीय स्थलों की चर्चा करते-करते नाम लेता हू प्रसिद्ध ऐतिहासिक रामलीला मैदान का। उस अंश को ज्यों का त्यों यहाँ पुनः प्रस्तुत करना चाहता हूँ, कारण कि यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैदान पुनर्जन्म के ऐतिहासिक दौर से गुजरा है, इसके भूत को भगाये जाने का प्रयत्न हुआ है। बहुत बीहड़, भयानक, घृणित और निराश करने वाला था वह ऐतिहासिक-सांस्कृतिक रामलीला मैदान का भूत। इसलिए इस रचना में दर्शनीय वस्तुओं की सूची के साथ इस भूत को प्रस्तुत करने के बाद मैं पाठकों को रोकता हूँ।

'अच्छा रुकिये, यहाँ इस अंतिम नाम (रामलीला मैदान) की चर्चा पर आपको लग सकता है कि मैं कुछ शरारत कर रहा हूँ। सम्भव है, आपके मुँह में थूक भर गया हो और आपने पिच करके सिक्के भर जमीन को गाजीपुर का लंकास्थित रामलीला मैदान बना दिया हो। सम्भव है, आपको लग रहा हो,यह तो सारा मजा ही किरकिरा हो गया और सारा-सारा सौन्दर्यसंभार गन्दगी और गलीज से भर गया। तो, क्या कीजिएगा? मेरा दोष भी क्या? कभी का पवित्र रामलीला मैदान और सार्वजनिक धरोहर आज शौचालय बना हुआ है, निःशुल्क और मुक्त। इतने पर भी महत्ता तो इसकी माननी ही पड़ेगी।

यह मैदान न केवल राष्ट्रीय स्मृति के रूप में नमक सत्याग्रह से जुड़ा है, बल्कि २ अक्टूबर, १९२९ को महात्मा गांधी के आगमन और उद्बोधन से पवित्र हो चुका है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रधानमंत्री राजीव गांधी, चौधरी चरण सिंह, लोकनायक जयप्रकाश (६ दिसम्बर १९७४) आदि जैसे जैसे बहुत से व्यक्तियों के भाषणों से गुंजित हो चुका है। यह हर साल एक बार दशहरे भर पूरे शहर की धड़कनों की भाँति सजीव रहता है और विशाल रावण के पुतले को जलाकर राम के विजयघोष में डूब जाता है। लेकिन अगले ही दिन से यह क्या शुरू हो जाता है? अगणित महाप्रदूषण रूपी रावण के सिर सुबह-शाम , अंधेरे में ही नहीं, दिन के उजाले में भी परम बेहयाई के साथ पूरे मैदान की जमीन में उगने लगते हैं।

नाना प्रकार के आदर्शवादी नारों से अलंकृत और रामलीला मैदान के पश्चिमी छोर पर सगर्व सिर उठाये खड़ा नेताओं का पक्का भाषणमंच भी इस गन्दे, घिनौने, यथार्थ व्यूह में घिर जाता है। लोकतांत्रिक उपलब्धियों के बीच यह यथार्थवादी उपलब्धि गाजीपुर के संदर्भ में सबसे क्रूर-कठोर सत्य है। बेशक, रामलीला मैदान गाजीपुर का एक भद्दा यथार्थ है,प्रदूषण इसकी मूल प्रवृत्ति है। पश्चिम ओर राम-जानकी का आरती मंच और पूरब में राम-जानकी मंदिर, दोनों के बीच में अखिल प्रदूषण की यह कुरूप प्रदर्शनी, यही यहाँ की मूल प्रकृति का प्रतीक बन जाती है। नगर के सुन्दरीकरण के सरकारी हाथ इस मैदान का स्पर्श भी नहीं कर पाते हैं।'

यह रहा मैदान के पुराने रूप का चित्रण।

(३)

लेकिन, अब देख रहा हूँ कि सन् १९९९ के आरम्भिक महीनों में सुन्दरीकरण के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2

एक सरकारी हाथ ने इस बीमार मैदान को छू कर पनपना दिया है। यह जाग उठा है। इसका कायाकल्प हो रहा है। दिन भर नव निर्माण का ऐसा मेला लगा है कि देखने पर सकारात्मक सोच के प्रति आस्था बढ़ती है। लगता है, शहर गाजीपुर का हृदय विशाल हो रहा है, सिर ऊँचा हो रहा है, असंभव लगने वाला कार्य सम्भव हो रहा है और एक घाव भर रहा है। दान और श्रमदान का एक इतिहास बन रहा है। निर्माण के प्रति एक नये किस्म का विश्वास जग रहा है। "कुछ नहीं हो सकता" के बीच "बहुत कुछ हो सकता है " के इस कीर्तिमान को नकारना अब सम्भव नहीं। रामलीला मैदान की यह लंकाविजय समय का एक चमत्कार है; जबकि विशाल मरे हुए मैदान का अपवित्र भद्दा शव ट्रैक्टरों में भर-भर कर लायी जा रही पवित्र चिकनी मिट्टी की तहों के नीचे दफ्नाया जाता है, कैसा लगता है? कैसा है वह उत्साहवर्धक दृश्य?

सड़क पर खड़े होकर देखते हैं, इस नवनिर्माण समारोह के चलते मैदान में प्रतिक्षण सौ से अधिक नगर के भद्र लोग खुले मन से अपनी बहु आयामी सेवायें अर्पित कर रहे हैं। अपनी-अपनी बारी पर विद्यालय-महाविद्यालय के छात्र-छात्रायें हैं, शिक्षक हैं, विभिन्न विभागों के सरकारी अधिकारी-कर्मचारी हैं, गैर सरकारी संस्थाओं और प्रतिष्ठानों से आये लोग हैं, मिस्त्री-मजदूर हैं, ट्रैक्टर वाले हैं, रामलीला कमेटी से जुड़े लोग हैं, प्रबन्धक-व्यवस्थापक हैं, ईंटदानी से लेकर बालू सीमेन्ट दानी तक हैं, इस सुन्दरीकरण महायज्ञ के दर्शनार्थी रूप में समयदानी चकित-प्रफुल्लित नागरिक हैं और पता नहीं किस-किस रूप में कितने लोग हैं। बे -मन से अथवा आलोचक मानसिकता लेकर आने वालों को भी यहाँ का आत्मविश्वासमूलक ऊर्जा का वातावरण अपनी रंग-तरंगों में डुबो देता है। जो कुछ प्रत्यक्ष है, पारदर्शी है वह आलोचना से परे है। उसके प्रति बस अहोभाव उत्पन्न हो सकता है।

यह कितनी सुखद स्थिति होगी कि लाट साहब की कब्र, नबाब साहब की चहार-दिवारी, पहाड़ खाँ का पोखरा, लाहौरी ईंट के ढूह, उदास, ऊँघते और उजाड़ खँड़हर जैसे ताड़-खजूर की कतारों वाले गाजीपुर की इस गंगातटवर्ती लहुरी काशी में अब बारह बीघे का एक सँवरा-सुथरा, चौरस, सुरक्षित रामलीला मैदान होगा। उसके चारों ओर ग्यारह सौ मीटर लम्बाई वाली आठ फीट ऊँची सुदृढ़ दीवार होगी। भीतर दीवार से लगी चतुर्दिक् सड़क होगी। किनारे-किनारे गाछ होगी। यत्र-तत्र बैठने के स्थान होंगे। बूढ़ों के लिए सुबह-शाम टहलने का निर्विघ्न सुयोग होगा, बच्चों की विविधि क्रीड़ाओं के लिए प्रशस्त स्थान होगा। सभा, समारोह, मनोरंजन और अन्यान्य सार्वजनिक आयोजनों के लिए अब गंदगी का संकोच नहीं होगा। दस दिन पूर्व जो स्थिति कपोलकल्पना जैसी लगती थी वह हस्तामलकवत् सत्य होगी। रावण विजित होगा और विजयी राम हँसते होंगे। क्या ही अच्छा होता कि इस नव निर्माण पर्व का जाग्रत् भाव नगर का स्थायी भाव हो जाता!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४)

आकर्षण का केन्द्र बने रामलीला मैदान के सुन्दरीकरण से और बहुत सी बातों पर विचार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इस रामलीला मैदान के कायाकल्प वाली प्रक्रिया के साथ ही श्रमदानसंस्कृति पर पुनर्विचार का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। समकालीन परिवेश में इसे निस्सार समझ लिया गया और इस पर से विश्वास उठ गया। इसे मात्र खानापूर्ति, दिखावटी और निष्फल मान लिया गया। इससे किसी बड़ी उपलब्धि की तो कल्पना ही नहीं की जाती। तिस पर भी यह श्रमदान सरकारी अधिकारीगण के साथ जुड़ा रहा। लेकिन लंकास्थित रामलीला मैदान की नयी करवटों के साथ इस गांधीवादी मुहावरे को भारी सम्मान मिला। इतना ही क्यों? साथ साथ उक्त मुहावरे से सटे कुछ और मुहावरों को भी पुनः प्रतिष्ठा मिली। सरकारी अधिकारी होने का मुहावरा और सरकारी अनुदान -निर्भरता का मुहावरा भी ऐसे ही मुहावरे हैं। जब लगभग एक करोड़ रुपये से अधिक मूल्य का निर्माणकार्य सरकारी श्रमदान द्वारा हँसते खेलते सम्पन्न हो जाते हुए देखते हैं तो इसकी गम्भीरता पर ध्यान केन्द्रित हो जाता है। व्यापक राजनीतिगंध -प्रदूषित और स्वार्थसिद्ध उलटें-पलटे सोचप्रधान वातावरण में उक्त उपलब्धि से एक प्रकार की आश्वस्ति मिलती है। फिर ऐसा भी नहीं कि लंका में ही श्रमदानपूर्वक इस निर्माण का प्रयोग हुआ है। इसका प्रथम बार प्रयोग और उसकी सफलता का एक पुष्ट और सफल साक्ष्य गाजीपुर के आमघाट में मिल चुका है। वहाँ के गाँधी पार्क का उद्धार एक चमत्कार जैसा लगा था। वहाँ नया निखरा सुरुचिपूर्ण पार्क दर्शकों को विरमा देता है। लेकिन यहाँ तो 'पार्क' नहीं एक विशाल मैदान रहा, बहुत बिगड़ा-बीहड़ मैदान। इस दुस्साध्य मोर्चे पर श्रमदान की सफलता सचमुच विचारोत्तेजक है। क्या आश्चर्य कि पार्क और मैदान से आगे बढ़कर यह श्रमदान का पुष्ट सांस्कृतिक हाथ पूरे नगर और जनपद को अपनी पावन पकड़ में ले ले।

वास्तविकता तो यह है कि उक्त गांधी पार्क और रामलीला मैदान के निर्माण तथा सुन्दरीकरण की शृंखलायें पूरे जनपद में आकर्षणकेन्द्र बनी हैं। पुरातात्त्विक महत्त्व के स्थलों और सामग्रियों की सुरक्षा, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक महत्त्व के स्थलों, राष्ट्रीय गौरव से जुड़े स्मारकों और ऐसे अनेक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थलों के पुनरुद्धार के कार्य जो अति द्रुतगति से सम्पन्न हुए हैं वे अपने आप में प्रमाण हैं। गाजीपुर के रामलीला मैदान की ही भाँति सैदपुर के रामलीला मैदान को अतिक्रमणमुक्त कराते हुए कायाकल्प, कामाख्या परिसर (करहिया) और पवहारी बाबा स्थल परिसर का सुन्दरीकरण, भीतरी के स्कन्दगुप्त स्मारक और मौनी बाबा परिसर का निर्माण, परमवीरचक्र विजेता अब्दुल हमीद का स्मारक (धामूपुर), परमवीरचक्र-विजेता रामउग्रह पाण्डेय का स्मारक(एमावंशी), विश्वविख्यात किसान नेता और विद्वान् संन्यासी स्वामी सहजानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरस्वती का स्मारक (देवा), शहीद स्मारक (हनुमानगंज, गहमर), परमहंस आश्रम (तमलपूरा) और इस प्रकार के अनेक निर्माण -उद्धार कार्य देखकर ऐसा लगता है जैसे गाजीपुर जनपद में इक्कीसवीं शताब्दी के स्वागत की तैयारी के रूप में वे सम्पन्न हो रहे हैं।

इस समूचे ऐतिहासिक- सांस्कृतिक निर्माण, पुनरुद्धार और सुन्दरीकरण की सफलता के पीछे एक व्यक्ति की सुदृढ़ इच्छाशक्ति निहित है और उस व्यक्ति का नाम है जिलाधिकारी श्री राजन शुक्ल। उच्च परिकल्पना, निर्णयक्षमता, उपयोगितावादी सौन्दर्य-दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना, अटूट श्रमशीलता और सच्चाई-ईमानदारी के प्रति समर्पित अत्यन्त सादगीपूर्ण जीवन वाले इस व्यक्ति का चल रहा एक डेढ़ साल वाला कार्यकाल अत्यन्त सघन रचनात्मक कार्यों वाला रहा। इस कार्यकाल की उपलब्धियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य की क्षमता ही वह श्रेष्ठ साधन है जिससे सफलताओं के शिखर पर आरोहण किया जा सकता है। लंका के मैदान में इसी मनुष्य की शक्ति, विशेषकर इच्छाशक्ति को प्रतिष्ठित होते देखा गया है। यह वही शक्ति है जिसके चलते शब्दकोष में 'असम्भव' शब्द नहीं होता है और जिसके सामने समस्याएँ करबद्ध और नतमस्तक होकर आती हैं।

गाजीपुर के लंकास्थित रामलीला मैदान की शुभ नियति से जिलाधिकारी श्री राजन शुक्ल को एक समर्पित सहयोगी अधिकारी मिल गये ए.डी.एम. श्री राकेश चन्द्रा। उन्होंने जिलाधिकारी की योजना को पूरा करने में अत्यधिक परिश्रम किया। बारह बीघे के गन्दे और भद्दे रामलीला मैदान के नंगे शरीर को दो तीन फीट ऊँची मिट्टी से ढँकने, चहरदीवारी से मैदान को सुरक्षित करने, पानी के निकास की स्थायी व्यवस्था करने आदि-आदि से सम्बन्धित समस्याओं के अतिरिक्त मैदान के पूरबी छोर पर पोखरे से जुड़ी समस्या थी, कठिनातिकठिन। वह पोखरा कि जिसमें हाथी डूबने भर पानी होता, कीचड़-गंदगी से भरता-भरता, ऊपर जलकुम्भी की जकड़नों में फँसा अपनी पहचान तक खो चुका है। उसके भीतर की गहराई तक बनी पक्की सीढ़ियों को उभारने, पूरी तरह सफाई पूर्वक उसके उद्धार की समस्या समस्या नहीं एक चुनौती थी। इन सब से कौन टकराये? सो भी अनुदान-शून्यता की स्थितियों में।

उच्चाधिकारी प्रायः ऐसी चुनौतियों से कतराते हैं। कौन बवाल मोल ले? अनेक प्रश्नवाचक और विवादसम्भवी कोणों को सामने उभार कर कौन जूझे? ऐसी चुनौतियों से टकराना साहस ही नहीं दुस्साहस जैसा लगने लगता है। तो, ऐसे गुनाह बेलज्जत से उत्तम है चुपचाप आराम से नौकरी कर सकुशल चला जाना। समस्या और उससे जुड़ी समस्याएँ उठेंगी ही नहीं। सर्वत्र राजी-खुशी वाली यथास्थिति बनी रहेगी। ऐसी स्थिति में अगर कोई प्रश्नशील समस्या से जूझने का निर्णय लेता है, चुनौती को शिरोधार्य करता है और जटिलताओं के तोप के मुँह को मोड़ देता है, तो मानना पड़ेगा कि वह एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वथा भिन्न किस्म का व्यक्ति है। वह मात्र नौकरी नहीं करता है, वह इस जनपद को प्यार दे रहा है। उसके लिए वह फावड़ा उठाते और कूड़े की खाँची सिर पर रखते हिचकता नहीं है।

अब मैं पुनः उसी बिन्दु पर आ जाना चाहता हूँ जहाँ से लेख को आरम्भ किया था। आपके सामने रामलीला मैदान के 'उस' रूप की एक छवि प्रस्तुत की गयी और फिर सामने है यह एक नया निखरता रूप, कागज पर नहीं, जमीन पर । उसे खुली आँखों से देखा जा सकता है। फिर जन-सामान्य की इस प्रकार की प्रतिक्रिया और संवेदनाओं के साथ जुड़ा जा सकता है कि जिस यशस्वी व्यक्ति के हाथ से रामलीला मैदान के दिन बहुरे उसे सहयोग, साधुवाद और सम्मान मिलना चाहिए। प्रशंसनीय की प्रशंसा न करना असभ्यता है।

'जो हमारी राह के काँटे हटाते हैं।
हम उन्हीं को फूल की माला पिन्हाते हैं।।'

(५)

सचमुच पूरा गाजीपुर जनपद श्री राजन शुक्ल को अनवरत फूलों की माला पिन्हा रहा है। प्रतिवर्ष न केवल एक दशहरे के अवसर पर बल्कि साल में अनेक बार इस रामलीला मैदान में किसी विशिष्ट कार्यक्रम, राजनीतिक समारोह अथवा अनुष्ठान आदि के सिलसिले में पहुँच कर लोग उन्हें साभार स्मरण करते हैं और भाव-सुमनों को स्मृति-सूत्रों में पिरोकर उनकी कीर्तिमूर्ति को माल्यार्पण करते हैं।

अतिक्रमणों के दबाव में चारों ओर से सिकुड़ते जाते इस असुरक्षित गन्दे-भद्दे मैदान को अत्यन्त सुदृढ़ प्राचीरों और विशाल फाटकों में सुरक्षित कर तथा इस जनपद गाजीपुर को सौंप कर श्री राजन शुक्ल यहाँ से स्थानान्तरित होकर चले गये। अब लाख-लाख लोगों की चुनावी सभाओं को ही नहीं, सन् २००२ में दिव्य मुरारी बापू के दस दिवसीय विराट् सत्संग समारोह को, चार दिवसीय अभूतपूर्व गायत्री महायज्ञ को,तथा भविष्य की ऐसी अनेकानेक संभावनाओं को आधार देने वाला यह मैदान गाजीपुर का अपना गौरव बन गया है। समय-समय पर अनुभूत होने वाली इस गौरव की हर सुखद सिहरन जाने-अनजाने श्री राजन शुक्ल से जुड़ जाती है। यह एक सत्य है। ३०अक्तूबर से २ नवम्बर सन् २००१ तक ऐतिहासिक स्वास्थ्य मेले में चलने वाले इस सत्य का विशेष रूप से साक्षात्कार हुआ। उसकी चर्चा यहाँ उचित प्रतीत होती है।

लंकास्थित रामलीला मैदान का चार दिवसीय स्वास्थ्य मेला,ऐतिहासिक और गाजीपुर जैसे पिछड़े जनपद के लिए बहुत उपयोगी था। गाजीपुर सदर अस्पताल के हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. बी.जे. पी. सिन्हा ने रामलीला मैदान की इस अपार भीड़ को लक्ष्य कर इसे 'स्वास्थ्यसेवा महाकुंभ' की संज्ञा दी थी। और यथार्थ रूप में उस अवसर पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस जनपद के वासियों और पड़ोसी जनपदों से आये जनों को रामलीला मैदान की सुरक्षित विशालता का अहसास हुआ और ऐसे हर अहसास के साथ एक नाम की स्मृति हर किसी के मानस -पटल पर चमक जाती -राजन शुक्ल ! इसके साथ ही ध्यान जाता है उस एक व्यक्ति के ऊपर जो इस महामेले का संकल्पक, आयोजक और सूत्रधार था, तथा दिन -रात घोर परिश्रम झोंक कर जिसने इस मेले को सफल बनाया था, वह है वर्तमान सांसद मनोज सिन्हा।

उक्त स्वास्थ्यमेला एक प्रकार से सांसद मनोज सिन्हा के प्रभाव का विस्फोट था और यह सुखद सुयोग था कि प्रदेश के चौथे मेले के रूप में यह सर्वाधिक विशालता और सफलता की छाप छोड़ गया। गौरवान्वित हुआ रामलीला मैदान और प्रामाणिक रूप से साक्षी बना कि विभिन्न रोगों के कुल ४९ काउन्टरों पर १६० चिकित्सकों तथा ७३६ स्वास्थ्यकर्मियों के योगदान से मात्र चार दिनों में ५९९१३ रोगियों की चिकित्सा सम्पन्न हुई तथा इनसे जुड़े किसी न किसी प्रकार लाखों लोग लाभान्वित हुए। लगभग छ: सौ मरीजों को नि:शुल्क चिकित्साव्यवस्था के साथ बाहर भेजा गया। एक हजार से ऊपर विकलांगों को ट्राइसाइकिल दी गयी।

राष्ट्रीय ख्याति के चिकित्सकों के सहयोग से मेले की गरिमा बढ़ गयी। दिल्ली के अ०भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल और लखनऊ के किंगजार्ज मेडिकल कालेज, संजय गांधी संस्थान तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध उन चिकित्सकों की सेवायें इस मेले को मिलीं जो अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ रहे। विश्व स्वास्थ्य संगठन और केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान -परिषद्, दिल्ली के सौजन्य से उपलब्ध कराये गये चिकित्सक तथा दवायें तथा इसी प्रकार होमियोपैथी और आयुर्वेदिक पद्धति के डॉक्टर तथा दवाओं की नि:शुल्क व्यवस्था ने रोगी समुदाय को बहुत प्रभावित किया।

स्वास्थ्यमेले में रामलीला मैदान पूरी तरह से जगा हुआ प्रतीत हुआ। चिकित्सा कार्यक्रम श्रमपूर्वक सम्पन्न होता दृष्टिगोचर हुआ। चाहे दिनरात श्रम करने वाले सांसद मनोज सिन्हा के समर्पित तेजस्वी व्यक्तित्व का प्रभाव रहा हो चाहे यह कोई अज्ञात सुयोग रहा हो कि चार दिनों में चिकित्सक-दल ने पसीना बहाकर सफलता पायी। इतनी भारी व्यवस्था के भीतर जो अव्यवस्था और त्रुटियाँ दिखीं वे नगण्य थीं और सफलता के योगफल पर उनका प्रभाव नहीं पड़ा। उपचार के आँकड़े आँख खोल देने वाले सिद्ध हुए। आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के नेत्रचिकित्सक पद्मश्री डॉ. विजयकुमार दादा ने स्थानीय डॉक्टरों की सहायता से १८० आँख रोगियों को देखा और अपने हाथों से लेंस लगाया।

उपचार द्वारा अनुगृहीत रोगियों के प्रकाशित आँकड़ों में आपरेशन, सर्जरी, हड्डी-जोड़; नाक, कान और गला, प्लास्टिक सर्जरी, डायबिटीज, हृदयरोग, बालरोग,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डायलसिस , कैंसर, मानसिक रोग और क्षय सम्बन्धी उपचार तथा इसी प्रकार दाँत के रोग, यौन रोग, चर्मरोग, अस्थमा, न्यूरोलाजी, मलेरिया, कुष्ठ, एड्स और अंधता आदि-आदि के आँकड़े चकितकारी तो थे परन्तु रामलीला मैदान की उस तीन दिवसीय भरी भीड़ को देखते पूरी तरह विश्वसनीय लगते थे। उनसे इस जाग्रत् मैदान की क्षमता रेखांकित होती थी।

अनेकानेक रोग-महारोग सम्बन्धी मेले के कुल ४९ स्टालों में सिमटी भारी भीड़ में बालक, वृद्ध और नर-नारी, निःशुल्क पंजीकरण का नीला पेपर लिए, रामलीला मैदान के जाग्रत् धर्म के स्वयं प्रमाण थे। और इस जाग्रत् धर्म के प्रमाण थे केन्द्रीय स्वास्थ्यमंत्री डॉ. सी.पी.ठाकुर के उद्घाटन के दिन से लेकर अंतिम दिन तक लगे चिकित्सकों के जमावड़े, पड़ोसी जनपदों के चिकित्साधिकारियों से लेकर स्वास्थ्य-मंत्रालय के निदेशक तक और विविध स्वयंसेवी संस्थाओं के हार्दिक योगदान से लेकर दिल्ली और लखनऊ के चिकित्सकों के योगदान तक, इस रामलीला मैदान में उतरे चार दिवसीय सर्वरोग चिकित्सालय के सिलसिले से जुटा जमावड़ा जनपद गाजीपुर के लिये स्मरणीय है।

ऊपर सर्वरोग चिकित्सालय नाम उछल आया है। मगर यह ऐसा चिकित्सालय नहीं है जिसके बारे में कहा जाता है कि यहाँ का समूचा वातावरण दुःखमय है। यहाँ का परिदृश्य कुछ और है। मध्य में कुर्सियों से सुसज्जित विशाल पंडाल में एक मंच पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से आये विविध लोककला, लोकगीत और लोकनृत्य आदि-आदि के कुशल कलाकार सबेरे से लेकर बड़ी रात तक अपनी कला का प्रदर्शन कर जनता का , रोगियों का, उनके साथ आये अभिभावकों और दर्शकों आदि का मनोरंजन करते रहते। पेयजल, बिजली, सुरक्षा और सफाई आदि सुविधाओं के बीच चार दिन के इस सुरुचिपूर्ण स्तरीय और उत्कृष्ट अनुरंजन के चलते इस रामलीला मैदान के चिकित्सालय का वातावरण कुछ और तरह का हो गया।

स्वास्थ्यमेले की सफलता का स्मरण दिलाने पर कहते हैं रामलीला कमेटी के कर्मठ और दूरदर्शी महामंत्री श्री विजयशंकर चतुर्वेदी (एडवोकेट) कि सार्वजनिक कार्यक्रमों के लिए एक अतिभव्य और विशाल भवन,(सांसद निधि-अवदान) पार्क, पोखरा, मंदिर, पुस्तकालय और वृक्षराजि सहित यह रामलीला मैदान गाजीपुर का गौरव होगा। चतुर्वेदी जी के इस विश्वास में पूरे गाजीपुर जनपद के विश्वास का संबल झलकता है। इसके साथ ही इसमें विशाल रामलीला मैदान के जाग्रत् धर्म का बल भी सम्मिलित है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर जनपद की
साहित्यिक चेतना का विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरंभ और विकास

गाधि, जमदग्नि, विश्वामित्र और परशुराम की तपोभूमि गाजीपुर जनपद की अपनी एक विशिष्ट साहित्यिक परम्परा है। हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल से ही गाजीपुर जिला भारती के पुनीत मंदिर में आत्मदान करता आया है।

चौदहवीं शताब्दी के आरम्भ से लेकर सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक यहाँ के सन्तों की जो वाणियाँ गुंजित हुईं वे न केवल हिंदी साहित्य के इतिहास में अपितु सहृदयों के कण्ठ –कण्ठ में आज भी बसी हुई हैं। भुड़कुड़ा का प्रसिद्ध मठ इन निर्गुणवादी सन्तों का केन्द्र रहा है। प्रयाग के वेलवेडियर प्रेस और भुड़कुड़ा मठ ने इन सन्तों की वाणियों को प्रकाशित किया है। इन सन्तों में **यारी साहब** (संवत् १७२५-१७८०), इनके शिष्य **बूला साहब** अथवा **बुलाकी** (संवत् १६८९-१७६६), इनके शिष्य **गुलाल साहब** (संवत् १७५०-१८१६) और गुलाल साहब के शिष्य **भीखा साहब** (संवत् १७७०-१८२०) प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त **गोविन्द साहब, पुरी साहब, जगजीवन साहब** और **पलटू साहब** की वाणियों का विकास भी यहीं से हुआ। बावरी सम्प्रदाय की प्रवर्तिका बावरी साहिबा के गुरु **मायानन्द** इसी जिले के पटना ग्राम के निवासी थे। ये सुप्रसिद्ध स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। **आचार्य परशुराम चतुर्वेदी** उक्त सन्तों को बाबरी सम्प्रदाय से जोड़ते हैं जबकि **डॉ. इन्द्रदेव सिंह** के अनुसार उन्हें भुड़कुड़ा की सन्तपरम्परा के अन्तर्गत माना जाना चाहिए।

सत्रहवीं शताब्दी के अंत में इस जिले के प्रसिद्ध सन्त **बूला साहब** की रचना 'शब्द सागर' प्रकाश में आयी। अपनी रचना में आपने जीव-जगत् के गूढ़ दार्शनिक विवेचन के साथ जीवन की परिमितता, पवित्रता और संयमितता का प्रभावशाली ढंग से समर्थन किया है। बसहर तालुका के सन्त **गुलाल साहब** की सरस रचनाएँ आज 'कहत गुलाल चरन बलिहारी' से अन्त होती हुई पूर्वी जिलों के गाँवों में होली के अवसर पर ग्रामीणों द्वारा झूम-झूम कर गायी जाती हैं। एक विंचित्र बात है कि ग्रामीणों के जीवन में सन्तों की वाणियों में गायन का एक मात्र समय होली का अवसर है। जितनी मस्ती में उस समय वे सूर, तुलसी और कबीर के पद गाते हैं उसी मौज और उल्लास के साथ वे गुलाल, भीखा और बुलाकी की रचनाएँ गाते हैं। प्रसिद्ध शिवनारायणी सम्प्रदाय के प्रवर्तक **शिवनारायण** इसी जिले के थे। इनकी दर्जनों रचनाएँ उपलब्ध हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सुदामाचरित' के लेखक कवि **हलधर** का जन्मस्थान पचोतर के किसी गाँव में बताया जाता है। 'सुदामाचरित' की हस्तलिखित प्रतियाँ गाजीपुर जिले में अनेक गाँवों में पायी गयी हैं। इन कवियों और सन्तों ने लोकभाषा का मान बढ़ाया और ऐसी अभिव्यक्तियों का मार्ग प्रशस्त किया जो जनता के हृदय को सीधे स्पर्श करने की सहज सामर्थ्य रखती हैं।

प्राचीन साहित्यकारों में **लाल कवि** का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने श्रीमद्भागवत का उल्था किया है। गाजीपुर का मुस्लिम काल में बहुत ख्याति और समृद्धि का स्थान रहा है। यहाँ के प्राचीन सूफी कवि ईश्वरदास (पचोतर परगना निवासी, सन् १५४६-१५७४) इनकी प्रमुख पुस्तक 'सत्यवती' है। इसके अतिरिक्त एकादशी कथा, स्वर्गारोहण कथा और युधिष्ठर -यज्ञ नामक पुस्तकें हैं। अनेक सूफी कवियों ने यहाँ प्रेम की साधना की। इन कवियों में **उसमान** का नाम हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर है। इनका उपनाम 'मान' था। ये जहाँगीर के समय में वर्तमान थे। इनकी प्रसिद्ध रचना 'चित्रावली' सन् १६१३ ई० में प्रकाशित हुई। इसके प्रारम्भिक अध्यायों में गाजीपुर नगर का बहुत ही आकर्षक वर्णन है। उसमान के अतिरिक्त प्रसिद्ध सूफी कवि **जायसी** का जन्मस्थान भी गाजीपुर को ही बताया जाता है। **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने लिखा है कि वे कहीं बाहर से आकर जायस में रहते थे और इसी धर्मस्थान को अपना निवासस्थान बना लिया। कवि ने लिखा है–

जायस नगर धरम अस्थानू।
तहाँ आइ कवि कीन्ह बखानू।।

इनके जन्मस्थान के विषय में इतिहासकार ठीक उत्तर नहीं दे पाते। गाजीपुर में इनके वंशज अब तक परम्परा से बताये जाते हैं। जायसी की भाषा भी बताती है कि गाजीपुर से इनका अधिक निकट सम्बन्ध रहा है। इनके 'पद्मावत' की हस्तलिखित प्रतियाँ इस जिले के कोने-कोने में मुसलमान रईसों के घर में मिलती हैं। जायसी शेरशाह के समकालीन थे। सन् १५२१ ई० में इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक पद्मावत की रचना प्रारम्भ की। हीरामन सुग्गे और रानी पद्मिनी की कहानी को घरों के भीतर से निकाल कर जायसी ने 'पद्मावत' के मन्दिर में आकर्षक साहित्यिक सज्जा के साथ प्रतिष्ठित कर दिया। **उसमान** ने 'चित्रावली' में चित्रदर्शन द्वारा प्रेम की कहानी लिखी है। सूफी कवियों में **आसी** भी गाजीपुर के रहने वाले थे।

भारतीय ज्ञानपरम्परा को पुनरावर्तित करने वाले सन्त कवियों ने हिन्दी साहित्य की नींव दी। ये निर्गुण सम्प्रदाय के थे। इस सम्प्रदाय के प्रेमगीत लिखने वाले लोकप्रिय कवियों ने सूफी साहित्य को जनप्रिय बनाने के लिए घरों की कहानियाँ घरेलू बोली में प्रस्तुत कीं। दोनों ही धाराओं ने गाजीपुर का सिंचन किया और यहाँ के साहित्योद्यान को पल्लवित –पुष्पित किया। रीतिकाल का विलासवासित वायुमण्डल इस जिले की मनःस्थिति के अनुकूल न था। अतः रीतिकालीन दरबारी साहित्य की कोई सरणी नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिलक्षित होती। भारतेन्दुकाल में पुनः गाजीपुर जनपद ने अँगडाई ली और श्री **गोवर्धन मिश्र** के सवैया की धूम मच गयी। इनके सवैयों का एक संग्रह प्रकाशित भी हुआ। इसी समय तक भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने हिन्दी साहित्य में एक नया मोड़ उपस्थित कर दिया था। प्रत्येक क्षेत्र में नवीन कला, नवीन भावना और नवीन दृष्टिकोण के दर्शन हुए। भारतेन्दु (सन् १८५०-१८८३ई०) ने हिन्दी साहित्य को जो प्रगति दी उसके प्रभाव से गाजीपुर अछूता न रहा।

इसी समय गाजीपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार और कवियों के कद्रदान **मुंशी उदित नारायण लाल** का प्रसिद्ध उपन्यास 'दीपनिर्वाण' प्रकाशित हुआ। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस कृति का महत्त्व नींव के पत्थर के समान है। हिन्दी में गद्य की परम्परा की महत्त्वपूर्ण कड़ी बाबू **गोपालराम गहमरी** से प्रारम्भ होती है। गहमरी जी में साहित्य के सभी जीवन्त तत्त्व निहित थे। साहित्य की नयी दिशा के आप सफल सारथी थे।

बाबू गोपालराम गहमरी (१८६६-१९४६) ने न केवल जासूसी उपन्यासों के ढेर लगा दिये, अपितु सामाजिक उपन्यास, अनुवाद, कहानी, नाटक और पत्रकारिता आदि विविध दिशाओं में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सर्वप्रथम हम उन्हें नाटककार के रूप में जानते हैं। उनका देशदशा नामक नाटक १८९२ में प्रकाशित हुआ। बंग साहित्य के प्रसिद्ध नाटकों का उन्होंने सफल अनुवाद किया। टैगोर के 'चित्रांगदा' और 'बनबीर' आदि नाटकों का अनुवाद सफल रहा। दूसरे, हम गहमरी जी को एक निबन्धकार और पत्रकार के रूप में जानते हैं। उनका पत्र 'जासूस' प्रसिद्ध है। आपका सबसे चटकीला साहित्यिक रूप उपन्यासों में उभर कर आया। उनके दो प्रसिद्ध उपन्यास 'बड़ा भाई' और 'सास - पतोहू' का रचनाकाल सन् १८९८ ईस्वी है। मौलिक और अनूदित कुल मिलाकर आपने ७० पुस्तकें लिखीं। कृतियों में प्रधानता जासूसी उपन्यासों की है। इसीलिए एक इतिहासकार के शब्दों में आप 'हिन्दी साहित्य के राबर्ट ब्लैक हैं।' जासूसी उपन्यासों के अतिरिक्त आप ने सामाजिक उपन्यास भी कई लिखे हैं। इनमें गृहस्थ जीवन की मधुर झाँकी देखने को मिलती है। आपके कुछ प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम हैं- 'अद्भुत लाश', 'गुप्तचर', 'मायाविनी', 'खूनी कौन?', 'जासूस की चोरी', 'भोजपुर की ठगी', 'गुप्तभेद' और 'किले में खून'। उपन्यासों के साथ-साथ आपने कुछ कहानियाँ भी लिखीं।

श्री गोपालराम गहमरी के छोटे भाई श्री **महावीरप्रसाद गहमरी** भी अनुभवी पत्रकार एवं सुलेखक थे। आजीवन 'आज' की सेवा करने के अतिरिक्त आपने स्वतंत्र दैनिक पत्र भी निकाले थे। आपने दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं, अनुवादकार्य भी काफी किया है। जीवन भर अपने आदर्शों एवं सिद्धान्तों पर अटल रहे। गहमर के होते हुए भी आपका कार्यक्षेत्र काशी ही रहा ।

गद्यसाहित्य के प्रसार में, इसके द्वितीय उत्थानकाल में गहमरी जी ने जो योगदान किया उसके लिए वे हिंदीसाहित्य में आदर के साथ स्मरण किये जाते हैं। स्वर्गीय गहमरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी का परिवार भी साहित्यिक परिवार रहा है। श्री **माताप्रसाद गहमरी** सफल लेखक रहे हैं। आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और श्री **देवताप्रसाद गहमरी** पत्रकार रहे हैं।

खड़ी बोली के कवियों में **रामचरित उपाध्याय** का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपका जन्म सन् १८७२ में गाजीपुर जिले में हुआ। आपका कविता –काल भारतेन्दुकाल के अन्त और द्विवेदीकाल के प्रारम्भ में पड़ता है। प्रारम्भ में आपकी रचनाएँ 'सरस्वती' में प्रकाशित होती रहीं। आपने खड़ी बोली में कविता लिखने का पथ प्रशस्त किया। खड़ी बोली व्रजभाषा की व्यापकता के बीच अपना रास्ता बना रही थी। उपाध्याय जी जैसे भक्त – भावुक कवि की लेखनी का उसे वरदान मिला। संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान् होते हुए भी अपनी खड़ीबोली की कविता को आपने मोहक सारल्य के साँचे में ढालकर सुबोध और सरस बना दिया है। 'व्रज सतसई', 'उपदेशरत्न माला', 'रामचन्द्रिका', 'सूक्ति मुक्तावली' और 'रामचरित चिंतामणि' आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। आपकी निधन तिथि १२ नवम्बर सन् १९३८ है। कवि **माधव शुक्ल** आप के ही समकालीन थे और राष्ट्रीय धारा के कवि थे।

आधुनिक काल में कविता, अध्यात्म, निबन्ध, इतिहास और पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने वाले अनेक विद्वान् गाजीपुर में पैदा हुए। **स्वामी सहजानन्द सरस्वती, श्री भागवत मिश्र, बाबू वीरेश्वरनाथ राय** वकील और पण्डित **रामगोविन्द शास्त्री** अपने युग के ये चार महारथी गाजीपुर की ख्याति के आधारस्तम्भ थे।

श्री भागवत मिश्र (ग्राम नवली-जन्म सं. १९५०)गाजीपुर के सरकारी वकील थे। वकालत के साथ उच्च कोटि के कवित्व का मिलाप मिश्र जी में अद्‌भुत रूप में दिखाई पड़ता है। वास्तव में आप आधुनिक काल में इस जिले की साहित्यिक प्रगति के अग्रणी थे। संस्कृत भाषा का आपने गम्भीर अध्ययन किया था, जो आपके द्वारा किये गये उपनिषदों के अनुवाद से स्पष्ट है। आपकी दर्जनों काव्यपुस्तकों में 'बापू', 'वरदान' और 'द्रौपदी क्षमा' प्रसिद्ध हैं।आपके गीत बहुत सुन्दर बन पाये हैं। आपकी कुछ और प्रकाशित पुस्तकों में 'करबला' , 'मैं प्यार चाहता हूँ', और 'आमंत्रण' है। आपकी पाँच पुस्तकें अप्रकाशित हैं।

भारतवर्ष के प्रसिद्ध जुझारू किसाननेता, लेखक, वक्ता और दार्शनिक विद्वान् **स्वामी सहजानन्द सरस्वती** (१८८९-१९५०) को पैदा करने का श्रेय भी गाजीपुर को ही है। स्वामी जी का जन्मस्थान देवा है। आपकी गहन विद्वत्ता और सुलझी हुई तथ्यनिरूपण की शैली का लोहा सभी मान चुके हैं। यों तो आपने 'कर्मकलाप' 'ब्रह्मर्षिवंश विस्तर', 'किसान क्या करें ' आदि कई ग्रन्थों का प्रणयन किया, परन्तु आपकी अमर और अद्वितीय कृति 'गीताहृदय' है। 'गीताहृदय' गीता पर बृहत् भाष्य है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और किताब महल से प्रकाशित है। अब तक गीता पर जितने भी भाष्य लिखे गये सबमें आध्यात्मिक दृष्टिकोण का प्राधान्य रहा। स्वामी जी ने इस ग्रन्थ में मार्क्सवाद से गीतादर्शन का समन्वय कर भौतिकवाद को एक सुन्दर युगोपयोगी पृष्ठभूमि दी है। यह सब हुआ है निरा खींचतान कर नहीं, अपितु साधार, सानुबन्ध और सुसंस्कृत विवेचन के द्वारा। स्वामी जी ने गीतामृत को आकाशमण्डल से उतार कर धरती पर लाने का प्रयत्न किया है। जिज्ञासुओं में यह पुस्तक पर्याप्त समादृत हुई है। 'गीताहृदय' स्वामी जी की महान् देन है। स्वामी जी की अन्य पुस्तकों में 'मेरा जीवन संघर्ष', किसान सभा के संस्मरण', 'क्रान्ति और संयुक्त मोर्चा','खेत मजदूर','झारखण्ड के किसान', 'किसान कैसे लड़ते हैं', 'ब्राह्मण समाज की स्थिति','झूठा भय और मिथ्या अभिमान','अब क्या हो', 'भूमिव्यवस्था कैसी हो', 'अदर साइड आफ द शील्ड', और 'रेन्ट डिडक्शन इन बिहार : हाऊ इट् वर्क्स' आदि कुल २३ संख्या में हैं।

श्री वीरेश्वरनाथ राय गाजीपुर के एक सफल वकील थे, परन्तु मूलतः आपमें एक महान् साहित्यिक व्यक्तित्व निहित था। आपने 'उत्तर रामचरित' और 'रघुवंश' आदि कई संस्कृत ग्रन्थों का सफल अनुवाद मनोहर छंदों में किया है। इतिहास में आपकी विशेष रुचि थी और इस विषय के अनेक निबन्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। अशोक पर आपका अध्ययन बहुत विशाल था। आपकी कई छोटी-मोटी रचनाएँ अप्रकाशित हैं। आप सन् १९३२ से लेकर सन् ३६ तक जिलापरिषद् ,गाजीपुर (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) के चेयरमैन रहे। सत्तर वर्ष की अवस्था में १० जनवरी सन् १९५७ ई. को आपका गाजीपुर में निधन हुआ।

पुरानी पीढ़ी के इन साहित्यकारों ने गाजीपुर की जनपदीय साहित्यिक चेतना को जगाने में जो कुछ भी योगदान किया उसकी चर्चा के बाद अब नये दौर की सृजनात्मकता के बारे में कुछ कहा जाना चाहिए। बात को पहले अपने से ही शुरू करूँ। मेरे लेखन में गाजीपुर का जनपदीय रसगंध कितना है, कैसा है, यह तो मेरे पाठक और आलोचक ही बता सकते हैं, मैं स्वयं इतना अवश्य कहने की स्थिति में हूँ कि वह जितना और जैसा है सब इसी जनपद का है। संप्रति गम्भीर और सार्थक लेख़न वाले सर्जकों का एक पूरा समुदाय है जो इस जनपद की मिट्टी से उठा है। यह पूरा समुदाय निश्चित रूप से बहुत यशस्वी है और साथ ही इसने गाजीपुर की जनपदीय चेतना को अपने रस से सींच कर बाहर भीतर से पुष्ट किया है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक काल

डॉ. भोलानाथ तिवारी (१९२३-१९८९) के सुपुत्र आयुष्मान् राजीव का विवाह दिसम्बर सन् १९८४ में सम्पन्न हुआ। प्रीतिभोज १३दिसम्बर को था। उसके लिए जो निमंत्रण पत्र आया उसे पढ़कर हमें आश्चर्य हुआ। वह 'सोस्ती श्री सर्व उपमा जोग लिखी' से शुरू होकर शुद्ध भोजपुरी में था और 'इस अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भाषाविद् की चित्तगत सात्त्विक जनपदीय सांस्कृतिक सहजता का सौ-सौ मुखों से बखान कर रहा था। ऐसी सहजता से भरे डॉ. तिवारी मूलतः कवि हैं। कविता, कहानी, उपन्यास, गद्यकाव्य, निबन्ध और समालोचना सम्बन्धी ढेर से प्रकाशित ग्रन्थ एक ओर तथा दूसरी ओर आपकी सम्पूर्ण उपलब्धिमूलक पहचान के रूप में भाषाविज्ञान, ध्वनिविज्ञान, कोषविज्ञान, शैलीविज्ञान, अभिव्यक्तिविज्ञान, अनुवादविज्ञान, शब्दविज्ञान, भाषाशिक्षण-विज्ञान और अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान आदि विषयों के ग्रन्थ दूसरी ओर । कुल ग्रन्थों की संख्या एक सौ से ऊपर है। हिन्दी भाषा और भाषाविज्ञान पर एक-एक दर्जन पुस्तकें हैं। आपके कोषग्रन्थों की संख्या डेढ़ दर्जन है। सन् १९६२ में जबकि आप ताशकंद में हिन्दी के विजिटिंग प्रोफेसर थे, सोवियत संघ में आपने ताजुज्बेकी नामक हिन्दी की एक भूली बिसरी बोली को खोज निकाला। 'पर हार नहीं मानी' नामक आपके आत्मकथात्मक ललितनिबन्धों के संकलन में आपके साथ-साथ आपके जनपद गाजीपुर की तत्कालीन जीवनधारा के प्रेरक छींटे बिखरे हैं। 'भाषाविज्ञान', 'हिन्दीभाषा' और 'भाषाविज्ञान कोश' आदि भाषाविज्ञान से सम्बन्धित पुस्तकों के अतिरिक्त आपकी अन्य पुस्तकों के नाम हैं, 'कवि प्रसाद', 'स्वर पाषाणशिला के' (काव्य) और 'हिन्दी नीतिकाव्य' (शोधग्रंथ)। आप भाषाविज्ञान और कोशविज्ञान के शीर्षस्थ हिन्दी विद्वानों में से एक हैं। आप को ढेर सारे राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

कुबेरनाथ राय (१९३३-१९९६) ने हिन्दी ललितनिबन्ध क्षेत्र में अपनी विशिष्ट मानक पहचान बनायी है। भारतीय संस्कृति के साथ-साथ जनपदीय लोकसंस्कृति आप के ललित निबन्धों में विस्तार और गहराई के साथ उभरी है। वे हिन्दी निबन्ध के शिखर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हैं। प्रिया नीलकण्ठी (१९६९ ई.) से लेकर 'चिन्मय भारत' (१९९६) तक उनकी कुल १८ रचनायें प्रकाशित हैं। 'रस आखेटक', 'गन्धमादन', 'निषाद बाँसुरी', 'विषाद योग', 'पर्णमुकुट', 'मनपवन की नौका', 'मराल', 'उत्तरकुरु', 'कामधेनु', 'अन्धकार में अग्निशिखा' , और 'वाणी का क्षीरसागर ' उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। 'प्रिया नीलकण्ठी' में जनपद गाजीपुर का जो सांस्कृतिक स्पर्श उभरा वह 'निषाद बाँसुरी' में चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। भारत के सांस्कृतिक इतिहास को पचाकर भिन्न भिन्न धर्मों, उपासनाप्रक्रियाओं, जातियों के उत्कर्ष-अपकर्ष और धर्मसाधनाओं आदि की चित्रलिपि उनके साहित्य में मिल जाती है। काव्य, इतिहास, पुराण, दर्शन, धर्मशास्त्र और संस्कृत साहित्य के गंभीर अध्ययन की छाप छोड़ते कुबेरनाथ राय के गंभीर तथा शुद्ध साहित्यिक स्वाद वाले निबन्ध हिन्दी निबन्धसाहित्य की अनमोल निधि हैं। वे गाजीपुर के मतसा गाँव के निवासी थे। उन्हें रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार (उ. प्र. हिन्दी संस्थान) से लेकर मूर्तिदेवी पुरस्कार (भारतीय ज्ञानपीठ) तक एक दर्जन से ऊपर पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हैं। आप की अन्य रचानाओं में 'महाकवि की तर्जनी', 'किरात नदी में चन्द्रमधु', 'पत्र मणिपुतुल के नाम', 'दृष्टि अभिसार', 'त्रेता का बृहत्साम' और 'कन्था मणि' (काव्य) प्रसिद्ध हैं।

कुबेरनाथ राय ने जहाँ जनपदीय चेतना को व्यापक राष्ट्रीय स्वर देकर अपने निबन्धों में अभिव्यक्ति दी वहीं **डॉ. राही मासूम रजा** (१९२७- १९९२ ई०) ने उसे नयी रंगत के साथ कथारस में ढाल कर प्रस्तुत किया। हिन्दी कथासाहित्य में आंचलिकता का सघन प्रयोग करते हुए लेखक ने एक साहसपूर्ण सृजनात्मक कदम उठाया। उन्होंने गाजीपुर के अपने ही गाँव गंगौली के इतिहास -भूगोल को अपनी कृति 'आधा गाँव' की पृष्ठभूमि में उतार कर बहुत ख्याति अर्जित की। स्वाधीनता के साथ साथ आयी निराशाजनक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गिरावट को बहुत क्षोभ के साथ लेखक ने प्रस्तुत किया है। 'टोपी शुक्ला', 'ओस की बूँद', 'कटरा बी आरजू', 'असन्तोष के दिन', 'हिम्मत जौनपुरी', 'सीन', 'गर्दिश के दिन', 'दिल एक सादा कागज', 'छोटे आदमी की बड़ी कहानी' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। राही प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख कथाकार हैं। वे बम्बई में रहकर चलचित्र और दूरदर्शन से जुड़े रहे। प्रसिद्ध धारावाहिक 'महाभारत' आदि के पटकथा -लेखक के रूप में उनका नाम अमर हो गया। डॉ. राही के नाम पर गाजीपुर में विकास निगम (ददरीघाट) में 'राही मेमोरियल हाल' और मछरहट्टा में 'राही साहित्यिक संस्थान' कार्यरत हैं।

महाकवि **श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'** (१९०९ई०) गाजीपुर के साहित्यिक युग-पुरुष हैं । इन्हें कवियों के काव्यगुरु की उपाधि मिली है। आपके प्रोत्साहन से इस जनपद में अनेक लोग साहित्यक्षेत्र में आये और कीर्ति अर्जित की। आप के महाकाव्य का नाम 'सत्यासत्य' है। इस महाकाव्य में युगीन स्थिति के परिप्रेक्ष्य में वैचारिक संघात का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रण है। आपकी आरम्भिक काव्यकृतियों के नाम हैं 'युवक', 'हिमांशु' और 'पथदीप'। इनमें राष्ट्रीयता के स्वर की प्रमुखता और प्रखर चिन्तन मिलता है। एक लम्बे अन्तराल के बाद आठवें दशक में आपकी काव्यप्रतिभा ने उछाल लिया और आपने हिन्दी-उर्दू की लगभग एक दर्जन काव्य-पुस्तकों की रचना कर डाली। इन्हीं में जापानी कवि नगूची के एक ग्रन्थ का हिन्दी काव्यानुवाद 'गंगा मुझे पुकारे' भी है। आपने 'लोक सेवक'(सन् १९४९ से आरंभ) नामक एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया। यह पत्र लगभग दो दशकों तक गाजीपुर की प्रतिभा का प्रतीक बना रहा। 'हृदयेश' जी गाजीपुर के गौसपुर गाँव की विभूति हैं। आपकी अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम हैं- 'महाप्रकाश','नवद्वीप', अमृत भर गया', शंखपुष्प', 'संजीवनी' और 'भोजपुरी सतसई'। आपके उर्दू गजलों के संकलन का नाम 'बदगुमानी का मौसम' है। आपकी कुछ पुस्तकें अंग्रेजी और संस्कृत के प्रसिद्ध काव्यग्रन्थों के भावानुवाद हैं। आपका निधन सन् १९९९ में हुआ। अपने जीवनकाल में आप अपने आप में एक जीवन्त साहित्यक वातावरण थे। कई वर्षों तक इलाहाबाद की साहित्यगोष्ठी 'परिमल' की एक शाखा आपके संरक्षण में चलती रही। उस गोष्ठी के सूत्रधार एक साहिति-प्रेमी उच्चाधिकारी थे जो इलाहाबाद से स्थानान्तरित होकर यहाँ आये थे। उसमें तत्कालीन सूचनाधिकारी श्रीरामेश्वर नाथ ओझा का भरपूर योगदान था। ओझा जी बहुत उत्साही और साहित्यिक कार्यक्रमों के लिए समर्पित अधिकारी थे।

डॉ. शुकदेव सिंह (सन् १९३३ ई०) का पैतृक गाँव और जन्मस्थान गाजीपुर जनपद का जीवपुर गाँव है। आप सन्तसाहित्य के अन्वेषी के रूप में देश-विदेश में प्रसिद्ध हैं। कबीर, रैदास, रामानन्द और कीनाराम आदि सन्तों पर आपकी विशेषज्ञता ने इंग्लैंड, अमेरिका, जापान,जर्मनी, रूस , इटली, बेल्जियम और मैक्सिको आदि देशों को बहुत प्रभावित किया है। भारतीय सन्तों पर भारत के बाहर अपेक्षाकृत नयी वैज्ञानिक पद्धति पर आपने प्रकाश डाला है। अपनी विदेशयात्राओं द्वारा, कबीर और रैदास पर बनाई फिल्मों और सीरियलों द्वारा, संतसाहित्य और पंथविज्ञान पर प्रस्तुत शोधग्रन्थों द्वारा तथा विविध शोधपत्रों और व्याख्यानों द्वारा आपने समर्पित भाव से उक्त कार्य को सम्पन्न किया है। आपको सर्वप्रथम 'कबीर बीजक' के विदेशी अनुवाद से ख्याति मिली। इसके बाद 'रैदास रचनावली' और 'कबीर पंथ की भगताही शाखा' आदि पुस्तकें सामने आयीं और आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य से सम्बन्धित कुछ समीक्षापुस्तकें प्रकाशित हुईं। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से जुड़े रहे और प्राचीन हिन्दी साहित्य के प्रोफेसर के रूप में अवकाश ग्रहण किया। आपके आठ वर्षों के घोर सम्पादनश्रम के फलस्वरूप 'रैदास बानी' नामक ग्रन्थ सन् २००२ में प्रकाशित हुआ है। इसके पूर्व यह पूरा ग्रन्थ रैदास स्मारक (वाराणसी) पर प्रस्तरखण्डों पर उत्कीर्ण हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

है। इस स्मारक के आप डायरेक्टर हैं। उक्त वर्ष में आपके सम्पादन में प्रस्तुत 'बीजक आफ कबीर'(आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रकाशन) का छठा संस्करण विश्व के बाइस देशों में एक साथ वितरित हुआ है। आपकी रचनाओं के नाम हैं– 'भोजपुरी और हिन्दी','धूमिल की कविताएँ' और 'कहानी पर पहली किताब'।

डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक (१९३६ ई०) ने हिन्दीकाव्य और समीक्षा क्षेत्र में ख्याति अर्जित की है। गाजीपुर जनपद और नगर के साहित्यिक परिवेश को पाठक जी ने (सन् १९६० के बाद) सबसे अधिक प्रभावित -प्रेरित किया है। आप में हिन्दी साहित्य की गहन और परिपक्व समझ है। आपकी प्रथम काव्यकृति 'बापू' (१९४८) है। इसके पश्चात् 'अपनी हत्या के पूर्व', 'सूर्य के सामने', 'सागर मन', 'भाषाहीनता के बावजुद', 'एक नयी शताब्दी की ओर', 'रोशनी के इर्दगिर्द ' ,'नदी के भीतर', 'उसे करीब से देखा है', 'यह यात्रा अविराम चलेगी', 'सूर्य के सामने' आदि एक दर्जन से ऊपर काव्यसंकलन प्रकाशित हुए। प्रेमचन्द , प्रसाद, अज्ञेय और वृन्दावनलाल वर्मा से सम्बन्धित आपकी चार समीक्षापुस्तकें तथा दो कहानीसंग्रह भी प्रकाशित हैं। नयी कविता, नवगीत तथा समकालीन काव्य आन्दोलन से आप जुड़े रहे। आपका कार्यक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर रहा जहाँ से हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से आपने अवकाश ग्रहण किया। शोध-समीक्षा क्षेत्र में आपने प्रमुख रूप से मुक्तक काव्य पर कार्य किया है जो बहुत विस्तृत, गंभीर और मौलिक है तथा कई भागों में प्रकाशित है। राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना और लोकजीवन का स्वर आपकी कविताओं में मुखरित मिलता है। आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पुरस्कारों के साथ अन्य अनेक पुरस्कार- सम्मान मिल चुके हैं। आपकी काव्यकृतियों के मूल्यांकन से सम्बद्ध एक विशालकाय ग्रन्थ 'सृजन-समर्पण की उत्तर शती' सन् २००२ में प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन डॉ. रामचन्द्र तिवारी, डॉ. श्रीनिवास पाण्डेय और डॉ. वेदप्रकाश 'अभिताभ' ने किया। इस ग्रन्थ में साठ से ऊपर हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के मूल्यांकनपरक निबन्ध और समीक्षात्मक लेख हैं। इसी के साथ डॉ. पाठक की प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन 'समय के समान्तर' भी प्रकाशित हुआ। सातवे-आठवें दशक में आप 'सर्जना' नामक साहित्यिक गोष्ठी का संचालन-संयोजन नियमित रूप से करते रहे और इससे एक गंभीर साहित्यिक परिवेश बना था। साहित्य-सेवा के साथ-साथ अवकाशप्राप्ति के बाद आप लोकभारती शिक्षण संस्थान, रवीन्द्रपुरी के द्वारा समाजसेवा में भी लगे हुए हैं।

डॉ. नित्यानन्द तिवारी (सन् १९३८) (प्रोफेसर हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) उच्च कोटि के समीक्षक और गंभीर विषयों के लेखक हैं। 'मध्ययुगीन रोमांचक आख्यान', 'आधुनिक हिन्दी साहित्य और इतिहासबोध', 'सृजनशीलता का संकट', 'साहित्य का स्वरूप' तथा 'हिन्दी उपन्यास और रचनाकार रामदरश मिश्र' आपक की प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। आपने कई ग्रन्थों का सम्पादन किया है। गाजीपुर के ताजपुर डेहमा नामक गाँव में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९३८ में आपका जन्म हुआ। समीक्षक और शोधकर्ता के अतिरिक्त आप कवि भी हैं और नयी कविता आन्दोलन से जुड़े रह कर इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था 'परिमल' के दो वर्षों तक संयोजक भी रहे। आप भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार की भाषा समिति (हिन्दी), हिन्दी अकादमी दिल्ली, साहित्य अकादमी दिल्ली और सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट आफ इंडियन लंगवेजेज मैसूर के सदस्य रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त आप हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के चेयरमैन भी रहे (१९९६-१९९८)।

प्रतिष्ठित कथालेखिका **प्रतिमा वर्मा** (१९३९) का जन्म पटना में हुआ और वे वाराणसी निवासिनी हैं परन्तु उनका पैतृक गाँव गाजीपुर में यूसुफपुर के आस-पास है। आप के उपन्यासों के नाम हैं 'जिन्दगी एक घूँट', 'अपने बेगाने', 'उन शाखों पर', 'गलियाँ -गलियारे', 'सुबह होती है शाम होती है','उसका आकाश' और 'अरण्य काण्ड'। कहानीसंग्रहों के नाम हैं- 'एक सुबह और', 'बँधे पाँवों का सफर'तथा 'धूप धूप साया साया'। आप का एक काव्यसंग्रह 'कागज का अनुबंध' नाम से प्रकाशित है। आपका वर्तमान आवास वाराणसी में है।

डॉ. मान्धाता राय (१९४६-ग्राम सुखडेहरा) प्राचार्य स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय ,गाजीपुर के दो गंभीर शोधप्रबन्ध 'सूरसागर और प्राकृत अपभ्रंश का कृष्ण साहित्य' (पी-एच.डी.) तथा 'सूरसागर में लोकतत्त्व' (डी.लिट्.) प्रकाशित हैं। 'प्राचीन काल के प्रतिनिधि कवि' नामक आपका एक समीक्षाग्रन्थ है। आपने आधा दर्जन से ऊपर ग्रन्थों का सम्पादन किया है जिनमें से एक का नाम 'कुबेरनाथ राय के प्रतिनिधि निबन्ध' है। अपनी विद्यालय पत्रिका 'निवेदिता' का सन् ९७ में बृहदाकार 'कुबेरनाथ राय विशेषांक', प्रकाशित कर आपने ख्याति अर्जित की। इसमें साठ से ऊपर हिन्दी के चोटी के विद्वानों के आलेख प्रकाशित हैं, जो कुबेरनाथ राय से सम्बन्धित विविध पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। डॉ. मान्धाता राय की अन्य पुस्तकों में से 'सूर पदावली', 'पद्मावत' और 'सिद्धेश्वरप्रसाद सिंह स्मृतिग्रन्थ' प्रमुख हैं। हिन्दी की उच्च कोटि की पत्रिकाओं में आपकी समीक्षाएँ प्रकाशित हैं। आप अपने विद्यालय में स्तरीय साहित्यिक कार्यक्रमों को आयोजित करते रहते हैं।

१६अगस्त ४७ को गाजीपुर के यूसुफपुर टँड़वा गाँव में जनमे **डॉ. रामअवध शास्त्री** पत्रकार, अध्यापक और प्रतिष्ठित साहित्यसेवी हैं। निबन्ध और ललितनिबन्ध क्षेत्र में इनका ध्यानाकर्षक अवदान है। इस विषय की रचनाओं में 'चिन्तन के आयाम', 'डायरी के उड़ते पृष्ठ', 'सन्दर्भ और समीक्षा', 'बूझत श्याम कौन तू गोरी', 'कास के फूल' और 'ललित प्रवाह' प्रसिद्ध हैं। आपकी समीक्षात्मक पुस्तकों के नाम हैं- -'कामायनी सर्वेक्षण', 'निराला : व्यक्ति और कवि', 'सरदार पूर्णसिंह' तथा 'हिन्दी उपन्यास और शिल्प' तथा 'अमृतलाल नागर'। आपकी कुछ अन्य पुस्तकों के नाम इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकार हैं। 'धरती की आस' (नाटक), 'बिखरी यादें' (संस्मरण और रेखाचित्र)तथा 'राजकुमार और भालू' (बालसाहित्य)। आपने अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया है जिनमें जायसी ग्रन्थावली और सरदार पूर्णसिंह निबन्धावली हैं। आपका कार्यक्षेत्र अमरोहास्थित जे.एस.हिन्दू कालेज है जिसमें हिन्दी विभागाध्यक्ष और शोधनिदेशक हैं। आपको हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश के कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

डॉ. शिवमंगल राय (डेढ़गाँवा-१९२९-१९९१) की बहुप्रशंसित मौलिक और शोधपरक कृति का नाम है 'ईस्ट इंडिया कम्पनी की हिन्दीनीति'। ये इतिहासज्ञ और नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपकी शेष कृतियाँ हैं 'आलोक स्तम्भ'और कथा सप्तपर्णी (एकांकी नाटक) तथा 'गाजीपुर का इतिहास'। आप का कार्यक्षेत्र कलकत्ता रहा। एक पुस्तक 'हिन्दी के विकास में कलकत्ता का योगदान' नामक भी है। आधे दर्जन साहित्यिक ग्रन्थों का आपने सम्पादन किया है। कलकत्ते की ऋतम्भरा नामक साहित्यिक संस्था के आप संचालक थे।

डॉ. अंजनी कुमार दूबे 'भावुक' (१९५९ ई., यूसुफपुर खड़वा, गाजीपुर) नेहरू कालेज पैलापुल, कछार (असम) में हिन्दी-प्रवक्ता हैं। आप कवि, कथाकार, नाटककार,समीक्षक, पत्रकार और फिल्मों के पटकथा लेखक हैं। आप द्वारा कुल रचित पुस्तकों की संख्या बीस के ऊपर है– 'गीत-अगीत', 'बूढ़ी माँ', 'दो वीर'(काव्य), 'मार्क्स का जूता', 'गँजेड़ी यार'(कहानी), 'गणिका और माला', 'त्रिपथगा' (उपन्यास) ,'दंगा', 'तराइन का अंतिम संघर्ष'(नाटक) और 'हिन्दीकविता का परिवेश'। 'इतिहास और आज की समस्याएँ' तथा 'महाकवि तुलसी' आप की दो अन्य कृतियाँ हैं। आप की कहानी और लघुकहानियों की पुस्तकें भी प्रकाशनाधीन हैं।

डॉ. महेन्द्रनाथ राय (रेवतीपुर- सन् १९५०) हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। आप अनेक समीक्षात्मक ग्रन्थों के लेखक हैं जिनमें प्रमुख हैं, 'नवजागरण और छायावाद', 'भारतीय नवोत्थान और निराला' तथा 'छायावादी कवितायें'। आपको साहित्य-सेवा के लिए उत्तर प्रदेश राज्य सरकार से पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

डॉ. रामकुँवर राय (ग्राम डोरा- जन्म १९४५) महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। आपके प्रकाशित शोधप्रबन्ध का नाम है, 'चिन्तामणि, कुलपति और श्रीपति का तुलनात्मक अनुशीलन' (हिन्दी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में)। इसके अतिरिक्त 'विद्यापति का वाग्वैभव' और 'भोलाशंकर व्यास' नामक आपकी दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। निबन्धों का संकलन प्रकाश्य है। कासगंज तुलसी संस्थान की ओर से आपको विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

अवधेश प्रीत (१९५८ ई. ग्राम –तराँव में जन्म) मूलतः पत्रकार हैं और कार्यक्षेत्र बिहार है। आपके दो कहानीसंग्रह 'हस्तक्षेप' और 'नृशंस' प्रकाशित हैं। 'नृशंस' पर आपको सन् २००२ का 'विजय वर्मा कथासम्मान' प्राप्त हो चुका है। पटना में आपकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कई कहानियों का सफल मंचन भी हो चुका है। आप मार्क्सवादी मंच के कथाकार हैं। उक्त तराँव गाँव के एक और पत्रकार और साहित्यकार हैं बालेश्वर दीप आपका का भी कार्य क्षेत्र बिहार है। विशेष कर पटना और राँची में रह कर आप विविध राष्ट्रीय पत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। साहित्यकार के रूप में आप का प्रमुख क्षेत्र कहानी है और एक कहानीसंग्रह प्रकाशित है। इस गाँव के तीसरे पत्रकार **विजय शंकर पंकज** हैं जिनका कार्यक्षेत्र लखनऊ है। ये निबन्धलेखक हैं और एक संकलन 'आधार भूमि' प्रकाशित है।

डॉ. कमलाशंकर त्रिपाठी (देवरिया-गाजीपुर- १९४६) आपने समीक्षा और भाषाविज्ञान के क्षेत्र में कार्य किया है। 'हिन्दी भाषा, व्याकरण और लिपि', 'हिन्दी भाषा' और 'सामान्य हिन्दी' नामक आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप का कार्यक्षेत्र लखनऊ है।

डॉ. अवधेश प्रधान (१९५४)काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्यापनरत रहकर हिन्दी साहित्य की गंभीर सेवा में समर्पित हैं। आप जनवादी सोच के प्रखर चिन्तक, बुद्धिजीवी और वक्ता हैं। आपने सहजानन्द सरस्वती रचनावली का सम्पादन किया है। आपकी प्रकाशित पुस्तकों के नाम हैं, 'हिन्दी साहित्य में इतिहास की समस्यायें', 'कीर्तिलता और विद्यापति का युग', 'साहित्य और समय', 'काल और अर्थबोध'। आप गाजीपुर जनपद के प्रसिद्ध गाँव सुल्तानपुर की विभूति हैं। वीरपुर गाँव के **श्यामविहारी राय** दिल्ली स्थित ग्रन्थशिल्पी इंडिया लिमिटेड के प्रकाशक के रूप में हिन्दी की बहुआयामी सेवा में संलग्न हैं। आप के कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हैं।

डॉ. तुलसीनारायण सिंह (गहमर) अंग्रेजी और हिन्दी साहित्य के गंभीर विद्वान् हैं। विशेष कर उक्त भाषाओं के उपन्यास साहित्य का इन्होंने गहराई से अध्ययन किया है। अंग्रेजी उपन्यास की विषयवस्तु से सम्बन्धित इनका शोधप्रबन्ध प्रशंसनीय है।

करीमुद्दीनपुर के अवकाश प्राप्त महाविद्यालय-प्राध्यापक **डॉ. कुबेरनाथ राय** (१९३८ई.) की दो पुस्तकें 'रीतिकालीन काव्यशास्त्र और पदुमनदास' तथा 'पदुमनदास की काव्यमंजरी' प्रकाशित हैं।

डॉ. कैलास मिश्र (४३-२००२) स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत रहते हुए दिवंगत हो गये। आपकी दो प्रकाशित पुस्तकें हैं 'हिन्दी कविताः तीन दशक' और 'सन्त कवि दर्शन'। 'सन्त कवि दर्शन' में मिश्र जी ने कबीर-रैदास से लेकर ओशो - कृष्णमूर्ति तक के दर्शन का मंथन कर गंभीर विश्लेषण किया है।

डॉ. श्यामविहारी राय (करीमुद्दीनपुर- १९४९ ई,) की दो पुस्तकें प्रकाश्य है 'श्यामधारा' (काव्य) और 'वीर कुँवर सिंह'।

डॉ. नर्मदेश्वर राय (जोगा मुसाहिब) का सन् १९७७ में प्रकाशित शोधप्रबन्ध 'हिन्दी शोकगीतः परम्परा और प्रतिफलन' है। इसके अतिरिक्त आप की रचना का नाम हैं 'कवाछ'(भोजपुरी उपन्यास, १९८३)। आपके कुछ भोजपुरी संस्मरण भी प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर हैं।

डॉ. सर्वजीत राय (१९४२ई०)का प्रकाशित शोधप्रबन्ध 'हिन्दी उपन्यास में आदर्शवाद' उल्लेखनीय है। डॉ. सर्वजीत राय ने 'लोक ऋण -बनगंगी मुक्त है: ग्रामजीवन का दस्तावेज' नामक पुस्तक का सम्पादन भी किया है। आपने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष पद से सन् २००१ में अवकाश ग्रहण किया है। आपका का पैतृक गाँव गुणउर है।

गाजीपुर के प्रसिद्ध गाँव गहमर में जनमे **पद्मश्री कपिलदेव द्विवेदी** (१९३३) संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। आप वेदविद् , भाषाविद् तथा प्राच्यविद्याविद् हैं। आपकी कुल संस्कृत ग्रंथरचनाओं की संख्या सत्तर से ऊपर है। आप संस्कृत व्याकरण, निबन्ध आदि के साथ महाकाव्यकार भी हैं। 'संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास' भी आपने लिखा है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य 'वेदामृतम्' है जो ४० भागों में प्रकाशित है। संस्कृत साहित्य और प्राच्यविद्या के प्रचारार्थ आप सन् १९७६-९३ के बीच इंगलैण्ड, जर्मनी, इटली, फ्रांस, अमेरिका, कनाडा, सूरीनाम, मारिशस, तंजानिया और केनिया आदि देशों की अनेक यात्रायें कर चुके हैं। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त आप जर्मन, फ्रेंच और रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं के जानकार हैं। भारत की मराठी, बंगला और उर्दू, भाषाओं का आपको ज्ञान है। आपको पद्मश्री सहित अनेकों सम्मान मिले हैं। विविध राजकीय सेवाओं से निवृत्त होकर सम्प्रति आप विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ,शांतिनिकेतन, ज्ञानपुर(भदोही) के निदेशक हैं और संस्कृत की सेवा कर रहे हैं। आपके पुत्र **डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी** (१९५६) में भी गंभीर साहित्यिक रुचि और सृजनात्मक प्रतिभा है। 'नाट्यशास्त्र में आंगिक अभिनय' आप की शोधपरक कृति है। आपने अपने पिता के साथ अनेक ग्रन्थों के लेखन और सम्पादन का कार्य किया है।

डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ (१९४७) ने हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में आठवें दशक से एक प्रखर समीक्षक के रूप में ख्याति अर्जित कर ली। समीक्षा के अतिरिक्त उनका क्षेत्र काव्य, व्यंग्य, कहानी और पत्रकारिता है। 'वसन्त के इन्तजार में' (काव्यसंग्रह) और 'दूसरी शहादत' (कहानीसंग्रह) दो सर्जनात्मक पुस्तकें हैं। आपके व्यंग्य प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं। वेदप्रकाश 'अमिताभ' का सबसे ध्यानाकर्षक कार्य हिन्दी कहानियों पर है। 'हिन्दीकहानी: अन्तर्यात्रा', 'हिन्दी कहानी के सौ वर्ष', 'नयी कहानी के प्रतिनिधि हस्ताक्षर' आदि इस विधा के अनेक सम्पादित ग्रंथ हैं। कहानी की भाँति उपन्यासों पर आपका कार्य 'हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष' में दृष्टिगोचर होता है। इसके अतिरिक्त एक गंभीर शोध -कार्य 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्यसंक्रमण' नाम से प्रकाशित है। आप की अन्य रचनाओं के नाम हैं : 'राजेन्द्र यादव की कथायात्रा', 'समकालीन काव्य की दिशायें' 'रामदरश मिश्र: रचना और समय' तथा 'अक्षर बीज की हरियाली'। इसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतिरिक्त समकालीन कवियों और कहानी लेखकों से सम्बन्धित आप के आधे दर्जन से ऊपर समीक्षात्मक ग्रंथ हैं। एक समीक्षक के रूप में आपका मूल्यांकन तथ्यपरक, वस्तुनिष्ठ,मौलिक चिन्तन से दीप्त और गहरी अन्तर्दृष्टि से अन्वेषित - विवेचित होता है। आप का कार्यक्षेत्र धर्मसमाज कालेज, अलीगढ़ का हिन्दी विभाग है। आपके द्वारा एक जनधर्मी त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'अभिनव प्रसंगवश' का सम्पादन -प्रकाशन होता है। इस पत्रिका ने समर्पित सृजनधर्मी जनों का एक विशाल प्रंसगवश परिवार बनाया है। आपको देश की विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और संस्थानों से बहुत सारे सम्मान-पुरस्कांर मिले हैं। आप गंगातट पर स्थित, गाजीपुर शहर के बीच जगन्नाथमंदिर घाट के निवासी हैं।

डॉ. गोपाल प्रधान (सुल्तानपुर-जन्म १९६४) शाहजहाँपुर जनपद के पुवायाँ स्थित महाविद्यालय में सेवारत हैं। आप की प्रकाशित कृति का नाम है 'छायावाद युगीन साहित्यिक वाद विवाद'। आपने रवीन्द्रनाथ ठाकुर, वर्जीनिया वुल्फ और बैटमोर आदि की अनेक महत्त्वपूर्ण कृतियों का हिन्दी में रूपान्तर किया है। आपके अनुज **अविनाश प्रधान** (एडवोकेट) पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

गाजीपुर जनपद के **डॉ. हीरालाल सिंह, डॉ.महातिम सिंह, डॉ. गोवर्धन राय शर्मा, डॉ. शिवशंकर राय, डॉ. बालेश्वर राय** और **डॉ. सूर्यनाथ पाण्डेय** आदि विद्वानों ने विविध क्षेत्रों में अपने गंभीर कृतित्व से राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त **डॉ. मुनीस रजा, प्रो. अम्बिका सिंह, डॉ. दयानन्द श्रीवास्तव** और **जगन्नाथ राय** की सेवायें भी अविस्मरणीय हैं। डॉ. दयानन्द श्रीवास्तव (विशुनपुर) कलकत्ता, विश्वविद्यालय की सेवा में रहते हुए हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए समर्पित रहे। हिन्दी साहित्य के इतिहास और हिन्दी व्याकरण पर कार्य करने के साथ ही आपने गाजीपुर की भोजपुरी का भाषावैज्ञानिक अध्ययन किया था। आपका निधन १९८७ में हुआ।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रगति के बढ़ते चरण

नये दौर में लोकभाषा और राष्ट्रभाषा दोनों में सृजनात्मक कार्य साथ-साथ चलता है और गाजीपुर जनपद की साहित्यिक चेतना पर्याप्त जगी हुई दृष्टिगोचर होती है। वह भोजपुरी के अमर कवि **भोलानाथ गहमरी** (सन् १९२३-२००१) के रूप में लोकचेतना बनकर अवतरित होती है। कवि गहमरी ने आजीवन लोकभाषा भोजपुरी को सँवारने में अपने को खपा दिया। इस अनुष्ठान के चलते उन्हें बहुत अधिक लोकप्रियता और ख्याति मिली। उनकी पुस्तकों के नाम हैं, 'बयार पुरवइया', 'अँजुरी भर मोती' और 'लोकरागिनी'। इन पुस्तकों के सभी गीतों में काव्यतत्त्व और लोकसंगीत तत्त्व का अद्भुत मिश्रण है और इसके फलस्वरूप ये गीत कवि के जीवनकाल में ही आकाशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से जन-जन तक पहुँच गये तथा कंठ-कंठ में बस गये। गहमरी के गीतों में जो सहजता, संवेदनशीलता, संप्रेषणीयता और सरसत्ता है वह लोकसंगीत में ढल कर बहुत ही मर्मस्पर्शी आस्वाद की स्थितियों को उत्पन्न करती है। उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार के अतिरिक्त अनेक पुरस्कार -सम्मान और उपाधियाँ प्राप्त हुईं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आप को 'साहित्य वारिधि' की तथा भोजपुरीपरिषद् , लखनऊ ने 'भोजपुरी शिरोमणि' की उपाधि दी। भोजपुरी अकादमी, पटना ने 'काव्यशास्त्री' की उपाधि दी। कुछ भोजपुरी फिल्मों में गीत लिख कर गहमरी जी ने अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाया है। भोजपुरी काव्य के अतिरिक्त आपकी हिन्दीपुस्तकों के नाम हैं 'मौलश्री' (काव्य),'लोहे की दीवार'(नाटक) और 'लम्बे हाथ' (नाटक)। आपकी रचनाओं में 'थाती' नामक एक भोजपुरी उपन्यास और 'परछाहीं' नामक एक प्रबन्ध काव्य भी कहा जाता है।

विन्ध्याचल राय 'अचल'(१९२४)बहुमुखी प्रतिभा के कवि हैं। ये हरिहरपुर के निवासी हैं। 'युगप्रदीप', 'सौभद्र' ,'गांगेय' और 'महतारी ममता क मूरत' (प्रबन्ध काव्य), 'विधाता की मूरतें ', 'क्रान्तिकारी कबीर', 'किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती', 'स्वाभिमान के सन्तरी', 'माया मिललि न राम', 'को बड़ छोट कहत अपराधू' और 'सुन्नर काका' (उपन्यास) उनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं। समाजसेवा के लिए आप ने हरिहरपुर, मुहम्मदाबाद में स्वामी सहजानन्द आश्रम की स्थापना की है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव में रहकर मौन भाव से रचनाधर्म का निर्वाह अचल जी की विशेषता है।

डॉ. इन्द्रदेव सिंह(१९४१) कवि, पत्रकार, शिक्षाविद् ,ललितनिबन्ध -लेखक, उपन्यासकार और सन्त -साहित्य -मर्मज्ञ मनीषी हैं। प्रमुख रूप से आप का कार्यक्षेत्र शिक्षा और समाज -सेवा रहा है। बावरी सन्त सम्प्रदाय के सन्त कवियों की नगरी भुड़कुड़ा में रहने के कारण आप के सहज सन्त व्यक्तित्व को निखार मिल गया। सन् २००१ में आप ने श्री महंथ रामाश्रयदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा (गाजीपुर) के प्राचार्य पद से अवकाश ग्रहण किया। आप की पुस्तकों के नाम हैं, 'आइने में भारत', 'पतझड़ और वसन्त', 'भुड़कुड़ा की सन्त परम्परा', 'उलटि देखो घट में ज्योति पसार', (उपन्यास) 'मारिशस जुलीबा', 'स्मृति शेष' और 'और कितनी दूर', (काव्य)। आप का जन्मस्थान पचोतर परगने का महमूदपुर गाँव है। अवकाशप्राप्ति के बाद आपने 'भुड़कुड़ा के निरगुनिया सन्तों और सिख धर्म के गुरुओं की बानियों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया है। अवकाश प्राप्ति के बाद सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र की बहुआयामी रचनात्मक सेवाओं में आपको सफलता मिली है।

डॉ. परमानन्द सिंह समीक्षक, पत्रकार, चिन्तक और राजनीतिक विषयों के गंभीर लेखक हैं। आपका जन्म मुहम्मदाबाद तहसील के वासुदेवपुर ग्राम में सन् १९४२ में हुआ। आपका प्रमुख कार्यक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर रहा जहाँ से आप ने अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष पद से सन् २००२ में अवकाश ग्रहण किया। अंग्रेजी भाषा के साहित्य और राजनीति के आपके अध्ययन का अवदान हिन्दी को मिला। आरंभ के तीन दशकों तक पुस्तक के प्रकाशन से निरपेक्ष रहकर अवकाशप्राप्ति के बाद आपने अपने सम्पूर्ण अध्ययन को तथा फुटकल रूप से सम्पन्न हुए विस्तृत लेखनकार्य को नियोजित कर आधे दर्जन से ऊपर गंभीर हिन्दीग्रन्थों के सृजन की योजना कार्यान्वित की है। इन ग्रन्थों के नाम हैं, 'दलित साहित्यः पुनर्मूल्यांकन की समस्या', 'कुबेरनाथ रायः एक मूल्यांकन', 'हिन्दीसमीक्षा के पाँच स्तम्भ', 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर का पुनर्मूल्यांकन' और 'मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र' आदि। आप की पत्रिका का नाम 'समकालीन सोच' है।

डॉ.श्रीप्रकाश शुक्ल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता हैं। आप आधुनिक सोच-सम्पन्न, संवेदनशील और महत्त्वाकांक्षी कवि, समीक्षक तथा कहानीकार के रूप में उभरे हैं। आप की काव्यकृति 'जहाँ सब शहर नहीं होता' २००१ ई. में प्रकाशित हुई। इसके पूर्व 'साठोत्तरी हिन्दी कविता में लोकसौन्दर्य' (समीक्षा) और 'अपनी तरह के लोग' (काव्य) दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप के कहानीसंग्रह का नाम है 'लोफर और अन्य कहानियाँ'। आप 'परिचय' नामक एक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन भी करते हैं।

कवि **रामवृक्ष राय 'विधुर'** (सन् ३७-१९८३ई.)ने खड़ी बोली और भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों में मार्मिक भावों की सृष्टि की है। आप मुहम्मदाबाद तहसील के मुँड़ेरा गाँव के निवासी थे और अल्पायु में ही इस दुनिया से चले गये। आप के भोजपुरी गीत काव्य 'झुरुकि बहे ना' (१९६१ ई.)की भूमिका डॉ. भोलानाथ तिवारी ने लिखी है। तथा डॉ. **जितेन्द्रनाथ पाठक** को समर्पित है। आपकी पुस्तकों के नाम 'रंगभूमि में दो राम', 'सीता स्वयंवर', 'खैरा पीपर कबहुँ न डोले', 'पिहकार' और 'झुरुकि बहे ना' हैं। बनदेव (खण्डकाव्य), 'हवा पानी' (काव्यसंग्रह) 'हम बालक गण वीर बनेंगे' और 'विधुर दोहावली' (भोजपुरी के कई सौ दोहे) अप्रकाशित हैं।

गाजीपुर के निवासी **डॉ. उमाशंकर तिवारी** (सन् १९४०) का सृजनात्मक क्षेत्र नवगीत है। आपकी प्रसिद्ध पुस्तक 'तोहफे काँच घर के' पर वर्ष १९९६ का 'डॉ. शम्भुनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार' मिल चुका है। आप के नवगीतों में विविध भाव - संवेदनाओं के साथ-साथ भारतीय अस्मिता का मूल स्वर मिलता है। उक्त नवगीत संकलन के अतिरिक्त 'जलते शहर में' और 'धूप कड़ी है' आपकी दो और कृतियाँ हैं। आपका शोधप्रबन्ध 'आधुनिक गीतिकाव्य' प्रकाशित है। नवगीत विधा से सम्बन्धित तीन ग्रन्थों का आपने सम्पादन किया है। नवगीतों के साथ-साथ आप को भी गजल विधा में ख्याति प्राप्त है। आपके गजलों के संकलन का नाम 'तथागत मुद्रा' है। आपका कार्यक्षेत्र मऊ रहा जहाँ के स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद आपने गाजीपुर में रहकर स्वतंत्र लेखन का कार्य आरम्भ किया।

डॉ. शिवमूरत सिंह (१९३६ ई.) का क्षेत्र रंगमंच है। वे नाटककार,रंगधर्मी पत्रकार, निर्देशक और अभिनेता के रूप में अपनी पृथक् पहचान बनाते हुए प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपनी संस्था 'माध्यम' के द्वारा नवें और दसवें दशक के बीच सोलह श्रेष्ठ नाटकों का मंचन किया है। उनकी नाट्यकृतियों के नाम हैं, 'नयकी पीढ़ी' (भोजपुरी), 'पूर्वार्द्ध' और 'गान्धारी'। इसके अतिरिक्त उन्होंने डॉ. राही मासूम रजा के उपन्यास 'टोपी शुक्ला' और कथालेखिका नीलम राकेश की कहानी 'खुला आकाश' का भी नाट्यरूपान्तर किया है। डॉ. शिवमूरत सिंह अपने रंगकर्म को पूर्णता तक पहुँचाते हुए एक बहुत गंभीर पत्रिका 'रंगप्रमा' का वार्षिक प्रकाशन करते चल रहे हैं। समर्पित भाव से अपने को नाट्य विधा से जोड़े रखकर डॉ. सिंह ने गाजीपुर जनपद में रंगमंच को प्रतिष्ठित किया है।

गाजीपुर जनपद के कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने अवकाशप्राप्ति की परिपक्व आयु में सृजनकार्य आरंभ करके अपने ढेर सारे लेखकीय अवदान से साहित्य-भंडार की श्रीवृद्धि की है श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश' और डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य के अतिरिक्त ऐसे तीसरे व्यक्ति हैं **डॉ. सरजू तिवारी** (१९३४)। आपके कार्यक्षेत्र त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतल्ला और पूर्वांचल विश्वविद्यालय से जुड़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहा। आप मूलतः गणित के विद्वान् हैं परन्तु आपकी सर्जनात्मक सेवायें हिन्दी को मिलीं। आपने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की काव्यपुस्तकों में से 'अंतिम कवितायें', 'जन्मदिने', 'मानसी', 'पुनश्च', 'रवीन्द्रगीतिका' और 'पत्रपुट' का हिन्दी में सफल काव्यानुवाद प्रस्तुत किया। 'गाजीपुर की ऐतिहासिक धरा', 'गाजीपुर के क्रान्तिकारी', 'गाजीपुर के क्रांतिगौरव सरजू पाण्डेय' और 'आँखमिचौनी' तथा 'गाजीपुर का सांस्कृतिक उत्तराधिकार' आदि आपकी अन्य पुस्तकों के नाम हैं। आपने एक बड़ी पुस्तक अंग्रेजी भाषा में लिखी है जिसका नाम 'मैथेमेटिक्स इन हिस्ट्री', कल्चर, फिलासफी एण्ड साइंस' है। आप 'जयन्तिका' नामक एक साफ-सुथरी त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन भी करते हैं। आप बहुआयामी रचनात्मक प्रतिभा के धनी हैं और उसका प्रयोग सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में करते हैं। आपकी विचारधारा प्रगतिशील समाजवादी है। आपके गाँव का नाम लोटवाँ (जमानिया) है।

डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य (१९३२ई.) का जन्म गाजीपुर जनपद के सुहवल गाँव में हुआ और आपका विवाह इसी जनपद के आरीपुर गाँव के प्रसिद्ध तिवारी-परिवार में प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुज डॉ. श्री विलास तिवारी (पी.सी.एस. उत्तर प्रदेश सरकार) के साथ हुआ। विद्वान् परिवार का प्रभाव आप पर पड़ा और उसका लाभ मिला। अवकाशप्राप्ति की वय में लेखनी उठाकर आपने दसेक वर्षों के भीतर भोजपुरी भाषा, साहित्य और भोजपुरी संस्कृति सम्बन्धी गंभीर साहित्य का अट्टाल लगाकर चमत्कृत कर दिया। चिंतनप्रधान भोजपुरी ललितनिबन्धों की अपनी पहली पुस्तक 'सदानीरा' (१९९३ ई.) से आपको बहुत ख्याति मिली। इसके बाद दूसरा भोजपुरी ललितनिबन्ध संग्रह 'गूलर के फूल' प्रकाशित हुआ और इसमें भोजपुरी निबन्ध की चिन्तनशील नागर मुद्रा उभर कर सामने आयी। आप की डेढ़ दर्जन प्रसिद्ध पुस्तकों में से 'भाषा,साहित्य एवं संस्कृति', 'भोजपुरी लोकगीतन में गीति तत्त्व', 'भोजपुरी लोकगीतों का इतिहास' और 'राष्ट्रभाषा हिन्दी कल, आज और कल', अतिप्रसिद्ध हैं। आप भोजपुरी भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अनेक बार विदेश-यात्रायें कर चुकी हैं। ये यात्रायें नेपाल, भूटान, जापान, हांगकांग, सिंगापुर, मॉरिशस, कनाडा, तुर्की और अमेरिका आदि विश्व के लगभग ४० देशों में सन् १९७५ और ९८ के बीच सम्पन्न हुईं। आपके सम्पादन-प्रकाशन में लखनऊ से प्रकाशित 'भोजपुरी लोक' (मासिक) पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हुआ। अप्रैल ८९ ई. से आरंभ होकर जून सन् २००१ तक निरन्तर प्रकाशित होकर इस पत्रिका ने साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। अखिल भारतीय भोजपुरी-परिषद् उ.प्र. लखनऊ के महामंत्री के रूप में आपने पूर्वी उत्तर प्रदेश की प्रतिभाओं को विविध सम्मानों और पुरस्कारों से अलंकृत किया। आपके विचारोत्तेजक लेखन , गंभीर ज्ञान और सहयोगी व्यक्तित्व से भोजपुरी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदेश को बहुत बल मिला। आप विश्व भोजपुरी-सम्मेलन के महिलाप्रकोष्ठ की वर्ष १९९४ में अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुयीं। आपको सन् १९८८ और ९८ के बीच उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान सहित विविध प्रतिष्ठानों के दो दर्जन प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। इनमें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का राहुल सांकृत्यायन सम्मान, हिन्दी अकादमी, हैदराबाद (आंध्र) का 'सम्पादक रत्न', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का साहित्य महोपाध्याय, अ. भा. भोजपुरी सा. स.(पटना) का चित्रलेखा सम्मान आदि प्रमुख हैं। सन् २००२ तक कुल ढाई दर्जन गम्भीर और मौलिक चिन्तन मूलक सांस्कृतिक सरोकार की पुस्तकों का सृजन कर सो भी मात्र अपने दस-बारह वर्षीय लेखकीय जीवन में आपने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आपकी नवीनतम(२००२ई.) शोधपरक मानक कृतियों में से 'विश्वव्यापिनी भोजपुरी' और 'त्रिपथगा' हैं। पहली पुस्तक में विश्व में भोजपुरी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार का इतिहास है और दूसरी में विश्व के आठ -दस देशों के गीत और लोकगीत (भोजपुरी) संकलित हैं। आपकी अनेक पुस्तकें अप्रकाशित हैं और सत्तर वर्ष की आयु में भी आपकी लेखनी अनवरत चल रही है।

रंजना श्रीवास्तव 'रंजू' (१९५९ ई.) ने पश्चिमी बंगाल के सिलीगुड़ी शहर में रहकर 'सृजनपथ' नामक एक पत्रिका का सम्पादन -प्रकाशन किया है। आपके काव्य संकलनों के नाम हैं, 'चाहत धूप के एक टुकड़े की', 'बनते-बिगड़ते कोहरे' और 'आइना-ए-रूह'। आप को सिलीगुड़ी गौरव आदि अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। आप गाजीपुर शहर की रहने वाली हैं।

डॉ. विजयानन्द (मूल नाम- श्री विजेन्द्रप्रताप त्रिपाठी -जन्म १९६०) हिन्दी की अनेक विधाओं में कलम चला चुके हैं। खड़ी बोली हिन्दी के अतिरिक्त आपने भोजपुरी में भी लिखा है। आपकी भोजपुरी रचना 'गंगा जस पावन गंगा' में कविता और कहानी दोनों का गंगायमुनी रूप है। 'शिवा शौर्य', 'समरभूमि', 'अंधेरे के खिलाफ', 'मातृभूमि के लिए', 'उबलता लहू' और 'नन्हें मुन्ने गीत' आदि आपकी प्रकाशित रचनाओं के नाम हैं। आपका जन्मस्थान गाजीपुर का धुरेहरा गाँव है और आपका कार्यक्षेत्र झूँसी, इलाहाबाद है।

'सृजनधर्मी प्रतिभा के धनी **श्री राजदेव राय 'प्रियदर्शी'** (सन् १९३३) ने प्रचार-प्रसार से दूर रहकर चुपचाप लगभग आधा सौ पुस्तकों का सृजन -प्रकाशन कर डाला है। इनमें आठ उर्दूकाव्य हैं (हिन्दी लिपि में)। नौ हिन्दीकाव्य और चौदह गीतिकाव्य हैं। शेष में खण्डकाव्य, उपन्यास,नाटक, कहानी, गद्यगीत, काष्ठशिल्प, साहित्य और विविध साहित्य है। आपका जन्म शेरपुर गाँव में हुआ। आप काष्ठकला के विशेषज्ञ हैं और राजकीय केन्द्रीय काष्ठकला संस्थान, बरेली के प्रधानाचार्य पद से अवकाश ग्रहण कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देहरादून में साहित्यसाधना करते हैं। आपका कहना है – साहित्य मेरा आराध्य है, क्रय - विक्रय की वस्तु नहीं है। आपकी कविताओं में छायावादी स्वर अभी जीवन्त है, मगर विचार से आप आधुनिक हैं। अपनी पुस्तक 'साम्यवाद' में आप लिखते हैं, 'साम्यवाद में ऐसा कुछ नहीं है जो विवाद उत्पन्न करे।' आपकी कुछ प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम हैं- प्राची, स्वर्णरश्मि, श्यामा, विसर्जन, ऋचायें नहीं हैं, शेफालिका, चेतना, अश्रुकण, गीत की नई कड़ी, वेदना, उर्मिला, त्रियामा (उपन्यास), चिलमन, 'इश्क नहीं आसाँ', 'लफ्जों का महल', 'सिर्फ तुम्हारे लिए' और 'वैशाखियों के सहारे' आदि।

डॉ. अशोक द्विवेदी (१९५१ ई.) भोजपुरी साहित्य की अप्रतिम प्रतिभा का नाम है। आप गाजीपुर जनपद के सुलतानपुर गाँव के निवासी हैं और बलिया में रहकर साहित्यसेवा के साथ-साथ 'पाती' नामक एक भोजपुरी दिशाबोध की गम्भीर साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन करते हैं। भोजपुरी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर निबन्ध, समीक्षा, कविता-कहानियाँ लिखते हैं। 'घनानन्द और उनकी कविता', 'प्रसाद, पन्त और निराला', 'समीक्षा के प्रतिमान', 'मीसा में बन्द देश', 'अढ़ाई आखर' (भोजपुरी), 'राम जी के सुगना' (भोजपुरी निबन्ध) ,'गाँव के भीतर गाँव' और 'आवऽ लवटि चलीं जा' (कहानीसंग्रह) आपकी पुस्तकों के नाम हैं। आपको जनपदीय गौरव -सम्मान, सहस्राब्दी हिन्दीसेवी सम्मान और 'साहित्यश्री' आदि सम्मान मिल चुके हैं। भोजपुरी लेखन में भाषा और शैली के स्तर पर आधुनिकता के चिन्तनात्मक तेवर को उभारने वालों में आप अग्रणी हैं।

उपन्यासलेखक **अनिरुद्ध पाण्डेय** गुणउर गाँव के निवासी हैं। उनके आधे दर्जन से ऊपर लिखे उपन्यासों में से 'काया की माया', 'जिन्दगी की जड़ें','पन्ना एवं पुखराज' और 'कंचन कवल' प्रसिद्ध हैं। प्रशासन में रहते हुए इन्होंने अपनी रचनात्मक प्रतिभा को सुरक्षित रखा। ये जिलाधिकारी के पद पर इलाहाबाद से रिटायर हुए। इस गाँव के **जगन्नाथ राय** ने पूर्व रेलवे में डी.टी.एस. के पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद 'कृष्ण की बाँसुरी' और 'लक्ष्मणरेखा' नामक दो पुस्तकों की रचना की थी।

पं.श्यामनारायण पाण्डेय की वीररसात्मक काव्यधारा को गाजीपुर में पल्लवित करने वाले **मुख्तार सिंह दीक्षित** (१९३६) की कृतियों में से 'जय भारत' तथा 'शंखनाद' (महाकाव्य), 'धाराप्रवाह', 'जागृत स्वर' और 'सुमन संचय' काव्यसंकलन हैं। 'स्वर्ग के आँगन में' नाट्यकृति है। आपने भोजपुरी की भी सेवा की है और 'करियई बदरिया' नामक एक संकलन प्रकाशित है। आप जखनिया के निवासी हैं। 'कृष्णार्जुन युद्ध' दीक्षित जी का सबसे नवीन, मौलिक और भावोत्तेजना भरा रोमांचक प्रबन्धकाव्य है। आप गाजीपुर में अपनी वीर रस-धारा के अद्वितीय कवि हैं। आपकी वाणी में स्वाभाविक ऊर्जा है और आप का सृजन ओज-तेज भरे विशुद्ध साहित्यिक आकर्षणों से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

परिपूर्ण है।

गाजीपुर जनपद का इतिहास 'गाजीपुर का संस्मरण' नाम से सर्वप्रथम **कृष्णानन्द राय** ने लिखा जो सन् १९४८ में प्रकाशित हुआ। राय साहब उत्तर प्रदेश सरकार में स्वास्थ्यमंत्री रहे और बाद में लखनऊ में रहकर 'संसदीय प्रकाश' नामक पत्रिका का प्रकाशन करने लगे। गाजीपुर जनपद के दूसरे इतिहासलेखक **डॉ. शिवमंगल राय** हैं। आप की कृति 'गाजीपुर का इतिहास' कलकत्ते से प्रकाशित हुई। गाजीपुर के इतिहास पर कलम चलाने वाले तीसरे व्यक्ति **डॉ.सरजू तिवारी** का उल्लेख पीछे हो चुका है। **श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'** ने भी गाजीपुर का इतिहास लिखा है मगर वह अप्रकाशित है। **लक्ष्मीनारायण पाण्डेय** ने भी इस दिशा में कुछ कार्य किया था और वह 'लोकसेवक' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित भी हुआ था।

ढढ़नी गाँव निवासी **डॉ. जयनारायण राय** ने एक उपन्यास लिखा 'यथावत्' जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। उससे उत्साहित होकर उन्होंने दूसरा उपन्यास 'हिन्दी, तुम लौट आओ' लिखा। यह प्रयोगधर्मी कृति है। फिजिक्स और केमिस्ट्री की अध्यापनसेवा से जुड़े रहकर सन् २००१ई. में आपने गोरखपुर विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण किया। कवि **रमाशंकर 'बटोही'** के काव्यसंग्रह का नाम 'त्रिवेणी' है। इसके अतिरिक्त 'शकुन्तला' (प्रबन्ध काव्य) और 'परदे के पीछे' (उपन्यास) नामक आपकी दो और कृतियाँ हैं। कवि **ईश्वरीप्रसाद सिंह 'ईश'** के खण्डकाव्य 'सारन्धा के बीन', 'अतिथियज्ञ' और 'युगपुरुष लोरिक' बहुत प्रसिद्ध हैं, साथ ही गंभीर भी हैं। एक प्रबन्धकाव्य -लेखक में वस्तु -शिल्प सम्बधी जो विशेषताएँ होनी चाहिए वे सब 'ईश' जी में विद्यमान मिलती हैं। **डॉ. परशुराम तिवारी** (गाँव -माढ़ूपुर) के प्रबन्धकाव्य का नाम 'रत्ना के राम' है। इसमें नारीनवोत्कर्ष का चित्रण है। गाजीपुर के बिजहरी गाँव के निवासी **भरत आनन्दकर** ने 'कृष्णचरित मानस' नामक एक पुस्तक की रचना की। इसमें रामचरित मानस की भाषा-शैली का निर्वाह हुआ है। इस प्रकार गाजीपुर जनपद की साहित्यिक चेतना में वैविध्य का रंग आकर्षण पैदा करता चलता है।

जनवादी काव्यधारा के प्रखर कवि **विनय राय 'बबुरंग'** ने जनभाषा भोजपुरी में दो रचनाएँ दीं 'बिहान होई कहिया ' और 'दस बरिस फेल'। आप अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन सहित कई संस्थानों से पुरस्कृत लोकप्रिय कवि हैं।

गौरीशंकर मिश्र 'मुक्त' की भोजपुरी कृतियों के नाम हैं 'रतिया के भोर', 'फूल महुआ के' और 'अँजोर'। खड़ी बोली हिन्दी में लिखे आपके काव्य-संकलन का नाम 'उद्‌गार' है। हिन्दी भाषा की दूसरी पुस्तक 'क्रांति प्रदीप' है। रेवतीपुर गाँव में सन् १९२९ में जनमे 'मुक्त' जी की दो और भोजपुरी रचनायें 'रसलोक' और 'गंगा' (कहानीसंग्रह) हैं। आपने कलकत्ते में रहकर भोजपुरी का प्रचार किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर में भोजपुरी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने वालों में **रामवचन शास्त्री 'अँजोर'** (१९३२)का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। खड़ी बोली हिन्दी और भोजपुरी में आपने प्रबन्धकाव्य, गीतकाव्य और उपन्यास आदि लिखकर रचनाओं का अम्बार लगा दिया। आपको देश की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से ढेर-सारे पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हैं। आपको भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का भिखारी ठाकुर सम्मान भी प्राप्त है। आप नवली गाँव के निवासी हैं। आपकी रचनाओं के नाम हैं- किरनमयी, बदरिया, मीतमिलन, निरधन के धन श्याम, श्रीकृष्ण लीलामृत, अमझोर बावनी, पाहुर, गहगह गीत गँथाइल गाँछिन, अग्निदूत, पांचाली, सह्याद्रि का सिंह, राजसिंह और गढ़ पर छापा। आपका कार्यक्षेत्र बिहार रहा जहाँ आप अध्यापन सेवा में रत रहे। अवकाश प्राप्त कर अपने गाँव नवली में रहकर अलमस्त साहित्य -साधक- जीवन बिताते हैं।

डॉ. गौरीशंकर राय 'विमल' (सोनहरिया) की ध्यानाकर्षक गंभीर कृति का नाम है 'प्रसाद साहित्य में उदात्त तत्त्व'। 'साहित्य बोध' और 'गाँव-गिराँव की बातें' उनकी अन्य पुस्तकों के नाम हैं। आप मूलतः कवि हैं और कई काव्यसंकलन अप्रकाशित हैं। आपकी जन्मतिथि १९४३ है। 'अम्बु' उपनाम से कविता लिखने वाले **अम्बिका राय 'अम्बु'** का कार्यक्षेत्र कलकत्ता रहा। उनकी कविताओं का संकलन 'जीवन के क्षण गीत बन गये' सन् २००० में प्रकाशित हुआ। 'विविधा', 'वीर बनो रणधीर बनो', ये भारत की दिव्य देवियाँ' और 'प्रकृति प्रभा' उनकी अन्य पुस्तकों के नाम हैं। गहमर गाँव के भोजपुरी रचनाकार **आनन्द संधिदूत** की कृति 'एक कड़ी गीत की'(१९९२ ई.) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से पुरस्कृत हुई है। आपने तमिलसन्त तिरुवल्लुवर की अमर कृति 'तिरुकुरल' का भोजपुरी भावानुवाद 'कुरल कवितावली' के रूप में किया है। आपने भोजपुरी काव्य को आधुनिक प्रयोगों से समृद्ध किया है।

कवि **हरिनारायण 'हरीश'** अपने समय के बहुत प्रतिभाशाली सभापुरुष, समर्पित साहित्यसेवी और वाग्विदग्ध कवि हैं। गीत और गजल दोनों विधाओं में आप के रचनाकार को सफलता मिली है। आपकी रचनाओं के नाम हैं,'अतीत के आइने' और 'गजलों का गुलदस्ता'। कटघरा गाँव में सन् १९४७ में आपका जन्म हुआ। आप इन्टर कालेज, शादियाबाद में हिन्दी के प्राध्यापक हैं। अध्यापन और साहित्यसेवा के अतिरिक्त पत्रकारिता की ओर आपका स्वाभाविक रुझान है और आप विविध दैनिक पत्रों से जुड़े हैं। कवि सम्मेलनों के मंच, दूरदर्शन और आकाशवाणी के आप लोकप्रिय कलाकार हैं।

धुरेहा गाँव के कवि **विजय शंकर त्रिपाठी** (१९४३ ई.)खड़ी बोली हिन्दी और भोजपुरी दोनों में लिखते हैं। आपके गीतों का संकलन 'काँटे नागफनी के' बहुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकप्रिय हुआ। आपकी कुछ रचनाएँ भक्ति-भावना से प्रेरित होकर सामने आयीं। इनमें 'हनुमत बतीसी' और 'दुर्गा चालीसा' हैं। 'हनुमत बतीसी' बहुत प्रौढ़, प्रवाहयुक्त और अलंकृत रचना है। लोकसंगीत और लोकधुनों को संमादृत करते हुए कवि **राजेन्द्रप्रसाद 'वियोगी'** की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई। इनमें 'गँवई गुलाब' को बहुत लोकप्रियता मिली।

जोगा मुसाहिब गाँव के **श्री रामवदन राय** (१९५०) कवि, उपन्यासलेखक, व्यंग्यकार और नाटककार हैं। खरडीहा (गाजीपुर) के इतिहास -विभाग में सेवारत रह आपने निष्ठापूर्वक साहित्यसेवा की है। आप की कृतियों के नाम हैं,- 'गँवई गुहार (काव्य), फिरकी वाली (उपन्यास), कतरा भर गाँव (कहानीसंग्रह), मारे गये गुल्फाम (व्यंग्यसंग्रह) और 'नयी रोशनी के अंधेरे' (नाटक), 'कृष्णायन' आपका नवप्रकाशित काव्य है । नगसर के पास असाँव गाँव के निवासी **चन्द्रदेव शर्मा 'निशेश'** का काव्यसंकलन 'रिमझिम' १९९८ में प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व 'साहित्य संस्कार' नामक आपका एक समीक्षाग्रन्थ प्रकाशित है। आपकी अन्य कृतियों के नाम हैं, 'ज्योत्स्ना','दीये की लौ' (एकांकी) और 'शुचिता के धब्बे' (कहानीसंग्रह)। आप प्रसिद्ध पत्रकार और समाजसेवी श्री चन्द्रमा शर्मा 'रसेश' के अनुज हैं।

श्रीराम सिंह 'गहलौत' (ग्राम -बिलहरी, जन्म १९१५)गाजीपुर के प्रतिष्ठित हास्यरस के कवि हैं। आपकी रचनाओं के नाम हैं,'गुदगुदी', 'कटुकंठी', और 'नारद'। एक युग तक आपने पूर्वी उत्तर प्रदेश को अपनी रचनाओं से अनुरंजित किया है। गहलौत जी के समकालीन और गाजीपुर के कविसम्मेलनों की रौनक बढ़ाने वाले उर्दू के शायर और हिन्दी के कवि **सोमेश्वरनाथ मुफलिस** (१९३४)की रचनाओं के नाम हैं, 'खूँ आबये दिल','हीरा और नाशकुरा', 'मुफलिस के दो सौ मुशायरे' और 'दीवान ए मुफलिस'। **उदयनारायण राय** (ग्राम - सियाड़ी, जन्म १९२९) की कृतियों के नाम हैं, 'शमिता' (काव्य) और 'एकलव्य' (खण्डकाव्य)। बारा गाँव के कवि **बृजमोहन 'चंचल'** का भोजपुरी काव्य 'अँजुरी भर आखर' है। अरुणाचल प्रदेश की अध्यापनसेवा में लगे सेमरा के भोजपुरी शिरोमणि **डॉ. नन्दलालराम गुप्त** (१९५५) ने उक्त प्रदेश में हिन्दी और भोजपुरी का जमकर प्रचार किया। आप दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली से भी सम्बद्ध हैं। आप को 'साहित्य सारस्वत' आदि लगभग एक दर्जन सम्मान और उपाधियाँ मिल चुकी हैं।

हरिनारायण यादव का खण्डकाव्य 'अहिल्या' और **राजनारायण सिंह 'राजा'** का लिखा चरितकाव्य 'कालजयी' उल्लेखनीय हैं। 'कालजयी' महाभारत के पुण्यपुरुष भीष्म पर आधारित है। इस चरित्र को आधार बनाकर **उमाशंकर सिंह 'पथिक'** ने 'भीष्म पुरुषार्थ' नामक महाकाव्य लिखा। आपकी लिखी 'सती सावित्री'(महाकाव्य) और 'टेसू का फूल' ये दो और रचनाएँ भी ध्यानाकर्षक हैं। **डॉ. नरेन्द्र सिंह** की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्यकृति 'गीत बाँसुरी', **अक्षयकुमार पाण्डेय** का खण्डकाव्य 'इन्द्रधनुष', **महेन्द्रकुमार सिंह 'नीलम'** का खण्डकाव्य 'पंडितराज जगन्नाथ' और **चन्द्रबली राय** की काव्यकृति 'प्राण परिमल' उल्लेखनीय हैं। 'प्राण परिमल' की भूमिका **आचार्य परमानन्द शर्मा** ने लिखी है और इसे छायावादी काव्यधारा की उत्कृष्ट कृति कहा है। बघरा (जमानिया) के **ऋषिमुनि तिवारी** ने 'दहेज बावनी' नामक एक समाजोपयोगी काव्यपुस्तक प्रस्तुत की। आपकी कुछ अन्य लोकगीत सम्बन्धी पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

सिंहासन राय 'सिद्धेश' (ग्राम रेवतीपुर-जन्म १९०८ई.) हिन्दी के समर्पित साधक का नाम है। कलकत्ते के 'आदर्श पुस्तक भण्डार' के माध्यम से आप ने बंगाल में हिन्दी के प्रचार -प्रसार में अमूल्य योगदान किया है। आप कवि तथा कुशल समीक्षक और निबन्धलेखक हैं। आपकी अनेक छात्रोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'उच्चतर निबन्ध भारती' आपकी एक मानक, गंभीर और मौलिक कृति है। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' भी आपने लिखा है। **पं. बटुकदेव शर्मा** (मतसा) पत्रकार के साथ कुशल लेखक भी रहे। इनकी कृतियों के नाम हैं, 'खद्दर की आत्मकथा', 'धनवान् होने के उपाय' और 'स्वर्ग की सीढ़ी'। टिसौरी गाँव के **पं. रामनाथ त्रिवेदी** की साहित्यसेवा स्मरणीय है। सन् १९३०-४० के बीच में ये महापंडित राहुल सांकृत्यायन की पुस्तकों के प्रकाशक रहे। हिन्दी कुटिया, पटना (बिहार) से प्रकाशित पुस्तकों पर इनका नाम अंकित होता रहा। राहुल जी के ढेर-सारे पत्र इनके पास देखे गये।

गाजीपुर के एक लेखक **कामताप्रसाद सरावगी** ने कुछ पुस्तकें प्रेरणाप्रद साहित्य के रूप में (स्वेट मार्डन की शैली में) लिखीं जो अब उपलब्ध नहीं हैं। इसी प्रकार अनेक पुस्तकों के रचयिता **कमलापति प्रधान** की तथा कथाकार **उमाशंकर** की पुस्तकें भी अनुपलब्ध हैं। **डॉ. विश्वनाथ राय** (खरडीहा- १९३५ ई.) का एक निबंध संग्रह 'मैं क्यों लिखता हूँ' और एक काव्य संग्रह 'कसक' प्रकाशित है।

डॉ. विश्वनाथ सिंह का जन्म खिताबपुर (कासिमाबाद) में १९४३ ई. में हुआ। आप शासकीय कालेज के शिक्षक के रूप में मध्य-प्रदेश में सेवारत रहे। हिन्दी की उच्च कोटि की पत्र -पत्रिकाओं में निरन्तर लिखने वाले डॉ. विश्वनाथ सिंह की दो पुस्तकें 'प्रकाशित हैं, 'परित्यक्ता' (खण्डकाव्य) और 'विपिनवासिनी'(उपन्यास)। **नन्दलाल पाठक** (औड़िहार-१९२९) दूरदर्शन के लेखक हैं। आपका शिक्षक के रूप में कार्यक्षेत्र बम्बई रहा। आप की दो पुस्तकें प्रकाशित हैं- 'धूप की छाँह' (गीतसंग्रह) और 'जहाँ पतझर नहीं होता' (गजलसंग्रह)।

बाबूलाल बलवन्त (बिरहिमाबाद- १९४२ई.) कवि और कहानीलेखक के रूप में उभरे परन्तु बाद में वे शिक्षा और इससे जुड़े विषयों की ओर मुड़ गये। 'आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान', 'विद्यालयसंगठन और स्वास्थ्य-शिक्षा', और 'शिक्षण और अधिगम का आधार' आदि आपकी लगभग डेढ़ दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं। स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर की शिक्षणसेवा के अतिरिक्त आप राजनीति में रहकर जन-सेवा से जुड़े हैं और गाजीपुर के एम.एल.सी. हैं।

डॉ. विनोदकुमार राय (१९४७) शिक्षाशास्त्र से जुड़े व्यक्ति हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों के नाम हैं- 'शिक्षा के सिद्धान्त', 'शिक्षा में प्रारम्भिक सांख्यिकी', 'शिक्षा मनोविज्ञान' और 'प्रोफेशनल ट्रेनिंग एण्ड टीचर्स एजूकेशन'। आपको एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा मिले पुरस्कारों के साथ ही सन् २००१ में केन्द्रीय निदेशालय, दिल्ली का राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। सम्प्रति आप महाविद्यालय चंडेसर (आजमगढ़) में सेवारत हैं।

बभनपुरा के **सत्यकेतु दूबे** (१९३०) और उनके भाई डॉ. सत्यमित्र दूबे (१९३६) दोनों कवि, लेखक, चिन्तक और पत्रकार हैं। सत्यकेतु दूबे 'संघर्ष' (लखनऊ) और 'गाँव की ओर' (देवरिया) आदि विभिन्न स्थानों से प्रकाशित लगभग आधे दर्जन पत्रों के सम्पादक रहे। आपकी प्रमुख पुस्तकों के नाम हैं- 'सोयी सदी गंधवादी' (काव्य) और 'व्यथा' (व्यंग्यसंकलन)। आप राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख हिन्दी-पत्रों में लिखते रहे। **डॉ. सत्यमित्र दूबे** की कविताओं और कहानियों के संकलन तो अप्रकाशित हैं परन्तु उनकी समाजशास्त्र विषय की लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं और उनमें अनेक पुरस्कृत हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम हैं, 'पूर्वोत्तर की सप्तपदी' और 'मनु की समाजव्यवस्था'। आप डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष पद पर रहते हुए 'नार्थ ईस्ट फ्रान्टियर बुलेटिन' जैसे प्रसिद्ध पत्र का सम्पादन करते रहे। अवकाशप्राप्ति के बाद दिल्ली में रहकर स्वतंत्र पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं। आप दोनों भाई समाजवादी विचारधारा के हैं और अतिप्रसिद्ध समाजवादी नेता और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दलसिंगार दूबे के सुपुत्र हैं।

'निराला' जी के समकालीन और उनके घनिष्ठ मित्र **पं. परमानन्द शर्मा** (रेवतीपुर) ने कलकत्ते में रहकर गंभीर साहित्यसाधना की थी और समकालीन लेखकों पर अपनी छाप छोड़ी थी। आप बंगप्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के मंत्री रहे। आपकी पुस्तकों के नाम हैं, 'काव्यधारा','नवीन प्रवाह', 'प्रसाद साहित्य', 'साहित्य और अनुभूति', 'निराला साहित्य' और 'स्वामी सहजानन्द सरस्वतीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व'। आपने कई साहित्यिक सामाजिक पत्रिकाओं का सम्पादन कर एक स्वस्थ साहित्यिक वातावरण बनाया था। आप सन् १९२३ से कलकत्ते में रहे और साहित्य-साधना की। 'साधना' और 'सिद्धांजना' नामक दो साहित्यिक पत्रिकाओं का आपने सम्पादन भी किया था।

कनुआन गाँव के **डॉ. बब्बन पाण्डेय 'मुक्त'** (सन् ४७-२००२) भोजपुरी और हिन्दी दोनों भाषाओं के सिद्धहस्त लेखक थे। वे कलकत्ते में सेवारत रह अपनी साहित्य-साधना चलाते थे।उनकी पुस्तकों के नाम हैं,'रामचरित मानस में लोकसंस्कृति', 'पुष्पवाटिका में राम', (काव्य) और 'बरगद की छाँव'(काव्य)। भोजपुरी रचना,'नेहिया के लोर' है। आपके तीन उपन्यास अप्रकाशित हैं, 'शालिनी', 'राधिका' और 'महीप की आत्मकथा'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय (रामपुर माँझा गाँव, जन्म - १९५० ई) का लेखन गंभीर विषयों का स्पर्श करता है और आप प्रमुख रूप से भाषावैज्ञानिक हैं। आपकी कृतियों के नाम हैं- भाषाविज्ञान का अनुशीलन, भाषाविज्ञान का रसायन, हिन्दीःकुछ नयी चुनौतियाँ, उर्दूः दूसरी राजभाषा, हिन्दी भाषा और साहित्य, व्यावहारिक एवं प्रयोजन मूलक हिन्दी तथा साहित्य शास्त्र और 'भोजपुरी काव्यः परम्परा और प्रगति'। आपने एकांकी नाटक सम्बन्धी दो पुस्तकों का सम्पादन किया। आप डिग्री कालेज, मलिकपुरा में हिन्दी प्राध्यापक हैं।

डॉ. राधेश्याम राय (डोरा- १९५५ ई,) की कृति 'हिन्दी काव्यशास्त्र पर आचार्य मम्मट का प्रभाव' प्रकाशित है। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रीडर हैं। रीतिकालीन साहित्य आपके अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र है।

गोहदानिवासी **डॉ. सूबेदार सिंह 'अवनिज'** के चार प्रबन्धकाव्य प्रकाशित हैं। उनके नाम हैं, 'उलगुलान' (विरसामुंडा), 'एवमस्तु' (अगस्त्य-विन्ध्य प्रकरण), 'अपराजिता' (अहल्या-गौतम),और 'आस किरिन' (पेरियार रामास्वामी नायकर पर आधारित)। आपकी अन्य काव्यपुस्तकों के नाम हैं, 'वीथी', 'निजत्व की खोज', किसलय', 'लघुगर्भा (हाइकू) और 'नवमल्लिका'। खालिसपुर के **गंगाधर पाण्डेय 'सुमन'** एक सुलझे हुए सुकवि हैं।

सुजनीपुर के कवि **राजेन्द्र सिंह 'इन्द्र** (१९३४) का एक कहानीसंग्रह 'रबड़ का कुत्ता' प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त चन्द्रशेखर आजाद और वीर अब्दुल हमीद पर लिखे इनके दो खण्डकाव्य हैं। इनकी अन्य रचनाओं के नाम हैं,'विधवा' (कहानीसंग्रह), 'परिचित वेश्या' (उपन्यास) ,'प्रणय' (काव्य) और 'जब जब नयन भरे'।

अमरनाथ श्रीवास्तव (१९३९) श्रेष्ठ नवगीतकार के रूप में उभरे। आपकी कृतियाँ 'गेरू की लिपियाँ', 'दोपहर में गुलमोहर', 'अनामिका' और 'चेतना के देश' प्रसिद्ध हैं। आपके गीतों में मार्मिक सौन्दर्यानुभूति मिलती है। **दामोदर पाण्डेय 'जुगलजोड़ी'** रचनाकार के रूप में बहुत प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनाओं का नाम है, 'कुक-हू-कू' (भारत-पाक युद्ध पर आधारित काव्य) 'प्रियतम की वीणा' और 'पत्ता'।

स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर के अवकाशप्राप्त शिक्षक **वासुदेव पाण्डेय** (१९३४ई.) ने एक वैचारिक उपन्यास 'आलोक' नाम से लिखा है जो अप्रकाशित है। वीरपुर के **प्रमोदकुमार दीक्षित** ने स्वामी विमलानन्द सरस्वती (राजगुरु मठ , वाराणसी) की 'जेहल क सनद' आदि पुस्तकों का नये सिरे से सम्पादन किया है। **लल्लन जी** गाजीपुर (सवास-सैदपुर) छायावादी गीतकार हैं। इन्होंने अपने को प्रसाद परम्परा का गीतकार घोषित किया है। प्रसाद पर उनके दो समीक्षात्मक ग्रन्थ भी हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों का नाम 'नव वसन्त' और 'आम्रपाली' है। इनका कार्यक्षेत्र लखनऊ है। **मोती राम** (ग्राम- कोड़री, सन् १९३९) कहानी लेखक हैं। इनकी कहानी 'अभिलाषा' हरियाना साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुई है। इनका कार्यक्षेत्र शिमला है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यसेवा के बहुआयामी परिदृश्य

प्रकाशित साहित्य के रूप में ठोस सामग्री उपलब्ध नहीं होने पर भी इस जनपद में पुराने साहित्यकारों की एक ऐसी आदरास्पद पीढ़ी है तथा नये साहित्यकारों की ऐसी प्रतिभाशाली और सृजनकर्म में लगी कतार है जिसका स्मरण कर इतिहास गौरवान्वित होगा। ऐसे लोगों में **पंडित रामदत्त राय शर्मा, लौटू सिंह गौतम, शिवपूजन राय 'विशारद', वीरेश्वरनाथ राय, पराहू सिंह 'प्रबुद्ध', वाराणसी प्रसाद त्रिवेदी , लक्ष्मीनारायण पाण्डेय और प्रो. विंश्वनाथ राय** आदि का नाम प्रसिद्ध है। आगे कुछ अन्य यशस्वी लोगों की चर्चा होगी।

पं. श्रीनाथ मिश्र (१९०३) की काव्यसाधना से गाजीपुर जनपद गौरवान्वित होता रहा। सम्पूर्ण पूर्वी उत्तर प्रदेश में उनके छायावादोत्तर काल के मर्मस्पर्शी गीतों की धाक जमी रहती थी परन्तु उनका कोई काव्यसंकलन नहीं प्रकाशित मिलता है। इसी प्रकार इस जनपद की विभूति **हृषीकेश जी** कानपुर में रहकर अपनी समीक्षा-सेवा के लिए हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में प्रसिद्ध रहे परन्तु वे भी अपने पीछे कोई प्रकाशित कृति नहीं छोड़ गये। आप मार्क्सवादी सोच के प्रखर वक्ता थे। आपकी फुटकर रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी हैं। डॉ. देवीशंकर अवस्थी की समीक्षापुस्तक 'नयी कहानीः संदर्भ और प्रकृति' में आपका एक समीक्षात्मक आलेख छपा और उससे आपको बहुत ख्याति मिली थी। आप की जन्मतिथि १० नवम्बर १९३२ है और निधन सन् २००१ में हुआ।

रजी अहमद 'बेखुद' हृदयेश-मंडल के बहुत प्रतिभाशाली और भावुक कवि थे। परन्तु उनकी कविताओं का कोई संकलन उपलब्ध नहीं है। इस कोटि के अन्य पुराने-नये साहित्यसेवियों में **वंशनारायण सिंह 'मनज', गणेश उपाध्याय 'गोबर गणेश', जनार्दन ज्वाला, सतीशचन्द्र श्रीवास्तव, रमाशंकर राय, अनन्तदेव पाण्डेय, प्रेमशंकर चौबे, डॉ गीता गुप्त, डॉ चन्द्रबली सिंह 'हंस', रामजन्म सिंह (पतार), प्रिंसिपल वीरेन्द्रकुमार सिन्हा, डॉ. एम.डी. सिंह, श्रीमती रीना सिंह, दीप्ति श्रीवास्तव, दिनेशचन्द्र शर्मा, बालेश्वर राय "व्यथित', कुमार शैलेन्द्र, मिथिलेश गहमरी, प्रदीप पुष्कल, रामधीरज राय (खोरा), अक्षयवर पाण्डेय, उपेन्द्र सिंह, फजीहत गाजीपुरी, रामनिधि राय, नागानन्द वात्स्यायन, कु. प्राची राय, संग्राम कवि, सरिता शिवम् , सुमन दूबे, श्रीमती उषा राय, डॉ. ऋचा राय,**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बवण्डर जी, परमानन्द शुक्ल, संजयकृष्ण, रामजी राय, नन्दकिशोर राय 'राकेश', माधुरी वर्मा, डॉ. रामजीत, कैलाशनाथ राय, हृदयेश सिंह 'हृदय', डॉ बच्चनप्रसाद गुप्त , केदारनाथ सिंह, दयाशंकर उपाध्याय, शंभुनाथ सिंह 'मधुप', सुरेन्द्रनाथ मिश्र, हरिनारायण श्रीवास्तव, कृपाशंकर राय, अनन्तप्रकाश वर्मा, जगदीश्वर राय, दुर्गाप्रसाद तिवारी, श्रीकृष्णचन्द्र दूबे, गोपाल तन्हा, बलदेव सिंह, हरदेव पाण्डेय, कुमारी चन्दन, सोटा, मनोज पाण्डेय मनमीत, उर्मिला तिवारी ,डॉ. रामनारायण तिवारी, हास्यकवि 'डंडा', जितेन्द्रनारायण राय, डॉ. युधिष्ठिर तिवारी ,श्रीनारायण राय, गोपालकृष्ण द्विवेदी, कामेश्वर द्विवेदी, डॉ. सिद्धेश्वर, रामदेव राय, दुबरी राय, दिनेश राय, अवधेशनारायण राय,विन्ध्याचल पाण्डेय, सत्यानन्द, रमाकान्त चतुर्वेदी, रामसिंह यादव, सीरी हरिजन, शिवमूरत यादव और डॉ. बरमेश्वरनाथ राय आदि के नाम उछले हुए हैं। परमानन्द शुक्ल (गुणउर) और सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी 'बवण्डर' (खरडीहा) हास्य रस के कवि हैं। 'बवण्डर' कवि के साथ-साथ पत्रकार भी हैं।

डॉ. जैनेन्द्र वात्स्यायन ने 'दक्षिण पूर्व एशिया में ब्रह्मा' जैसे गंभीर विषय पर शोधकार्य किया है। डॉ. सुमन दुबे (सन् १९७३ई.) ने रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य पर शोधकार्य सम्पन्न किया है। मार्मिक लोक रंग को उभारने वाली आप की भोजपुरी कविताओं के संकलन का नाम 'संसार सरगम' है कविसम्मेलन मंच, आकाशवाणी और दूरदर्शन के माध्यम से आपको बहुत ख्याति मिली है। ऐसी ही ख्याति समकालीन दूसरी कवयित्री सरिता शिवम् को भी मिली है। कवयित्री डॉ. सुमन दूबे को इंग्लैण्ड सहित यूरोप के कुछ देशों में काव्यपाठ के लिए आमंत्रित किया जा चुका है। कवयित्री सरिता शिवम् का काव्यसंकलन भी प्रकाश्य है।

डॉ.त्रिभुवननाथ 'वेणु' (सन् १९५६ई.करीमुद्दीनपुर) भोजपुरी और हिन्दी दोनों में लिखते हैं। वे कवि, निबन्धलेखक और समीक्षक हैं। पत्र -पत्रिकाओं में निरन्तर लिखते हैं। आपके निबन्धों और कविताओं के संकलन प्रकाश्य हैं। सभासंचालन में दक्ष कवि डॉ. व्यासमुनि राय की रचनायें 'सरिता' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं। आप जोगा मुसाहिब गाँव के निवासी हैं। आप के प्रकाशित शोधप्रबन्ध का नाम है 'भक्तिकालीन काव्य में नीतिपरक मान्यतायें'।

गाजीपुर के विश्वप्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक डॉ. भोलानाथ तिवारी की तीनों पुत्रियाँ, डॉ. शशिप्रभा शुक्ला, डॉ. किरणबाला शर्मा, एवं डॉ. मुकुल प्रियदर्शिनी भी अपने पिता की भाँति विदुषी हैं और भाषाविज्ञान तथा समीक्षा-क्षेत्र में सृजनरत हैं। भाषाविज्ञान और कोष के क्षेत्र में तीनों के सहलेखन और सहसम्पादन के रूप में कुछ कार्य भी हुए हैं और प्रकाशित हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्धकार **डॉ. मोहन उपाध्याय** (गहमर), ओजपूर्ण कविताओं के लिए विख्यात **मोहन कुशवाहा** (पकड़ी -रेवतीपुर), हास्यरस के प्रतिमान **गोबर गनेस** (करहिया), भोजपुरी गीतकार **वंशनारायण मनज,** नयी कविता के लिए प्रसिद्ध **राजकुमार** (हरपुर) और **राजेन्द्र सिंह** (बरुइन), गीतकार **मधुरेश** (रूहीपुर), व्यंग्यकार **प्रवीणकुमार**(भदौरा), **डॉ. मदनगोपाल सिन्हा** (जमानिया), सहृदय कवि **रामजी सिंह** (सैदपुर),और **स्व. वंशराज सिंह** (दिलदारनगर) ने अपने-अपने क्षेत्र में बहुत यश अर्जित किया। इन लोगों की रचनाओं के संकलन प्रतीक्षित हैं।

चन्द्रभान मिश्र, मनोज, संजय 'सैदपुरी', त्रिभुवननाथ पाण्डेय, सूर्यनारायण पाण्डेय 'अज्ञ', नन्दलाल यादव और **आनन्द प्रधान** के नाम भी रचनाकार के रूप में आदर के साथ लिये जाते हैं। **पुरुषोत्तम वर्मा** (ग्राम जंगीपुर- सन् १९५६ई.) चित्रकार, कवि और कहानीलेखक हैं। आपकी कविताओं का संकलन प्रकाश्य है। आपके कहानीसंकलन का नाम 'बदलाव' है।

जनपद के उत्साही सर्जकों में गाजीपुर नगर के **पवनकुमार वर्मा** ने पर्याप्त प्रसिद्धि पाई है। ये बालसाहित्य-लेखक हैं। इनकी लघुकथायें और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। 'जंगल की एकता ' नामक एक पुस्तक प्रकाशित है जो नागरी बालसाहित्य संस्थान, बलिया से पुरस्कृत हो चुकी है। आपको 'साहित्यश्री' उपाधि के अतिरिक्त कई संस्थाओं से सम्मान प्राप्त हो चुका है।

अजीतकुमार राय (१९६७) की महत्त्वाकांक्षी और गंभीर काव्यकृति 'आस्था अभी शेष है' सन् १९९७ में नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से प्रकाशित हुई। इस कृति की सफलता से कवि को बहुत ख्याति मिली। अध्यापन, चित्रकला, संगीत, समीक्षा और अभिनय आदि से जुड़े अजीतकुमार राय में ध्यानाकर्षक सृज़नप्रतिभा, सम्प्रेषणशक्ति और शिल्पक्षमता का दर्शन होता है। अजीतकुमार की आस्थावादी विचारधारा में प्रौढ़ता और गाम्भीर्य है।

नवगीत क्षेत्र में **उमाशंकर तिवारी** के बाद उछला नाम है मुहम्मदाबाद के सिद्ध कवि **कपिलमुनि 'पंकज'** का। आपका लोकप्रिय काव्यसंकलन 'जलते गीत हथेली पर'सन् १९४६में प्रकाशित हुआ। नवगीत के साथ आप सफल गजलकार हैं। सिद्ध संत पवहारी बाबा (कुर्था) के वंशज कवि **रंगनाथ 'राकेश'** की ध्यानाकर्षक काव्यकृति का नाम 'एक चिरकुमारी के अनुत्तरित प्रश्न' है। आपकी दो पुस्तकें पवहारी बाबा पर भी हैं।

बबेड़ी गाँव के कवि **राजाराम तिवारी** कविता के अतिरिक्त निबन्ध और नाटक भी लिखते थे। आपके नाटक 'कप्तान मोहन' और 'प्रस्थान' तथा काव्यकृति 'अर्घदान' प्रसिद्ध हैं। **विष्णुदत्त पाण्डेय विलीन** (गहमर, १९६०) की कविताओं के संकलन 'वितृष्णा' और 'तेरे लिए' हैं। आप कवि के साथ साथ निबन्धकार भी हैं। आपके नये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्यसंकलन का नाम 'संयम' है। पीथापुर के **त्रिवेणीप्रसाद 'खालिश'** हिन्दी - उर्दू दोनों भाषाओं के सफल रचनाकार हैं। आपकी कृतियाँ 'नवीन भारत','आधुनिक चिन्तन,' 'उद्बोधन' और 'इल्तजा' (उर्दू) हैं।

रामयश सिंह (गहमर) का प्रबन्धकाव्य 'भोजप्रबन्ध', **जनार्दन सिंह** की दो रोमानी काव्यकृतियाँ 'मधुयामिनी' और 'जागृति', **कामेश्वर दूबे** (पुरैना) का खण्डकाव्य 'महीमयंक', **रविकुमार 'मयंक'** की काव्यकृति 'रोमांस', **प्यारेलाल** की कृति 'गड़बड़झाला', **अतवारूलाल़ 'मुग्ध'** की काव्यकृतियाँ 'देवव्रती' और 'तुलादान', और **डॉ. ब्रह्मानन्द सिंह** (महाविद्यालय, गाजीपुर) की काव्यकृति 'प्रणय प्रलय' है। **डॉ.वेदप्रकाश पाण्डेय** (बड़ौरा) की दो काव्यपुस्तकें 'एक कड़ी गीत की' और 'दरख्त की व्यथा' प्रकाशित हैं।

कनुआन गाँव के **रमापति पाण्डेय** बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कवि और निबन्धलेखक हैं। आपने विवेकी राय के उपन्यास 'मंगल भवन' का नाट्यरूपान्तर 'जागे तभी सबेरा' के नाम से किया है। इसके साथ ही आपने लेखक की काव्यपुस्तक 'दीक्षा' की विस्तृत व्याख्या 'दीक्षा-दर्पण' नामक पुस्तक में की है। आपकी निबन्धपुस्तकों के नाम हैं, 'आगे मोड़ है', 'आवाज दो' और 'कुछ और तिराहे'। रमापति पाण्डेय का सन् २००२ में निधन हो गया। कनुआन गाँव के कवि **रामधीरज राय** खोरा हैं। जिन्होंने लोकभाषा भोजपुरी में फक्कड़ शैली की मार्मिक रचनायें की हैं। इनकी जीवन्त शैली सामान्य से भिन्न रही है और ये विवेकी राय के कई उपन्यासों में टिपिकल आंचलिक पात्र के रूप में उपस्थित मिलते हैं।

हरपुर गाँव के **वीरेन्द्र सारंग** (१९५८) कवि और कथाकार हैं। 'कोण से कटे हुए' और 'हवाओ, लौट जाओ' आप के काव्यसंकलन हैं तथा 'वज्रांगी' आप का उपन्यासग्रन्थ है। महाकवि श्रीकृष्ण राय हृदयेश की नतिनी **डॉ. ऋचा राय** लेखिका और समीक्षक हैं। उन्होंने 'हृदयेश' जी के पूरे साहित्य का गंभीर अध्ययन कर उसके वस्तु तथा शिल्प तत्त्व को विश्लेषित कर एक शोधप्रबन्ध पूर्वांचल विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया जिस पर उन्हें (विद्यावाचस्पति) पी.एच-डी. की उपाधि प्राप्त हुई ।

गाजीपुर के भोजपुरी -रत्न भोलानाथ गहमरी के पुत्र -पुत्रियों में **हेमन्तकुमार** (न्यायाधीश के रूप में बिहार में कार्यरत) **ज्योत्स्ना गहमरी** और **मृदुललता** में काव्य प्रतिभा है। यहाँ के कवि प्रेमशंकर चौबे की पुत्री **संज्ञा चौबे** एक कवयित्री के रूप में उभर कर प्रसिद्धि पा चुकी हैं। श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश' की नतिनी **डॉ. ऋचा राय** की चर्चा ऊपर हो चुकी है। 'हृदयेश' जी के जीवनकाल में ही एक हृदयेश संस्थान की स्थापना **डॉ.मान्धाता राय** के संयोजन में हो चुकी थी। हृदयेश जी के दिवंगत होने के बाद **डॉ.ऋचा राय** उस संस्थान को गतिमान् बनाती हैं। इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष एक हृदयेश सम्मान प्रदान किया जाता है। यह सम्मान **डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक, डॉ.**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किशोरीलाल गुप्त और **श्री विन्ध्याचल राय 'अचल'** आदि को प्रदान किया जा चुका है।

श्री परमेश्वर राय 'राजेश' गाजीपुर में एक सर्वथा निराले कवि के रूप में स्मरण किये जाते हैं। उनका काव्यसंकलन 'किरण बाँसुरी' सन् १९६८ में प्रकाशित हुआ। आप गवर्नमेन्ट स्कूल में अध्यापक थे। मूल निवासी उजियार के थे परन्तु बाद में गाजीपुर में मकान बना लिया।

खैराबारी के **रमारमण राय** के दो काव्यसंकलनों की पाण्डुलिपियाँ सन् १९६५ में लेखक के द्वारा देखी गयी थीं। इस भावुक युवा कवि को उसके उक्त गाँव में सन् १९५६ ई. में सम्पन्न हुए विराट् कविसम्मेलन से काव्यप्रेरणा मिली थी। कविसम्मेलन इस क्षेत्र की एक संस्था अन्तरग्रामीय सुहृद-साहित्य गोष्ठी के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर हुआ था। अधिवेशन का उद्घाटन आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ने किया था और रात में सम्पन्न हुए कविसम्मेलन की अध्यक्षता महाकवि श्यामनारायण पाण्डेय ने की थी। इस अवसर पर गाजीपुर, बलिया और वाराणसी के लगभग पचीस कवियों ने कवितापाठ किया था।

कासिमाबाद के कवि **यशवन्त सिंह 'यश'** ने अपनी काव्यप्रतिभा से पर्याप्त ख्याति अर्जित की। आप महाकवि श्यामनाराण पाण्डेय के शिष्य हैं।

डॉ. कृष्णकुमार सिंह (१९६०) कवि और समीक्षक हैं। आपके प्रकाशित शोध-प्रबन्ध का नाम 'संतकाव्य के विकास में वर्ण, जाति और वर्ग की भूमिकाएँ' है। आप करीमुद्दीनपुर गाँव के निवासी हैं। **डॉ. उदयप्रताप सिंह** ने डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह के ऊपर विशेष कर उनके रामकाव्य से सम्बन्धित संग्रहों पर महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किया है। **डॉ. अवधविहारी राय** (१९३६शेरपुर) के पकाशित शोधप्रबन्ध का नाम 'पंत की काव्यगत मान्यताएँ और उनका काव्य' है। डॉ. विनीता राय के प्रकाशित शोधप्रबन्ध का नाम 'मूल्य और मूल्यसंक्रमण का रामदरश मिश्र के उपन्यासों के सन्दर्भ में अनुशीलन' है।

श्री हरिवंश पाठक 'गुमनाम' का बहुप्रतीक्षित गजलों का संग्रह 'घाव बड़े काम आ गये' नयी सहस्राब्दी में प्रकाशित हुआ। कवि **नरेन्द्र श्रीवास्तव** की कृतियों के नाम हैं, 'शाम हुई चौराहे जागे' और 'हम हैं ईमानदार लोग'।

कमसड़ी गाँव के **रामजी राय** में बचपन से ही अप्रतिम साहित्यिक संस्कार रहा। निबन्ध, समीक्षा और काव्यक्षेत्र में उनके भीतर समान रूप की सृजनात्मक गति देखी गयी। युवावस्था में ही किसी कारणवश कुछ मानसिक सन्तुलन खोकर अज्ञातवास में चले गये और 'सदानीरा' आदि उनकी कविता सम्बन्धी पांडुलिपियाँ अप्रकाशित रह गयीं। एक दूसरे **राम जी राय** बलुआ तराँव के निवासी थे और उच्चकोटि के चित्रकार थे। चित्रकला के साथ कविता और ललितनिबन्ध लिखा करते थे। करीमुद्दीनपुर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इंटरकालेज में प्राचार्य पद पर कार्यरत रहते हुए उनका असामयिक निधन हो गया। **इन्द्रजीत राय, स्वामीनाथ, रामचन्द्र सिंह यादव, गोवर्धन राय नामी, चन्द्रभान मिश्र, कैलाश पासवान, प्यारेलाल, प्रसिद्धनारायण सिंह, रामजन्म राम, इन्दीवर, राम अवध सिंह यादव, श्रीवर, हरिद्वार प्रेमी, मुधरेश** और **आशुतोष** के नाम भी रचनाकारों की पंक्ति में उभरते हैं।

उक्त बलुआ तराँव गाँव ने एक और कलाकार दिया **रमेशकुमार राय**। इन्होंने छः हजार फीट लम्बा एक क्रम का एक ही रेखाचित्र तैयार कर कीर्तिमान स्थापित किया। इन्होंने प्रधानमन्त्री अटलविहारी वाजपेयी की कविताओं के भावों का रेखांकन कर प्रतिष्ठा अर्जित की है।

रचनाकार न होते हुए भी हिन्दी साहित्य के अध्येता और उच्च साहित्यिक रुचि सम्पन्न **विजयशंकर राय** (वरिष्ठ अधिवक्ता) ने एक ध्यानाकर्षक साहित्यसेवा की है। विगत आधी शताब्दी से मृतप्राय पड़ी गाजीपुर की नागरी प्रचारिणी सभा को उन्होंने नयी शताब्दी में पुनर्जीवित किया है। इस संस्था को सन् १९५२ में पंडित कमलापति त्रिपाठी और गाजीपुर के समाजसेवी पं. लक्ष्मीनारायण पाण्डेय ने मिलकर स्थापित किया था और एक विशाल भवन तथा भव्य पुस्तकालय खड़ा हुआ था। सन् ६७-६८ के आसपास जब प्रसिद्ध नाटककार चन्द्रगुप्त विद्यालंकार किसी पारिवारिक आघात से आहत होकर भारतभ्रमण कर रहे थे तो वे इसी क्रम में गाजीपुर आये थे और इसी नागरी प्रचारिणी सभा-भवन में उनका स्वागत हुआ था। अपने जीवनकाल में **पं. लक्ष्मीनारायण पाण्डेय** इसके तत्त्वावधान में निरन्तर साहित्यगोष्ठियों का आयोजन किया करते थे। श्री विजयशंकर राय इस समय इस संस्था के अध्यक्ष हैं। सन् १९५२ गाजीपुर के लिए बहुत शुभ सिद्ध हुआ। इसी वर्ष में साहित्यिक संस्था नागरी प्रचारिणी सभा के साथ-साथ स्वामी शरणानन्द जी महाराज की प्रेरणा से मानव सेवा संघ यहाँ बना। उस धार्मिक आध्यात्मिक संस्था के पास भी विशाल भवन है।

नागरी प्रचारिणी सभा, गाजीपुर की एकमात्र साहित्यिक संस्था है जिसके पास स्वतंत्र भवन है। भविष्य में इसके माध्यम से यहाँ की साहित्यिक गतिविधियों में निखार आ सकता है। गाजीपुर में दूसरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था **डॉ. शिवमूरत सिंह** द्वारा संचालित माध्यम है जो नाट्यसंस्था है। इस संस्था का 'नाट्यमन्दिर' नाम का एक स्वतंन्त्र भवन गाजीपुर के कपूरपुर मुहल्ले में खड़ा होने जा रहा है। प्रशासन विशेष कर साहित्यकार अपर जिलाधिकारी **श्री राकेश चन्द्रा** के सहयोग से जिस दिन यह नाट्यमन्दिर खड़ा हो जाएगा उस दिन डॉ. शिवमूरत सिंह की दो दशक की तपस्या पूर्ण हो जाएगी और गाजीपुर में रंगधर्मी सांस्कृतिक रुचि के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरा एक 'हिन्दी भवन गाजीपुर' का सुखद स्वप्न है जिसे भविष्य में यथार्थ रूप लेकर जमीन पर खड़ा होना है। सन् १९८१ में **डॉ. मान्धाता राय** ने पुस्तकालय सहित इस हिन्दी भवन के लिए प्रयास किया था। उस समय **श्री सुबोधनाथ झा** जिलाधिकारी थे। वे साहित्यिक रुचि सम्पन्न होने के साथ साथ साहित्यकारों को सम्मान देने वाले अधिकारी थे। आप सन् १९७८ से ८१ तक गाजीपुर में रहे और इन तीन वर्षों के भीतर एक बहुत उत्साहवर्धक और सार्थक साहित्यिक वातावरण बना रहा। उस समय हिन्दी -भवन की पूरी योजना बन गयी थी और लगता था कि हिन्दी भवन का सपना साकार हो जायगा। परन्तु उनका तभी स्थानान्तरण हो गया और वह सपना सपना ही रह गया। वास्तव में यही सार्वजनिक पुस्तकालय सहित हिन्दी भवन गाजीपुर के साहित्यसेवियों और बुद्धिजीवियों के लिए भविष्य की चुनौती है। देखना है इस चुनौती को कौन स्वीकार करता है और किसके हाथों यह सपना साकार होता है।

गाजीपुर के साहित्याकाश में उसमान, आसी, राही मासूम रजा और रज़ी अहमद 'बेखुद' की परम्परा आगे बढ़ती है तो यहाँ मुसलमान साहित्यकारों की नयी सृजनशील पीढ़ी हिन्दी की सेवा में संलग्न दीखती है। वर्तमान विश्व की धार्मिक राजनीतिक बिडम्बनाओं पर आधारित **शाह जावेद अहमद खाँ** की पुस्तकें 'धर्मयुद्ध' और 'नयी रोशनी' प्रकाशित हैं। **दानिश जमाल सिद्दीकी** के गजलों का संकलन 'जंगल हरा है' प्रकाशित है। यूसुफपुर के **सरफराज़ अहमद आसी** की बासठ हिन्दी कविताओं का संकलन 'मैं कवि हूँ' बहुत सजधज के साथ प्रकाशितं है। इसी प्रकार **सैफुर्रहमान अब्बाद, अजीज गाजीपुरी, खुर्शीद खाँ, साजिद गाजीपुरी, रईस शहीदी, इन्तजार अहमद, कासिद बकार फरीदी, शहजाद वारसी** और **डॉ.हारून रशीद खान** आदि लोग रचनात्मक स्तर पर सक्रिय हैं। वारसी साहब ने 'सार्थवाह' नामक त्रैमासिक का सम्पादन किया है और **डॉ. हारून रशीद खान** ने विविध पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहने के साथ साथ हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के साक्षात्कारलेखन में सफलता पायी है। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से डॉ. विवेकी राय की कहानियों पर शोधकार्य सम्पन्न किया है। **सैफुर्रहमान अब्बाद** का कहानीसंग्रह 'एक आइना धूप में' अप्रकाशित है। **शेख जैनुल आब्दीन, कैसर शमीम** और **हसनैन कादरी** की मूल्यवान् और स्मरणीय सेवायें रचनात्मक साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही क्षेत्रों में मिली हैं। **शेख जैनुल आब्दीन** कवि, कहानीलेखक और निबन्धलेखक हैं। सोनभद्र जनपद के आदिवासियों का आपने अपनी रचनाओं में चित्रण किया है। **डॉ. अर्जुनदास केसरी** के साथ सहयोगी लेखक के रूप में प्रस्तुत आप की प्रसिद्ध कृति का नाम है– 'एक आँख गंगा एक आँख सोन'। **अलीशेर खाँ** (करीमुद्दीनपुर) की कृतियों के नाम हैं, 'शीशे का मसीहा', 'तोहार घर कहाँ ह ए बाबू' और 'उर्दू के विकास में गाजीपुर का योगदान'।

जनाब **उबैदुर्रहमान** 'जयन्तिका' (गाजीपुर) के प्रमुख लेखक हैं। उन्होंने गाजीपुर जनपद से सम्बन्धित अनेक ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक महत्त्व के प्रामाणिक निबन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखे हैं। उनके गंभीर अनुसंधानमूलक निबन्धों से गाजीपुर के इतिहास पर, विशेषकर मुस्लिम काल पर तथ्यपरक नयी रोशनी पड़ती है। इस प्रकार के शोधमूलक लेख लिखने वाले आप गाजीपुर में अकेले लेखक हैं। आपका एक मानक कार्य सूफी सन्तों के इतिहास पर है जो ११००ई. से १९४७ के बीच के समय को रेखांकित करता है। इस पुस्तक का नाम 'तजकेरा-मशाएखे-गाजीपुर' है। इसमें गाजीपुर के १३४ सूफी सन्तों का वर्णन है। इस ऐतिहासिक उर्दू ग्रन्थ का लोकार्पण अलीगढ़ मु. विश्वविद्यालय के एक भव्य समारोह में कुलपति एम. हामिद अंसारी के हाथों हुआ। इसका शीघ्र ही हिन्दी अनुवाद होने वाला है। **नफीस आलम** (हंटर गाजीपुरी) अपनी व्यंग्यरचना के लिए प्रसिद्ध हैं। उसियाँ गाँव के जनाब **हारून रशीद** साप्ताहिक ब्लिट्ज और 'इन्कलाब' नामक बम्बई के दो प्रसिद्ध पत्रों के सम्पादक हैं।

पं. काशीनाथ द्विवेदी (सन् १९२७-२०००) संस्कृत के विद्वान् थे। इनका ग्रन्थ 'वाक्यपदीयम्' पाँच भागों में है परन्तु अबतक अप्रकाशित है। संस्कृत का यह अतिजटिल ग्रन्थ वास्तव में संस्कृत का व्याकरणदर्शन है। इन्होंने अभिज्ञानशाकुन्तलम् पर एक मार्मिक विश्लेषणात्मक पुस्तक की रचना की थी। आप संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी तीनों भाषाओं के ज्ञाता थे। आप का एक मार्मिक काव्यग्रन्थ 'विनोद पंचशती' अप्रकाशित है। सवैया छन्द में लिखे इस काव्य में विविध प्रतीकों के माध्यम से गहन जीवनानुभूतियों को चित्रित किया गया है। आपको अभिज्ञानशाकुलन्तम् पर राज्य सरकार द्वारा पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

गाजीपुर में **पं. नारायणदत्त त्रिपाठी** (खरडीहा) से लेकर ब्राह्मणपुरा के दूबे बन्धुओं तक संस्कृत के विद्वानों की एक श्रेष्ठ परम्परा है। इस परम्परा में पद्मश्री **कपिलदेव द्विवेदी** सर्वाधिक ध्यानाकर्षक हैं। दूबे बन्धुओं में **यशोधर दूबे, मधुकर दूबे** और **मानव दूबे** ने क्रमशः वात्स्यायन के कामसूत्र, वेदान्त पर मधुकरी टीका और मनुस्मृति पर काम किया है।

डॉ. गंगासागर राय संस्कृत के बहुचर्चित विद्वान् हैं। आपका जन्म शेरपुर में १९४८ ई. में हुआ। आप काशिराज पुराण न्यास विभाग में अनुसंधान-रत हैं। आपकी लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'शाखाज इन वेदाज' आपका प्रसिद्ध ग्रन्थ है। महाकवि भवभूति और राजशेखर आदि से सम्बन्धित आप की कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

पं. रामचन्द्र शर्मा (१९४३), संस्कृत विभागाध्यक्ष, स्वामी सहजानन्द पी.जी. कालेज, ने 'संस्कृत व्याकरण बोध ' नामक एक पुस्तक लिखी जो सन् १९६६ ई. में दिल्ली से प्रकाशित हुई। आप ने पुरानी श्रद्धास्पद सर्जक और देश को दिशा देने वाली पीढ़ी के उत्तराधिकारी की हैसियत से स्वामी सहजानन्द सरस्वती की परम्पराओं और मूल्यवान् धरोहरों को सुरक्षित रखने का एक ध्यानाकर्षक कार्य किया है। आपने स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृतिकेन्द्र की स्थापना कर उसे निष्ठापूर्वक सक्रिय रखा है। इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृतिकेन्द्र द्वारा स्वामी जी की अनेक अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन हुआ है। स्वामी जी की अन्यान्य पुस्तकों और भाषणों को प्रकाशित करने के साथ ही उनसे सम्बन्धिंत चित्रों, पत्रों और संस्मरणों को प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना है। यह स्मृतिकेन्द्र स्वामी जी की पुस्तकों के पुनर्मुद्रण की दिशा में भी प्रयत्नशील है। पं रामचन्द्र शर्मा देवा गाँव के निवासी हैं तथा स्वामी जी के भतीजे हैं। आपका आरंभिक जीवन स्वामी जी के आश्रम में बीता है।

देवरिया (जमानिया) के **डॉ. व्रजमोहन चतुर्वेदी** संस्कृत के विद्वान् थे। इनकी पुस्तक का नाम है 'रससिद्धान्त के अनालोचित पक्ष'। इसके अतरिक्त सांख्यकारिका, महिमभट्ट और क्षेमेन्द्र पर भी इनकी लिखी पुस्तकें प्रकाशित हैं। ये आगरा विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागों में प्रोफेसर, अध्यक्ष रहे। आप भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान परिषद् के निदेशकमंडल के सदस्य भी रह चुके हैं।

डॉ. विश्वनाथराम वर्मा राजकीय महाविद्यालय, मुहम्मदाबाद में संस्कृत विभागाध्यक्ष हैं। आप ने अथर्वप्रातिशाख्य तथा पाणिनीय व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन कर एक विद्वत्तापूर्ण शोधग्रन्थ प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त आप के अन्य शोधग्रन्थों के नाम हैं 'शौनकीया चतुरध्यायिका: एक अनुशीलन', 'प्रातिशाख्यों तथा शिक्षाग्रन्थों में विहित ध्वनिविज्ञान' और 'शुक्लयजुर्वेदीय शिक्षाग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन'। आप गाजीपुर जनपद के पड़ोसी गाँव मँगारी (वाराणसी) के निवासी हैं।

रेवतीपुर की निवासिनी **डॉ. विमला राय** (संस्कृत विभागाध्यक्ष पी. जी. कालेज, जमानिया) ने प्राचीन आर्ष साहित्य का गंभीर अध्ययन किया है। उनकी कृतियों के नाम हैं, वेदकालीन समाज और संस्कृति, पुरुषसूक्त और नृमेध तथा हनुमत् स्तोत्र (हिन्दी भाष्यसहित) आप कुशल कवयित्री भी हैं। आपकी कवितायें 'अतीत की धरोहर' में संकलित हैं। रामचरितमानस का संस्कृत में काव्यानुवाद करने वाले **पंडित तुलाराम चतुर्वेदी** ने संस्कृत मे एक 'ब्रह्म्म रामायण' भी लिखा था।

नये दौर में धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना सम्पन्न सर्जकों का गाजीपुर जनपद में अभाव नहीं है। कवि **केदारनाथ भारती** की कृति 'भक्त और भगवान्' सन् १९७९ में प्रकाशित हुई। इसके पूर्व इनकी 'श्री रामरसायन' और 'वीर बजरंगी' नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं। रामभक्ति से जुड़ी इनकी कई और पुस्तकें बाद में प्रकाशित हुईं। इनकी कुल काव्यकृतियों की संख्या लगभग एक दर्जन बतायी जाती है। गुणउर गाँव के **श्रीनिवास चतुर्वेदी** की कृति 'सम्बल शेष' में महावीर हनुमान् को आधार बनाया गया है। इसमें उच्च कोटि का कवित्व लक्षित होता है। आपका एक और काव्यसंकलन 'एक अंजुरी धूप' प्रकाशित हुआ है। महावीर हनुमान् पर आधारित गाजीपुर के कवि **विजयशंकर त्रिपाठी** की पुस्तक 'हनुमत विनय बतीसी' बहुत प्रसिद्ध हुई। 'दुर्गा चालीसा' नामक एक और पुस्तक उन्होंने लिखी। विजयशंकर त्रिपाठी की उक्त दोनों पुस्तकों के कैसेट बनकर बहुत लोकप्रिय हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य **दवाशंकर चतुर्वेदी** मानसमर्मज्ञ व्यक्ति हैं। उनकी दो पुस्तकें 'मानस में लोकदर्शन' और 'भारत की पहचान श्रीराम' उच्च बुद्धिजीवी क्षेत्रों में समादृत हुई हैं। करीमुद्दीनपुर के **श्री गौरीशंकर चतुर्वेदी** (रामकथा वाचक) ने भुड़कुड़ा के भीखा साहब के पदों पर एक विश्लेषणात्मक टीकाग्रन्थ 'भीखा की मर्मभेदी पुकार' सन् १९९५ में प्रकाशित किया है। आपने एक समीक्षाग्रन्थ भी लिखा है। भुड़कुड़ा के सन्तों पर **डॉ. इन्द्रदेव सिंह** का मानक कार्य बहुत प्रशंसित है।

संतपरम्परा के एक साधक कवि **संत मँगरूसाहब** भी गाजीपुर जनपद से जुड़े हैं। इनका कार्यकाल बीसवीं शताब्दी है और इनके शिष्य **सहदेव साहब** ने इनकी बानियों का संग्रह 'संत मँगरू साहब की बानी' के नाम से दो भागों में प्रकाशित कराया है। इनकी समाधि मठिया (गुणउर) में है जिसकी देखरेख **श्री विजयबहादुर पाण्डेय** करते हैं और प्रतिवर्ष वसन्त पंचमी के दिन इस संत साहब की समाधि पर समारोह होता है।

महामण्डलेश्वर पवहारी **श्री बालकृष्ण यति जी** महाराज (अध्यक्ष सिद्धपीठ, हथियाराम मठ) की लिखी 'श्रीमद्भागवत चिन्तन' आध्यात्मिक विषय की श्रेष्ठ पुस्तक है। गाजीपुर के **वाराणसीप्रसाद त्रिवेदी** ने गीता का सुबोध छन्दानुवाद किया था। **प्रो. रामदास राय** (सुवहल) ने मनुस्मृति का हिन्दी अनुवाद किया था।

ताजपुर डेहमा के **मदनमोहन चतुर्वेदी** (एडवोकेट) ने एक दोहे-चौपाई में विशाल ग्रन्थ 'शाश्वत रामायण' लिखा है जो अप्रकाशित है। कवि का दावा है कि इसमें उन्होंने नाना पुराण निगमागम का समुचित उपयोग किया है।

किसुनीपुर के **राम अवतार पाण्डेय** की एक कृति रामायण पर आधारित है और दोहा छन्द में है। आपकी रचनायें धर्म और नीति से जुड़ी होती हैं। गायघाट के **राम उपदेश सिंह** का उपनाम 'विदेह' है और ये विदेह भाव में ही सृजनरत हैं। आप की रचनाओं में 'भागवत महिमायन' प्रसिद्ध है। 'भारत भाग्य विधाता' नामक आप का एक काव्यसंग्रह भी है। ब्राह्मणपुर के **आनन्दकृष्ण** भक्ति सम्बन्धी अपनी रचनाओं के लिए विख्यात थे। **इन्द्रदेव सिंह 'इन्द्र'** की कृति 'सत्य चिन्तन' अपने नाम के अनुरूप प्रभुप्रेम की प्रेरणा तथा ज्ञानभक्ति - चिन्तन से ओतप्रोत है। सैदपुर के **महादेवराम विश्वकर्मा** ने 'कृष्णमूर्ति का शिक्षादर्शन' नामक एक बहुत गंभीर मूल्यवान् और चिन्तनपरक ग्रन्थ की रचना की है। इस ग्रन्थ में विश्वविख्यात दार्शनिक और चिन्तक कृष्णमूर्ति के लगभग समस्त विचारों का मन्थन हो गया है।

गहमर गाँव के **रामनाथ उपाध्याय 'राकेश'** की तीन आध्यात्मिक मूल्य -सम्पन्न पुस्तकें प्रकाशित हैं, राकेश रश्मि, राकाचन्द्रिका, तथा शशिप्रभा तन्त्री। आप भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के पक्षधर विद्वान् हैं। आप की रचनायें उपदेशमूलक होती हैं। गहमर के एक चिन्तनप्रधान लेखक ने 'ज्ञान विज्ञान' नामक आध्यात्मिक ग्रन्थ की रचना की है आपका नाम **मान्धाता सिंह** है।

सन् २००२ के आरम्भिक महीनों में **डॉ. चन्द्रबली 'हंस'**(१९५२ ई.) के तत्त्वावधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में एक अभ्युदय नामक आध्यात्मिक संस्था गाजीपुर में खड़ी हुई उससे 'अमृत कलश' नामक एक त्रैमासिक आध्यात्मिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। अपने साथ 'शक्ति अंक', 'रामांक' और 'शिवांक' नामक तीन विशेषांकों की योजना लेकर इसका प्रथम अंक हनुमत विशेषांक अप्रैल २००२ में प्रकाशित हुआ। आपके प्रमुख सहयोगियों में **डॉ. इन्द्रदेव सिंह, जगदीश्वर प्रसाद 'मारुति किंकर', विजयशंकर त्रिपाठी** और **अनन्तदेव पाण्डेय** हैं।

भारतप्रसिद्ध संत **श्री स्वामी शरणानन्द जी** ने एक युग तक अपने सामयिक प्रवास के साथ 'मानव सेवा संघ' की सन् १९५२ में स्थापना करके अपनी गंभीर सत्संगसभाओं से इस जनपद की मनीषा को निखार दिया । गोराबाजार के **श्री राधामोहन राय** के पास जो उनके अनन्य शिष्य हैं, उनके लिखे सैकड़ों पत्र सुरक्षित हैं। वे पत्र वास्तव में एक मूल्यवान् धरोहर हैं। स्वामी जी की छोटी बड़ी पुस्तकों की संख्या चालीस से ऊपर है। इनमें 'मानवदर्शन', 'साधन तत्त्व', 'पाथेय', 'दर्शन और नीति', 'जीवन दर्शन' और 'मानवता का मूल सिद्धान्त' बहुत प्रसिद्ध हैं।

डॉ. सुधाकर तिवारी (विश्वम्भरपुर, सन् १९३२) ने विश्वप्रसिद्ध चिन्तक कृष्णमूर्ति के अंग्रेजी भाषणों का हिन्दी रूपान्तर किया है। आप राजघाटस्थित बेसेन्ट स्कूल में हिन्दी अध्यापक रहे। कृष्णमूर्ति जी जब भी राजघाट आते, उनके भाषणों की व्यवस्था आप करते रहे। कृष्ण जी की विचारधारा में उनका ऐसा प्रवेश है कि चलते अंग्रेजी भाषण के बीच उनका हिन्दी रूपान्तर भी चलता जाता था। 'सीखने की कला' और 'ध्यान' नाम से कृष्णमूर्ति की दो पुस्तकों का आपने भावानुवाद किया है।

परमहंस आश्रम तमलपूरा, गाजीपुर (केन्द्रीय आश्रम ,कोड़ारी, गोरखपुर) के **श्री स्वामी आत्मानन्द जी** ने अनेक आध्यात्मिक पुस्तकों की रचना की है। उनके ग्रन्थ 'जीवनमुक्ति दर्पण' और 'वैराग्य मार्तण्ड' प्रसिद्ध हैं। राष्ट्रीय एकता मंच (दिल्ली) से जुड़े **वीरेन्द्र भारत** (ग्राम रेवतीपुर) ने दक्षिणी भारत के सिद्ध सन्त श्री साईं बाबा के जीवनचरित्र से सम्बन्धित एक मार्मिक पुस्तक लिखी है। गाजीपुर -स्थित खिड़कीघाट पर एक **सन्त गैब बाबा** रहा करते थे जो भुड़कुड़ा की सन्तपरम्परा से जुड़े थे। उन्होंने वहाँ के सन्तों पर एक मौलिक पुस्तक की रचना की है। भीखा,गुलाल आदि सन्तों की तेरह सौ वाणियों (पदों) का एक संकलन भुड़कुड़ा गद्दी के महंथ बाबा **रामबरन दास** जी ने प्रकाशित कराया है।

'कल्याण' के नियमित लेखक के रूप में ख्याति अर्जित करने वाले और अनेक आध्यात्मिक ग्रन्थों के रचयिता **'चक्र' जी** मूलतः गाजीपुर के तुर्कवलिया गाँव के निवासी हैं। यही उनका जन्मस्थान भी है। बाद में उनके पिता सकलडीहा के पास भेलहरा में जाकर रहने लगे। 'चक्र जी' ने मथुरा से एक आध्यात्मिक पत्रिका का, प्रकाशन किया था। उसका नाम था 'श्रीकृष्ण-सन्देश'। इस पत्रिका के पचीसवें वर्ष का अंक उनके श्रद्धांजलि -अंक के रूप में प्रकाशित हुआ था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. रमाशंकर पाण्डेय (उतरौली -सन् १९२०) कवि, निबन्धकार, पत्रकार और बालसाहित्य -मर्मज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। आपका कार्यक्षेत्र जमशेदपुर है। ८६ वर्ष की आयु में आप की 'जन जन के राम' नामक एक मर्मस्पर्शी आध्यात्मिक पुस्तक प्रकाशित हुई। डॉ. रमाशंकर पाण्डेय की लिखी दो और आध्यात्मिक पुस्तकें हैं 'भारतीय संस्कृति का सौरभ' और 'योगी कृष्ण'।

डॉ. रामनयन सिंह (१९२९) पूर्व मनोविज्ञान -विभागाध्यक्ष पी.जी. कालेज, गाजीपुर विपश्यना (योग-साधना) के साधक और आचार्य हैं। अपने गहरे अनुभवों को सँजोकर आप इस बौद्धधर्म -साधना पर एक पुस्तक तैयार कर रहे हैं। आपकी अन्य पुस्तकों के नाम हैं,'महात्मा गौतम बुद्ध के आधारभूत तीन प्रवचन' और 'दिव्य जीवन की खोज में'।

श्री राजेन्द्रनाथ खरे ने कोयलाघाट पर एक 'रमणगृहम्' का निर्माण किया है। उनके तत्त्वावधान में महर्षि रमण की दो पुस्तकों, 'सेल्फ रियलाइजेशन' और 'हु एम -आई' का क्रमशः हिन्दी और भोजपुरी में रूपान्तर कराया जा रहा है। 'सेल्फ रियलाइजेशन' का हिन्दी रूपान्तर **श्री के.डी. राय** (नगसर) न्यायाधीश कर रहे हैं। खरे साहब ने महर्षि रमण से संबन्धित कुछ कविताएँ भी लिखी हैं।

अघोरपंथ के भारतप्रसिद्ध संत बाबा कीनाराम पर एक पुस्तक सैदपुर के **स्वामीनाथ पाण्डेय** ने लिखी है। बाबा का देवालय और उनकी एक साधनास्थली ग्राम देवल (जमानिया) में है। पाण्डेय जी ने एक रचनाकार के रूप में कई पुस्तकें लिखी हैं।

श्रीमद् आद्यशंकरादित्य प्रज्ञाधाम गंगा घोष (कुर्था) के अधीक्षक परिव्राजक स्वामी **ज्ञानानन्द सरस्वती** ने श्रीमद् आद्यजगद्गुरु शंकराचार्य के कालसंशोधन पर एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिसमें प्राच्य और पाश्चात्त्य विद्वानों के काल-निर्णय में तेरह सौ वर्षों का अन्तर पड़ रहा है। स्वामी जी ने गहन शोध के पश्चात् आचार्य शंकर का आविर्भाव काल ई. पूर्व ५०९ निर्धारित किया है। इस सम्बन्ध में एक और पुस्तिका 'शंकर-श्वेतपत्रम्' में स्वामी जी के वैदिक शोधसंस्थान, वाराणसी से प्रकाशित हो रही है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयी शताब्दी और सहस्त्राब्दी के अवदान

गाजीपुर जनपद की साहित्यिक चेतना के उत्कर्ष को नयी शताब्दी और नयी सहस्त्राब्दी के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित करने चलते हैं तो हमारे सामने साहित्य सृजन के साथ ही साहित्यिक पत्रकारिता का एक उत्साहवर्धक परिदृश्य उभर आता है। इस दौर को चार गंभीर पत्रिकायें 'समकालीन सोच', 'जयन्तिका', 'परिचय' और 'रंगप्रमा' प्रभावित कर रही हैं। पिछले दौर में एक ऐसा ही प्रभाव स्वतंत्रताप्राप्ति के साथ ही बहुत प्रभावशाली और व्यापक रूप में तब सक्रिय था जब श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश' के सम्पादकत्व में साप्ताहिक 'लोक सेवक' सन् १९४९ ई० में निकला था। उसके इर्दगिर्द नये-पुराने लेखकों का एक समर्पित दल था तथा वह लगभग दो दशकों तक गांधीवाद का प्रतिनिधित्व करता रहा। इस साप्ताहिक पत्र के प्रकाशक -सम्पादक तो 'हृदयेश' जी थे परन्तु सम्पादक मंडल में **कृष्णानन्द राय** और **लक्ष्मी नारायण पाण्डेय** का नाम भी जाता था। ये लोग इसमें नियमित रूप से लिखते थे। 'गाजीपुर का इतिवृत्त' शीर्षक एक लेखमाला सन् ५४-५६ तक के अंकों में लगभग चालीस किस्तों में प्रकाशित हुई थी। जनपद के उभरे लेखकों के अतिरिक्त इसमें **श्री शुकदेव सिंह** (अब डॉ. शुकदेव सिंह) **वीरेश्वर नाथ राय, लौटू सिंह गौतम, गोपालजी स्वर्ण किरण, राजाराम तिवारी, विजयकुमार** और **सत्यनारायण गहमरी** की रचनायें भी यत्र-तत्र विखरी हुई मिलेंगी।

डॉ. कैलाश मिश्र के संयोजन में अक्टूबर १९७४ ई. में गाजीपुर की प्रथम भव्य साहित्यिक पत्रिका 'पूर्वा-१' प्रकाशित हुई। इसे नवचिन्तन का त्रैमासिक संकलन घोषित किया गया और यह गाजीपुर के वयोवृद्ध कवि श्रीनाथ मिश्र की ७१वीं वर्षगाँठ पर प्रकाशित हुई। इसके सम्पादकों में **डॉ.उमाशंकर तिवारी, कैलाश मिश्र, जितेन्द्रकुमार सिंह, परमानन्द सिंह** और **नरेन्द्र श्रीवास्तव** थे। संरक्षक **डॉ. मोती सिंह** और **जगदीश ओझा 'सुन्दर'** तथा प्रकाशक **पं. काशीनाथ द्विवेदी** थे। दस बाहर के विद्वान् इसकी परामर्शदात्री समिति में थे। इस प्रकार 'पूर्वा' ने अपनी धूमधाम के साथ प्रकाशन से एक वातावरण बनाया तथा दूसरे अंक की सामग्री की भी घोषणा पत्रिका में हो गयी। परन्तु संवाद से अधिक यह पत्रिका इस प्रकार विवाद में फँसी कि दूसरा अंक सामने नहीं आया और इस प्रकार एक सौ सोलह पृष्ठों में डिमाई साइज में प्रकाशित यह पत्रिका मर गयी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नये दौर में मार्क्सवादी सोच को लेकर 'समकालीन सोच' नाम की चातुर्मासिक पत्रिका **डॉ. परमानन्द सिंह** के सम्पादकत्व में २६जून १९८९ से प्रकाशित हुई और उत्तरोत्तर उत्कर्ष के साथ सतत प्रकाशित होती हुई इसने एक प्रभा मंडल तैयार किया। 'समकालीन सोच' पत्रिका के प्रकाशन के दस -पन्द्रह वर्ष पूर्व इस नाम के एक साहित्यिक सामाजिक बुद्धिजीवी परिवार का गठन हुआ जिसके द्वारा प्रगतिशील जनवादी चिन्तन का वातावरण बनने लगा। इस परिवार की गोष्ठियों में चिन्तन-मनन का क्रम निरन्तर चलता गया। पत्रिका के प्रकाशन से यह बौद्धिक वातावरण और सघन हो गया। पत्रिका के लेखक विविध सहयोगी और लेखक मंडल में **काशीनाथ द्विवेदी, धर्मनारायण मिश्र, रामप्रसिद्ध प्रधान, जितेन्द्रकुमार सिंह,उमाशंकर तिवारी, जितेन्द्र राय, हारून रशीद खान** और **उमाशंकर सिंह** आदि प्रमुख रहे। नये दौर में समर्पित आधुनिक बुद्धिजीवी के रूप में 'समकालीन सोच' के प्रवर्तक, संकल्पक और सम्पादक **डॉ. पी.एन.सिंह**, का अवदान बहुत मूल्यवान् है। उक्त पत्रिका के कुबेरनाथ राय, स्वामी सहजानन्द और राहुल जी पर प्रकाशित विशेषांकों के अतिरिक्त दलित लेखन, सांस्कृतिक संकट और इतिहास लेखन पर विशेषांक प्रकाशित हुए हैं। आप अपने समय के अतिप्रसिद्ध प्रखर और यशस्वी वक्ता तथा चिन्तक माने जाते हैं।

दूसरी पत्रिका 'जयन्तिका' के सम्पादक, प्रवर्त्तक और संकल्पक **डॉ.सरजू तिवारी** हैं। इसका त्रैमासिक प्रकाशन १९९९ से आरम्भ हैं। डॉ. सरजू तिवारी के सृजनात्मक अवदान की चर्चा पीछे हो चुकी हैं। इस पत्रिका के रूप में वे कर्मठता की प्रतिमूर्ति बन कर अपनी विशिष्ट बुद्धिजीवी और कर्मयोगी पहचान बनाते हैं। वे अपने निजी सोच में प्रगतिशील हैं परन्तु अपनी पत्रिका को लचीला मध्यममार्गी रूप देकर निखारते हैं। इस पत्रिका के द्वारा वे कुछ ध्यानाकर्षक और मूल्यवान् कार्य करते हैं, जैसे प्रथम तो यह कि गाजीपुर की खोयी हुई तथा विस्मृत धरोहरों, ऐतिहासिक मूल्य की वस्तुओं, स्थितियों और व्यक्तियों का उद्धार, दूसरा यह कि जनपद की सृजनात्मक प्रतिभा -सम्पन्न नयी पीढी को मंच देकर प्रोत्साहित करना और तीसरे यह कि कहीं कोने में पड़े अपूछ और भूले-भुलाये लेखकों को सम्मान देना। इन्ही कारणों से जनपद और इसके बाहर इस पत्रिका को लोकप्रियता प्राप्त होती है। डॉ. सरजू तिवारी ने अराजनीतिक और प्रमुख रूप से साहित्यिक रूप में 'जयन्तिका' को प्रतिष्ठित किया है। इस पत्रिका के सम्पादक मंडल में **युधिष्ठिर तिवारी, चन्द्रबली सिंह, संजयकृष्ण, अजितकुमार राय, हारून रशीद खान, विष्णुदत्त 'विलीन', उर्मिला तिवारी, सन्तोषकुमार सिंह, मालती तिवारी, ए.वाई. अब्बासी** और **माधुरी मिश्र** के नाम प्रकाशित होते हैं। ये लोग इस पत्रिका के नियमित लेखक भी हैं।

तीसरी साहित्यिक पत्रिका 'परिचय' है जिसके संकल्पक, प्रवर्त्तक और प्रकाशक **डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल** हैं। आरम्भ में 'सरोकार' नाम की एक साहित्यिक संस्था के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माध्यम से उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी और बाद में सन् २००० से इस संस्था के माध्यम से 'परिचय' नाम की एक दमदार पत्रिका उनके सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई। इसे उन्होंने 'नयी रचनाशीलता का अभिनव आयोजन' कहा। इस नयी ऊर्जासम्पन्न, उच्चस्तरीय, साहित्यिक पत्रिका का स्वर आधुनिक जनवादी है। यह अखिल भारतीय स्तर पर पहचान बनाने लगी है। गाजीपुर जनपद के नये लेखकों में नया उभार लाने में 'परिचय' ने अगुआई की है तथा डॉ. शुक्ल ने एक नये ऊर्जा सम्पन्न साहित्यिक वातावरण का निर्माण किया है।

चौथी महत्त्वपूर्ण पत्रिका **शिवमूरत सिंह** द्वारा प्रकाशित-सम्पादित 'रंगप्रमा' है। शिवमूरत सिंह का परिचय पीछे दिया जा चुका है। रंगप्रमा जनपद की एक मात्र पत्रिका है जो नाट्यविधा से जुड़ी है और उत्कृष्ट कोटि की गंभीर सामग्री अपने मूल्यवान् अंकों में प्रकाशित करती आ रही है।

पाँचवी पत्रिका 'जमदग्नि वीथिका' है, जो जमानिया (गाजीपुर) से **संजयकृष्ण** नाम के एक उत्साही साहित्यिक रुचि -सम्पन्न युवक द्वारा प्रकाशित सम्पादित होती है। इसका प्रकाशन सन् १९९९ में आरम्भ हुआ। साहित्य, समाज और संस्कृति के प्रति सर्मपित इस स्तरीय पत्रिका ने गाजीपुर की जनपदीय साहित्यिक चेतना को निष्ठापूर्वक जगाने का काम किया है। इस पत्रिका के प्रवेशांक में जमानिया क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों और विशिष्ट व्यक्तियों का खोजपूर्ण परिचय प्रकाशित हुआ। इसने अपने को समय की संस्कृति से सीधे सरोकार वाली पत्रिका घोषित किया है।

समय-समय पर गाजीपुर जनपद की विद्यालयीय पत्रिकाओं ने भी सांस्कृतिक और साहित्यिक स्वर वाले संग्रहणीय विशेषांकों को प्रकाशित कर एक कीर्तिमान बनाया। स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर की पत्रिका 'पाटल' सं. **डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक** का एक गाजीपुर जनपद विशेषांक सन् १९८२ में प्रकाशित हुआ। इस अंक में **डॉ. अवधेशनारायण सिंह** का लिखा हुआ लगभग एक सौ पृष्ठों का 'गाजीपुर का इतिहास' नामक एक गंभीर आलेख प्रकाशित हुआ। गाजीपुर जनपद से सम्बन्धित दूसरा विशेषांक सन् १९९० में इन्टरकालेज, मुहम्मदाबाद की विद्यालय-पत्रिका 'सोमरस' का प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक **डॉ. अवधविहारी राय** थे। स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय की पत्रिका 'निवेदिता' का 'कुबेरनाथ राय विशेषांक' **डॉ. मान्धाता राय** के सम्पादन में सन् ९७ में प्रकाशित हुआ। इसमें एक विशाल समीक्षात्मक ग्रंथ की स्तरीय सामग्री संकलित है।

गाजीपुर जनपद की एक संस्था 'साहित्य चेतना समाज' नाम से सक्रिय रहकर प्रतिवर्ष एक स्मारिका निकालती है जिसका प्रमुख स्वर साहित्यिक होता है। इस संस्था ने नयी शताब्दी के आरम्भ में अपना चौदहवाँ वार्षिकोत्सव मनाया। **अमरनाथ 'अमर', हीराराम गुप्त** और **रविनन्दन वर्मा** आदि युवा रचनाकारों द्वारा संचालित यह संस्था जनपद में साहित्यिक जागृति के अतिरिक्त नयी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रामाणिक रूप से सेवारत दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार की एक संस्था 'अन्तरग्रामीय-सुहृद-साहित्य-गोष्ठी' सन् १९५० और ६० के बीच गाजीपुर के पूर्वी करइल अंचल में सक्रिय थी। उसका संयोजन इन पंक्तियों के लेखक द्वारा होता था और उसका बहुत व्यापक प्रभाव उस क्षेत्र की साहित्यिक जागरूकता पर पड़ा था।

साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में गाजीपुर जनपद के बाहर रहकर कुछ लोगों ने कीर्तिमान स्थापित किया है। युवराजपुर गाँव के एक उत्साही युवा छात्र **योगेश विक्रान्त** ने इलाहाबाद से सन् २००१ में एक उच्चस्तरीय साहित्यिक पत्रिका 'सांस्कृतिक समुच्चय' का आरम्भ किया। इसके अंक में नये-पुराने, और हर प्रकार के सोच वाले अतिप्रसिद्ध लोगों की स्तरीय रचनाएँ देखने को मिलीं। इस पत्रिका की साजसज्जा, सम्पादन कला और छपाई- सफाई तथा अन्तरंग सामग्री को देखते योगेश विक्रान्त की साहित्य के प्रति समर्पित निष्ठा और श्रमशीलता का पता चलता है।

'पातीं'(बलिया) के सम्पादक **डॉ. अशोक द्विवेदी** के बारे में लिखा जा चुका है। **श्रीरामजन्म सिंह 'शिरीष'** सर्व सेवा संघ की पत्रिका 'नयी तालीम' का सम्पादन करते रहे। **श्री गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'**(१९३६) भोजपुरी संसद, वाराणसी की पत्रिका 'भोजपुरी कहानियाँ' (सातवें दशक में) का सम्पादन करते रहे। उन्हीं दिनों उनका भोजपुरी कहानी संग्रह 'बैरिन बाँसुरिया' प्रकाशित हुआ। **चन्द्रमा शर्मा 'रसेश'** कलकत्ते से 'देश और समाज' नाम का पत्र प्रकाशित करते रहे। 'रसेश' जी साहित्यिक सेवा के साथ ही समाज -सेवा के लिये समर्पित व्यक्ति थे। उन्होंने गाजीपुर जनपद को अपनी बहु आयामी सेवाओं से बहुत अधिक अनुगृहीत किया। उनका निधन सन् २००१ में हुआ था। कलकत्ता में हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के परीक्षाकेन्द्रों की स्थापना कर उन्होंने बंगाल में हिन्दी प्रचार के लिए अथक श्रम किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक साहित्यिक संस्था 'भारत भारती' की स्थापना कर कलकत्ते के हिन्दी साहित्यकारों को एक सशक्त मंच प्रदान किया। आप गांधीवाद से प्रभावित एक कर्मयोगी के रूप में स्मरण किये जाते हैं।

गाजीपुर जनपद के एक सपूत **लक्ष्मीकान्त 'सरस'** ने तमिलनाडु में हिन्दी-प्रचार का कीर्तिमान स्थापित किया। वे वहाँ से 'नीरा' नाम की एक साहित्यिक पत्रिका का बहुत दिनों तक प्रकाशन करते रहे। सातवें-आठवें दशक में उन्होंने मद्रास से एक 'मद्रास टाइम्स' नामक दैनिक का भी प्रकाशन किया था। इसी प्रकार **श्री कृष्णानन्द राय** लखनऊ से 'संसदीय प्रकाश' प्रकाशित करते हैं। आपने सर्वप्रथम 'गाजीपुर का संस्मरण' १९४७ में लिखा जो इस जनपद का सबसे प्रामाणिक इतिहास है। गोंड़ी गाँव के **आचार्य रामसिंहासन शास्त्री** कलकत्ते से प्रकाशित 'वीर भारत' का १९३९ के इर्दगिर्द सम्पादन करते रहे। आप संस्कृत के विद्वान् और कुशल वक्ता थे। आपकी एक पुस्तक 'लौहजंघ' नाम से प्रकाशित है।

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'गहमर गौरव' में इस गाँव के पत्रकारों और साहित्यकारों की एक प्रामाणिक तालिका प्रस्तुत की है। इसे देखकर इस महान्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के सरस्वती पुत्रों की महान् सेवा का स्पष्ट चित्र आँखों के सामने आ जाता है। इस गाँव के **शीतलाप्रसाद उपाध्याय** एक सुकवि और पत्रकार थे, वे कालाकाँकर से प्रकाशित 'हिन्दोस्थान' के उपसंपादक रहे। इसके प्रधान संपादक पं. मदनमोहन मालवीय थे। सन् १९१२ में यह पत्र बन्द हो गया था। उपाध्याय जी की काव्यपुस्तक का नाम 'शीतल सुमिरनी' है। इस गाँव के **गोपालराम गहमरी** हिन्दी पत्रकारिता के उद्भवकाल के पत्रकार हैं। इनका पत्र 'जासूस' सन् १९०० के कुछ बाद से प्रकाशित होकर १९२९ तक चलता रहा। गोपालराम गहमरी के चचेरे भाई **महावीरप्रसाद गहमरी** वाराणसी के दैनिक 'आज' के सहायक सम्पादक रहे। महावीर प्रसाद गहमरी के पुत्र **देवताप्रसाद गहमरी** 'आज' और 'संसार'(वाराणसी) दोनों के सम्पादकीय विभाग से जुड़े रहे। दिलदारनगर के **राजकुमार** 'मस्तर' नामक हिन्दी साप्ताहिक का सम्पादन करते रहे। इसी गाँव के **डॉ. जयनारायण उपाध्याय** ने वाराणसी से प्रकाशित 'जनता जनार्दन' का सम्पादन किया।

गहमर के **सत्यनारायण सिंह गहमरी (नन्दा जी)** का कर्मक्षेत्र मध्य प्रदेश रहा है। वहाँ वे विविध सरकारी सेवाओं में रहते हुए पत्रकारिता और साहित्यसृजन से जुड़े रहे। आरम्भ में गाजीपुर से प्रकाशित साप्ताहिक 'परिवर्तन' का उन्होंने सम्पादन किया, बाद में शहडोल से १९९६ में प्रकाशित 'दैनिक जनबोध' और 'शहडोल टाइम्स' की सम्पादनसेवा में लग गये। आपने सीधी से प्रकाशित 'विन्ध्यवाणी' का भी सम्पादन किया। मध्यप्रदेश शासन से पत्रकारिता के लिए आप पुरस्कृत भी हुए। 'विन्ध्यवाणी' बन्द होने पर आपने 'कामाख्या सन्देश' नामक पत्र का प्रकाशन-सम्पादन आरम्भ किया। आप की लिखी चौदह पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें 'मकड़े की जाली', 'सत्तावन की ज्वाला','राजपूत वंशावली और शिकरवार वंश','मूल रामायण','हिन्दी पत्रकारिता' और 'चौहान वंशावली ' तथा 'सीधी के चौहान' आदि प्रसिद्ध हैं। आप इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता भी रह चुके हैं। आप कोलरी मजदूरों के भी नेता रहे हैं। आप मध्य प्रदेश सरकार और कई गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा 'पत्रकार भूषण' और 'काव्यरत्न' जैसी उपाधियों से सम्मानित हो चुके हैं। अपने गाँव गहमर पर भी आपने कवितायें लिखीं जो बहुत लोकप्रिय हुई। इनकी 'मँगर सिंह' नामक नाट्यपुस्तक और 'कामाख्या माहात्म्य' को बहुत लोकप्रियता मिली। साधोपुर के **कमलाप्रसाद शर्मा** कलकत्ते में 'बंगवासी' और 'विश्वमित्र' आदि पत्रों के सम्पादक रहे।

गहमर सहित जमानिया क्षेत्र पूरे जनपद में साहित्यिक उत्कर्ष की दृष्टि से अग्रणी है। उक्त क्षेत्र के साहित्यकारों और पत्रकारों की एक सूची 'जमदग्नि वीथिका' में प्रकाशित हुई थी जिसे **डॉ. मार्कण्डेय राय** ने अपनी पुस्तक 'जमदग्नि की धरती' में परिवर्द्धित कर प्रकाशित किया। इस सूची में साठ-सत्तर हिन्दी अक्षर-पुरुषों के विवरण हैं। स्वयं मार्कण्डेय राय सोनहरिया गाँव के निवासी हैं और इनकी लिखी अन्य पुस्तकों के नाम 'सीता के राम' , 'भागीरथी', 'ब्रह्मर्षि सन्देश', 'सिलखन की दास्तान' और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गाधि की धरती' हैं।

उक्त क्षेत्र के अवशिष्ट अन्य ख्यातिलब्ध पत्रकारों में प्रसिद्ध 'गंगा' पत्रिका और पाक्षिक 'सेनापति' के सम्पादक **पं. रामगोविन्द शास्त्री** का नाम बहुत प्रसिद्ध है। 'देश', 'तरुण भारत', 'लोकसंग्रह', 'राष्ट्रभाषा' और 'नवभारत टाइम्स' के सम्पादक **पं. बटुकदेव शर्मा**, 'साधना' और 'सिद्धांजना' के सम्पादक **पं. परमानन्द शर्मा** 'सन्मार्ग' तथा 'देश और समाज' के सम्पादक **देवनारायण शर्मा** और 'लोकयुद्ध' (पटना) के सम्पादक **रामजी राय** प्रसिद्ध हैं।

लखनऊ से प्रकाशित मासिक 'भोजपुरी लोक' के प्रकाशक -सम्पादक **डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य** का परिचय पीछे दिया जा चुका है। इस पत्रिका का प्रकाशन भोजपुरी क्षेत्र की सृजनशीलता को उजागर करने वाली भोजपुरी -हिन्दी की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक मासिकी के रूप में सन् १९८९ से आरंभ हुआ। इसने अपनी घोषणा के अनुसार नियमित रूप से प्रकाशित होकर हिन्दीक्षेत्र की अविस्मरणीय सेवायें की हैं। निरन्तरता और स्तरीयता इसकी प्रमुख विशेषता रही। अखिल भारतीय स्तर पर भोजपुरी क्षेत्र की गरिमा को प्रस्तुत करने में भी इसने अगुवाई की है।

उच्चस्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादन-प्रकाशन में सबसे अधिक ध्यानाकर्षक कीर्तिमान **पं. रामव्यास पाण्डेय** का रहा। नितान्त साधनहीन फक्कड़ साहित्यसेवी के रूप में कलकत्ते में रहकर आपने अपने साहस और अध्यवसाय के बल पर लगभग दो दशक तक 'मणिमय' मासिक को जीवन्त रखा। इस अखिल भारतीय स्तर की साहित्यिक पत्रिका ने हिन्दीजगत् में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी थी। सातवें-आठवें दशक में इस पत्रिका के अनेक मानक विशेषांक प्रकाशित हुए जो बाद में 'अकविता : अन्तरधारायें', 'यशपालःव्यक्तित्व और कृतित्व', 'समकालीन आलोचना के प्रतिमान', 'निराला की याद', 'हिन्दी साहित्यः बंगीय भूमिका', 'एक लघु पत्रिका की रजत भूमिका' नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। इन विशेषांको में उन्हें कलकत्ते के प्रमुख साहित्यकारों में से **डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, श्रीनिवास शर्मा, अलखनारायण राय, बैजनाथ राय** और **डॉ. रत्नाकर पाण्डेय** का सहयोग मिला। **श्री रामव्यास पाण्डेय** मुसरदेवा (मुहम्मदाबाद तहसील) के रहने वाले संत प्रकृति के व्यक्ति हैं।

गाजीपुर नगर के पत्रकारों मे 'हृदयेश' जी के बाद सबसे वरिष्ठ और कर्मठ - कुशल पत्रकारों में **विजयकुमार** का नाम सर्वप्रथम लिया जाता है। ये 'आज' (वाराणसी) के गाजीपुरस्थित प्रतिनिधि से लेकर उसके सहायक सम्पादक तक रह चुके हैं। विजय कुमार का जन्म नारीपचदेवरा नामक गाँव में सन् १९३२ ई. में हुआ। ये सन् १९५७ से ७० तक 'आज' से जुड़े रहे। इसके बाद 'जनवार्ता' में आ गये तथा दस वर्षों तक उसकी सेवा में रहकर स्वतंत्र रूप से अपना पत्र -प्रकाशन चलाते हुए अन्ततः 'राष्ट्रीय सहारा' से जुड़ गये। 'गाजीपुर समाचार' और 'अमर पूर्वांचल' नाम के दो स्थानीय पत्र इन्होंने अपने निजी श्रमजीवी प्रिंटिंग प्रेस से प्रकाशित किये परन्तु ये अधिक दिनों तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं चल सके। इन्हें पत्रकारिता-सेवा के लिए सन् १९८७ का प्रथम चन्द्रकुमार स्मृति पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। ये मार्क्सवादी सोच के, अपने सिद्धान्तों और लक्ष्यों के प्रति समर्पित पत्रकार हैं। इनका समूचा जीवन संघर्षशील और जुझारू कलमकार का रहा। विजयकुमार की ध्यानाकर्षक विशेषता उनके लिखे फीचरों से सम्बन्धित है। ये फीचर साहित्यिक मूल्य के होते हैं और एक समय को अपने भीतर सम्यक् रूप से बाँधते हैं।

पत्रकारों की चर्चा चलने पर गाजीपुर के कुछ अन्य तेजस्वी पत्रकारों की चर्चा आवश्यक है। गाजीपुर जनपद की साहित्यिक चेतना के उन्नयन में इनका महत्त्वपूर्ण हाथ है। ये पत्रकार हैं **श्री रामबहादुर राय, श्री सुरेन्द्रप्रताप सिंह** और **श्री अच्युतानन्द मिश्र**। रामबहादुर राय का जन्म सोनाड़ी गाँव में हुआ। ये विद्याध्ययन के पश्चात् बहुत दिनों तक अज्ञातवास जैसी स्थिति में रहे और बाद में बहुत अधिक समय जयप्रकाश नारायण के साथ बिताकर अन्त में दिल्ली को इन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। ये बहुत कम बोलने वाले, अधिक कार्य करने वाले, प्रभावशाली और तेजस्वी खोजी पत्रकार हैं। ये स्वभाव से अन्तर्मुखी और आस्थावादी हैं तथा वृत्ति से पत्रकारिता सम्बन्धी समस्त बहिर्मुखी कारगुजारी पूरी प्रामाणिकता से करते हैं। अप्रतिम प्रभाव वाले इस समर्पित पत्रकारप्रवर की ख्याति प्रसिद्ध हवाला काण्ड को लेकर हुई जिसे उजागर करने का श्रेय इन्हीं को है। २४ अगस्त १९९३ के हिन्दी दैनिक 'जनसत्ता' द्वारा इन्होंने इसका भण्डाफोड़ किया था। एक भारी हलचल देश में उठ खड़ी हुई थी। रामबहादुर राय प्रमुख रूप से 'जनसत्ता' से जुड़े हैं और देश पर घहराने वाले हर संकट की स्थिति में आप के लेख बुद्धिजीवियों का मार्गदर्शन करते हैं।

श्री रामबहादुर राय ने 'जनसत्ता' दैनिक के 'पड़ताल' नामक साप्ताहिक कालम से राजनैतिक रिपोर्टिंग सम्बन्धी अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। सन् १९४६ में जनमे श्री राय का छात्रजीवन विद्यार्थी आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी में और बाद का जीवन संघर्षों-आन्दोलनों के बहुआयामी दौर से गुजरते, जे.पी. आन्दोलन(७४-७५) तक पहुँचा। मीसा में पहली गिरफ्तारी आपकी हुई जिसका मुकदमा सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचा और फैसला बहुचर्चित हो गया। सन् १९७७ से वे पत्रकारिता के क्षेत्र में उतरे और कुछ समय अरुणाचल प्रदेश में बिता कर १९८२ में दिल्ली में आ गये। यहाँ रिपोर्टर के रूप में 'जनसत्ता' की सेवा आरंभ कर मुख्य सम्वाददाता और समाचारब्यूरो -प्रमुख का पद सँभालते हुए सन् १९९६ से जनसत्ता समाचारसेवा के सम्पादक के दायित्व का निर्वाह कर रहे है। बीच में सन् ८६ से ९१ तक वे नवभारत टाइम्स के विशेष सम्वाददाता रहे। आपको पत्रकारिता सम्बन्धी उत्कृष्ट और विशिष्ट सेवा के लिए भगवान दास जनजागरण पत्रकारिता पुरस्कार (१९९०) और हिन्दी अकादमी दिल्ली, पत्रकारिता पुरस्कार (१९९४) प्राप्त हो चुके हैं।

सुरेन्द्रप्रताप सिंह लोकप्रिय टेलीविजन कार्यक्रम 'आज तक' के सूत्रधार थे और इसने उन्हें बहुत प्रसिद्ध कर दिया। इनका जन्म मुहम्मदाबाद तहसील के पातेपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नामक एक छोटे से गाँव में सन् १९४८ में हुआ था। इनका पत्रकार-जीवन सन् १९६७ से आरंभ हुआ और धर्मयुग में उपसंपादक हो गये। ये सन् ७७ में कलकत्ते से प्रकाशित 'रविवार' के सम्पादक पद पर आसीन हुए और प्रखर तथा निर्भीक पत्रकारिता के लिए बहुत प्रशंसित हुए। बाद में 'नवभारत टाइम्स' के भी सम्पादक रहे। मात्र ४८ वर्ष की आयु में आप का निधन हो गया। गत बयालीस के भूमिगत आन्दोलन पर आधारित मेरे ऐतिहासिक उपन्यास 'श्वेतपत्र' को 'रविवार' में आपने धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया थां। आपकी प्रेरणा से पातेपुर गाँव के सियाराम आदि कई पत्रकार मैदान में आये हैं। सियाराम का क्षेत्र बिहार प्रान्त है जहाँ वे हिन्दी के प्रतिष्ठित पत्रों से जुड़े हैं। गाजीपुर जनपद की साहित्यिक चेतना को प्रभावित करने वाले यहाँ के अन्य तेजस्वी पीढ़ी के वरिष्ठ पत्रकारों में **श्री अच्युतानन्द मिश्र** 'नवभारत टाइम्स' और 'जनसत्ता' आदि से सम्बद्ध रहे हैं। आप साहित्यिक रुचि -सम्पन्न हैं और साहित्यिक पत्रकारिता को आपकी लेखनी से बहुत बल मिला है।

गाजीपुर जनपद के शीर्षस्थ पत्रकारों की चर्चा **पं. रामदत्त राय शर्मा** की चर्चा के बिना अधूरी रहेगी। वे कलकत्ते के 'बंगवासी','विश्वमित्र' जैसे ख्यातिप्राप्त राष्ट्रीय पत्रों के निर्भीक सम्पादक थे। वे मुहम्मदाबाद के समीपवर्ती रामपुर गाँव के निवासी थे और 'बंगवासी' छोड़ने के बाद अपनी ससुराल कमसड़ी में रहने लगे। कमसड़ी में इन पंक्तियों के लेखक से वे सन् ५० और ६० के बीच बराबर मिलते रहे। उनकी वाक्पटुता, विद्वत्ता और निर्भीकता का लोग लोहा मानते थे। उनकी तीन पुस्तकों की पांडुलिपियाँ देखने में आयी थीं– 'गीतातत्त्व मीमांसा', 'महाभारत मीमांसा' और 'रामायण दर्शन' परन्तु उनके निधन के बाद उनका कुछ पता नहीं चला। एक 'जमींदार' नामक उपन्यास भी आपका लिखा हुआ बताया जाता है। उनकी कोई भी कृति गाजीपुर में उपलब्ध नहीं है। साप्ताहिक लोक सेवक में १३ जनवरी १९५५ के बाद पाँच अंकों में 'आदर्श लोकसेवा' नामक उनका एक लघु उपन्यास प्रकाशित हुया। उनके सम्पादनकाल की बंगवासी की एक प्रति लेखक के पास सुरक्षित है। यह अंक २६ अक्टूबर सन् १९२५ का है। इसका आकार पूरा एक गज लम्बा और पौने दो फीट चौड़ा है। यह साप्ताहिक के रूप में प्रति सोमवार को छपता था। इसकी प्रमुख सम्पादकीय टिप्पणी का विषय है, 'यूरोप में युद्ध का आयोजन' इसमें एक समाचार है 'प्रथम भारतीय साम्यवादी कनफरन्स' यह कान्फ्रेन्स कानपुर में आगामी दिसम्बर में होने वाली थी और पत्र में इसकी उपयोगिता पर भरपूर बल दिया गया था।

पटना से प्रकाशित 'लोकसंग्रह' नामक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन कुछ काल तक **स्वामी सहजानन्द सरस्वती** के द्वारा सम्पन्न होता रहा।

गाजीपुर से बाहर रह कर साहित्यिक पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों में **डॉ. राजेन्द्र**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरुण (मारीशस), **प्रो. सत्यमित्र दूबे** (दिल्ली) और **सरोजेश गाजीपुरी** (लखनऊ) का नाम आदर के साथ लिया जाता है, **डॉ. बब्बन पाण्डेय** ने कुछ दिनों तक आंचलिकता नामक एक लघु पत्रिका का प्रकाशन कलकत्ते से किया था।

श्री आनन्द प्रधान (सुल्तानपुर - १९६५) आकाशवाणी भवन, दिल्ली में समाचार-सम्पादक पद पर कार्यरत हैं। आप 'लिट्टे और आतंकवाद' विषय पर उच्चस्तरीय शोध कर रहे हैं तथा देश के प्रमुख राष्ट्रीय पत्रों में आर्थिक और विदेशनीति के मामलों में निरन्तर लेखन कार्य चलाते हैं।

कवि **जगरदेव पाण्डेय** (ग्राम- गुणउर) का कार्यक्षेत्र इलाहाबाद रहा। आपने 'राष्ट्र सेवक' और 'किरण' आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया। कवि के रूप में 'माण्डवी' नाम का एक खण्डकाव्य आप ने लिखा। आपकी एक पुस्तक का नाम 'महापुरुषों के खेल' है। आपने एक युग तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की सेवा की है। बलुआ तराँव के **अवधेश प्रीत** और **बालेश्वर दीप** (पटना-राँची) तथा **विजय शंकर पंकज** (लखनऊ) का वर्णन पीछे हो चुका है। ये तीनों कुशल पत्रकार हैं। ताजपुर डेहमा के **अनिल यादव** 'हिन्दुस्तान' से जुड़े पत्रकार हैं।

महाकवि **रामजन्म सिंह 'शिरीष'** का जन्म बारापुर(कासिमाबाद) में सन् १९२१ में हुआ। आप ने कुशल पत्रकार के रूप में एक युग तक सर्वसेवा -संघ, राजघाट की पत्रिका 'नयी तालीम' का सम्पादन किया। आपके महाकाव्य का नाम 'आचार्य शंकर' है। आप सर्वोदय दर्शन के चिन्तक हैं और प्रमुख रूप से आप का कर्मक्षेत्र गांधी भवन, लखनऊ रहा।

पत्रकार, लेखक, कवि और विविध साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े **अनिल कुमार अनिलाभ** अपनी युवा चेतना लेकर नयी शताब्दी में सक्रिय हैं। ये 'कल का भारत' और 'नयी दस्तक' नामक पत्रों से सम्बद्ध हैं। ढढ़नी गाँव के **उर्मिलेश** पत्रकार और लेखक हैं। आप हिन्दुस्तान, दिल्ली से सम्बद्ध हैं। 'राहुल सांकृत्यायनः सृजन और संघर्ष' तथा 'बिहार का सच' नामक आपकी कृतियाँ प्रकाशित हैं।

पत्रकार के रूप में 'समकालीन जनमत' के सम्पादकीय विभाग में कार्यरत पत्रकार **कृष्णमोहन** मार्क्सवादी सोच-सम्पन्न कवि, कहानी-लेखक और समीक्षक हैं। नन्दगंज के कवि, नाटककार और पत्रकार **डॉ. गजाधरप्रसाद 'गंगेश'** के चार लघु एकांकी प्रसिद्धि पा चुके हैं- 'लोकतंत्र की लाचारी', 'दहशत की गूँज', 'रिश्ता बना रहे', और 'सत्ता का स्वयंवर'। एकांकी नाटककार **विक्रमादित्य गहमरी** ने भी कई एकांकी नाटकों की रचना की है। उनके संकलन का नाम 'सफल एकांकी' है। **रमेशचन्द्र उपाध्याय** (अन्हारीपुर) का उपनाम कुमारसंभव था। रामपुर से प्रकाशित 'परिवेश' नामक एक पत्र का आपने सम्पादन किया था।

गाजीपुर के सियाड़ी गाँव में जनमे सन्त स्वभाव वाले **डॉ. चन्द्रदेव राय** मऊ से प्रकाशित 'कदम'नामक जनवादी पत्रिका के सम्पादक हैं। आपका शोधप्रबन्ध 'कबीर और रैदास का तुलनात्मक अध्ययन' प्रकाशित है। आप मऊ स्नातकोत्तर महाविद्यालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में हिन्दीविभाग की सेवा में रहे।

भारत के बाहर मारीशस में हिन्दी की मूल्यवान् सेवा करने वाले **डॉ. राजेन्द्र अरुण** (१९४५) और उनकी धर्मपत्नी **डॉ. विनोदबाला अरुण** का नाम अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रसिद्धि पा चुका है। दोनों ही पति-पत्नी पत्रकारिता के लिए समर्पित हैं। अरुण जी ने मारीशस के राष्ट्रीय पत्र 'जनता' का सम्पादनदायित्व सँभाला था। आप समाचार और यू.एन. आई. के भी प्रतिनिधि रहे। आप की रामकथा पर आधारित पाँच पुस्तकें प्रकाशित हैं। 'हरिकथा अनन्ता', 'प्रेम पियासे नैन', 'रोम रोम में राम', 'जग जननि जानकी' और 'रघुकुल रीति सदा....।' सम्प्रति आप मॉरीशस अकादमी आफ कल्चर के निदेशक हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'रामचरितमानस के प्रचार' कार्य में जुटे हैं।

डॉ. विनोदबाला अरुण मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान में संस्कृत, भारतीय दर्शन और हिन्दू धर्मशास्त्र विभाग में व्याख्याता हैं। आप वहाँ की आकाशवाणी, दूर-दर्शन और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भारतीय धर्म-दर्शन का प्रचार करती हैं। आपकी विद्वत्तापूर्ण पुस्तक 'मॉरीशस की हिन्दी कथा-यात्रा' दिल्ली से प्रकाशित है।

गहमर के **मान्धाता सिंह** साहित्यकार के साथ-साथ पत्रकार भी थे। इन्होंने 'माँ कामाख्या' नामक एक पत्रिका का प्रकाशन किया। इसी प्रकार **सत्यप्रकाश असीम** ने गाजीपुर से बाहर रहकर पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है।

गाजीपुर से प्रकाशित **डॉ. पी.एन. सिंह** के 'समकालीन सोच' आदि उच्चस्तरीय पत्रों के साथ-साथ यहाँ की साहित्यिक चेतना के उन्नयन में इस जनपद से प्रकाशित लघु पत्रों और आंचलिक पत्रों का भी योगदान है। ऐसे पत्रों में छोटे-बड़े दैनिक, साप्ताहिक और लगभग अनियतकालीन भी हैं। इनमें पूर्वांचल टाइम्स, गाजीपुर टाइम्स, कमसार टाइम्स, आंचलिक क्रांति, आंचलिक बेपर्दा, आंचलिक दूत, टेढ़े-मेढ़े, गति मति, पर्दाफाश, खुल्लमखुल्ला, दुनिया देश, नैतिकता कितनी, गाजीपुर-समाचार, गाधिक्षेत्र, आवाज एक किसान की, कर्कश, भूमेश्वर सन्देश और रेवतीपुर विकास आदि पत्रों का नाम लिया जाता है। प्रकाशधारा, समता टाइम्स, कारगिल रोशनी, पहुँच, संकल्प और सिद्धि नाम के आंचलिक पत्र भी सेवारत हैं। इनमें से कुछ ने अल्पकाल तक तो कुछ ने दीर्घकाल तक जनपद को अपनी सेवायें प्रदान की हैं और कुछ पूर्णतः जीवन्त हैं।

गाजीपुर के पुराने-नये पत्रकारों में से **परमानन्द चतुर्वेदी, आत्माराम पाण्डेय, बालमुकुन्द सिंह गहमरी, अश्विनी कुमार सिंह, ओंकारनाथ लाल, जयप्रकाश भारती, शेषनाथ राय, हसनैन कादरी, हारून रशीद खान, सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी 'बवण्डर', गजाधर शर्मा, अजय राय, अमरेन्द्र राय, हवलदार पाण्डेय, रामकिशोर चौबे, रघुनाथप्रसाद वर्मा, शत्रुसूदन यादव, विजयनारायण तिवारी, त्यागी मुखदेव सिंह, लालजी वर्मा, रमेशचन्द्र खरवार, सीताराम पाण्डेय, अभयनारायण सिंह, राजरूप शुक्ल, राजकुमार त्रिपाठी, प्रमोदकुमार राय, आवारा गाजीपुरी, राजकमल राय, सूर्यकुमार सिंह, राजेश सिंह, मधुरेश दूबे** और **फूलचन्द**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारती आदि ऐसे नाम हैं जिनका यहाँ की साहित्यिक चेतना के विकास में योगदान है। **शेषनाथ राय** (मुहम्मदाबाद) अधिवक्ता हैं परन्तु वे एक कुशल लेखक भी हैं। उनके तथा आवारा गाजीपुरी के सम्पादन में निकलने वाले लघु आंचलिक पत्र 'पर्दाफाश' ने पाठकों में अपनी पैठ बना ली है। इसके प्रत्येक अंक में शेषनाथ राय का लिखा फीचर या संस्मरण दिख जायेगा। श्री राय का क्षेत्रीय सन्तों से सम्बन्धित एक संस्मरणग्रन्थ प्रकाश्य है। **बालमुकुन्द सिंह 'गहमरी'**, ने एक युग तक जनपद की आंचलिक या ऐतिहासिक छवियों को अथवा जन-जीवन के सुख-दुख को शब्द रूप देकर उजागर किया है। 'टेढ़े मेढ़े' और 'गति मति' के सम्पादक-संचालक **सूर्यकुमार सिंह** ने अपने पत्रकारिता के अनुभव को नियोजित कर 'दयादी' नामक एक भोजपुरी उपन्यास की रचना की है।

श्री **कार्तिककुमार चटर्जी** (१९४३) सुलझे हुए वरिष्ठ पत्रकार हैं। सन् १९६०से पत्रकारिता के क्षेत्र में आये चटर्जी साहब (दादा) कुछ दिन 'जागरण' और 'आज' की सेवा करने के बाद सन् १९६४ से बहुत स्थिर भाव से 'गांडीव' (वाराणसी) से जुड़े रहे।

श्री धर्मदेव राय,एडवोकेट, शेरपुर (१९३९ सन् १९६०) से पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत हैं। आप अंग्रेजी के उच्चस्तरीय अपने दैनिक पत्रों का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही हिन्दी दैनिकों से भी जुड़े हैं।

गाजीपुर के पत्रकारों में सबसे पृथक् छवि गाजीपुर टाइम्स के सम्पादक **राम औतार** (जन्म सन् ४१, ग्राम सुखदेवपुर) की है। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में से तीन जैनेन्द्र जी के साक्षात्कार से सम्बन्धित हैं। 'संस्कृति, आस्था और तत्त्वदर्शन' तथा 'गांधी और हमारा समय' ये दो पुस्तकें चिन्तनप्रधान हैं। 'आर-पार' और निर्वाह आपके दो उपन्यास हैं। 'अभिशाप' आपकी कहांनियों का संकलन है। गाजीपुर टाइम्स का प्रकाशन सन् ६१ से हो रहा है। इसके पूर्व आप जैनेन्द्र जी की वैचारिक पत्रिका कला के सम्पादक और दैनिक जनमुख के उपसम्पादक भी रह चुके हैं। आप प्रगतिशील विचारधारा के रचनाकार और पत्रकार हैं।

पत्रकार **अभयनारायण सिंह** की लेखनी में बहुत बल है। पत्र -पत्रिकाओं में फीचर, व्यंग्य, और समीक्षा के लेखक के रूप में कभी-कभी ये दिखायी पड़ते हैं। इनकी भाषा बहुत धारदार होती है, साथ ही विषयवस्तु की पकड़ में भी गहराई होती है।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाहर के प्रवासी साहित्यकारों की सेवायें

गाजीपुर जनपद से बाहर के अनेक साहित्यकारों ने यहाँ की साहित्यिक चेतना के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। ऐसे लोगों में से अधिकांश किसी राजकीय अथवा अराजकीय सेवा में नियुक्त होकर यहाँ आये या किसी सम्बन्ध से यहाँ से जुड़े। कुछ लोग यात्रा के क्रम में अथवा अन्यान्य कारणों से यहाँ के प्रवासी बने और अपनी सुगन्ध यहाँ छोड़ गये। यह ऐतिहासिक क्रम विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से आरम्भ होता है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर १८८८ में गाजीपुर में आये और यहाँ अपनी नवविवाहिता पत्नी मृणालिनी देवी के साथ लगभग आठ मास तक रह गये। इस बीच उन्होंने एक पूरा उपन्यास 'नौका डूबी' की रचना कर डाली। यहाँ रहकर उन्होंने कुल अट्ठाइस कवितायें लिखीं जो उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'मानसी' में संकलित हैं। डॉ.सरजू तिवारी ने 'मानसी' का हिन्दी रूपान्तर किया है।

रवि बाबू के आगमन के दो वर्ष बाद सन् १८९० में विश्वपुरुष **स्वामी विवेकानन्द** का पदार्पण गाजीपुर जनपद में हुआ। वे सिद्ध सन्त पवहारी बाबा के शरणागत होकर तीन मास तक यहाँ रह गये। इस प्रवास से प्रभावित होकर उन्होंने अंग्रेजी में एक छोटी सी पुस्तक लिखी जो 'गाजीपुर के सिद्ध सन्त पवहारी बाबा' के नाम से हिन्दी में अनूदित होकर उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त पवहारो बाबा और गाजीपुर से सम्बन्धित उनके डेढ़ दर्जन पत्र हैं जो उन्होंने कलकत्ते के अपने मित्रों के नाम लिखे तथा जो विवेकानन्द -ग्रन्थावली में संकलित हैं।

स्वामी विवेकानन्द संत पवहारी के आकर्षण में गाजीपुर के प्रवासी बने और इसी संत के आकर्षण में हिमालय के एक सिद्ध पुरुष **स्वामी निर्वेदानन्द** भी इस जनपद की धरती को पवित्र कर चुके हैं। स्वामी निर्वेदानन्द केरल प्रान्त के रहने वाले थे। वे यहाँ दो दशकों तक गंगातटवासी रहकर १९९१ ई. में ब्रह्मलीन हो गये। 'एट द फीट आफ माई गुरु' आदि उनकी चार पुस्तकें अंग्रेजी में हैं जिनका हिन्दी रूपान्तर हो रहा है। गाजीपुर के उनके शिष्यों में **डॉ. देवेन्द्रप्रताप सिंह** और **डॉ. रमाशंकर सिंह** (पी.जी. कालेज) ने मिलकर हिन्दी और अंग्रेजी में उनकी जीवनी तैयार की है जिसका नाम है 'श्रीमद्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी निर्वेदानन्द जी: एक पूर्ण संन्यासी' हैं।

महाकवि **गुरुभक्त सिंह 'भक्त'** का समूचा सृजनशील जीवन तो आजमगढ़ में बीता परन्तु सन् १८९३ में जमानिया में जन्म होने और वहीं बचपन बीतने के कारण 'नूरजहाँ' जैसे अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य तथा अनेक कालजयी काव्यरचनाओं के सर्जक की गिनती हम गाजीपुर के साहित्यसाधकों में कर लेते हैं। इसी प्रकार हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् और शोधकर्ता **डॉ. किशोरीलाल गुप्त** (१९२७) निवासी तो वाराणसी के हैं परन्तु उन्होंने दीर्धकाल तक गाजीपुर जनपद की एक तहसील जमानिया में स्थित हिन्दू डिग्रीकालेज के प्राचार्य पद को सुशोभित किया था। अपने अनेक महत्त्वपूर्ण गंभीर ग्रन्थों की रचना इसी ऋषि-क्षेत्र में रहकर उन्होंने की थी।

डॉ. विश्वनाथप्रसाद श्रीवास्तव (जौनपुर-१९३९ई.) का समूचा जीवन वाराणसी में व्यतीत हुआ परन्तु कुछ वर्षों तक ऊर्जस्वी साहित्यिक वातावरण का पर्याय बनकर वे गाजीपुर में अध्यापन कार्य में रत रहे। बाद में यू.पी. कालेज, वाराणसी के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया। वे एक स्थापित कवि, समीक्षक, सम्पादक और शोधकर्ता हैं। नवगीत विधा के श्रेष्ठ सर्जक और इस विधा के मर्मज्ञ समीक्षक होने के साथ ही आपने अनेक महान् हिन्दीसेवियों की ग्रन्थावलियों का सम्पादन किया है। 'रोशनी ही नदी की धार है' , 'सौन्दर्य और सौन्दर्यानुभूति', तथा 'आम आदमी की लालटेन' आदि आपकी अनेक गंभीर कृतियाँ हैं। आपने गाजीपुर में 'बोध' नामक एक साहित्यिक संस्था का संचालन किया था। आपके गाँव का नाम माहेकुला है।

'पथ पर' महाकाव्य के लेखक आचार्य **तारकेश्वर उपाध्याय** (ग्राम-नरही) जनपद बलिया के निवासी रहे हैं परन्तु इन्होंने गांधीनगर ईन्टरकालेज के प्राचार्य पद पर रहते हुए दीर्घ काल तक साहित्यसेवा की। 'वंदिता' और 'युग किरण' आपकी अन्य रचनाओं के नाम हैं। गाजीपुर में अपने समय के सुप्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि **डॉ. विश्वनाथ पाण्डेय** 'बेखटक' (३९) मीरजापुर के हैं और इनकी प्रसिद्धि भी 'बेखटक मीरजापुरी' नाम से ही है।

डॉ. राजेन्द्र अरुण (१९४५ई.मारीशस) गाजीपुर से शिक्षादीक्षा और कर्मभूमि आदि के कारण इस प्रकार जुड़े हैं कि उन्हें सामान्यत: गाजीपुर का ही समझा जाता है, जब कि उनका पैतृक गाँव फैजाबाद जिले का पीताम्बरपुर है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वे 'रामचरित मानस' के मर्मज्ञ के रूप में पहचाने जाते हैं। **डॉ. राजेन्द्रप्रसाद पाण्डेय** (प्रशासनिक सेवा, उत्तर प्रदेश सरकार) स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर की सेवा कर चुके हैं। डॉ. पाण्डेय को उनके उपन्यास 'गाँव बेगाँव', कहानी संग्रह, 'हाथ में कानून' और काव्यपुस्तक 'फूटती नदी' से बहुत ख्याति मिली है। सन् ४७ में जनमे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय सन् ७१से ७५ तक गाजीपुर में रहे। आपकी शेष पुस्तकों के नाम हैं 'इल्लू दादा' (कहानीसंग्रह) और 'तदर्थ' (निबन्ध)। इसके अतिरिक्त काव्य, ललित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध और संस्मरण की पुस्तकें प्रकाश्य हैं।

वाराणसी में रहने वाले समर्पित हिन्दीसेवी **डॉ. मोती सिंह** स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर के आजीवन प्राचार्य रहे। गाजीपुर में रहते हुए यहाँ के साहित्यिक वातावरण को अर्थवान् बनाने में इनका बहुमूल्य योगदान रहा।

बुलन्द शहर के **ओंकारनाथ शर्मा**, वाराणसी के **मंगलाप्रसाद श्रीवास्तव**, मीरजापुर के **मुरलीधर सिंह 'अंश'**, इलाहाबाद की **राजेश्वरी सक्सेना**, वाराणसी के **बिशनलाल कपूर** और **सच्चिदानन्द तिवारी** आदि जैसे अनेक सुधी रचनाकार गाजीपुर में दीर्घकाल तक विविध सेवाओं में रह चुके हैं और यहाँ की साहित्यिक जमीन को समृद्ध करने में इन लोगों का भी अवदान है।

कवि **विजय अग्रहरि 'आलोक'** (इलाहाबाद -१९६४) सन् १९९७ के इर्द गिर्द केन्द्रीय विद्यालय में अध्यापक थे और इन्हीं दिनों आपका गजलों का संकलन 'कस्तूरी' प्रकाशित हुआ।

'बलिदानी बलिया' के अमर गायक और हिन्दी भोजपुरी काव्य-जगत् के प्रसिद्ध गीतकार **जगदीश ओझा 'सुन्दर'** गाजीपुर नगरपालिका की प्रशासनिक सेवा में सन् १९६८ के इर्द गिर्द रहे और उन्होंने गाजीपुर के कविसमाज को प्रभावित-प्रेरित किया था। वे बलिया की विभूति थे।

डॉ. गिरिराज शाह नवें दशक में गाजीपुर में पुलिस अधीक्षक पद पर रहे। यहाँ रहते हुए उन्होंने 'तीसरे शहर की तलाश' (उपन्यास १९८२) ,'अपराध कारण और निवारण', 'इंडियन पुलिस' और 'फूलों की घाटी' (काव्य) आदि अनेक पुस्तकों की रचना की । अंग्रेजी और हिन्दी की पचास से अधिक गंभीर पुस्तकों के इस लेखक ने उत्तराखण्ड शोधसंस्थान के निदेशक के पद पर रहते हुए समाज और साहित्य की अविस्मरणीय सेवायें की हैं। आपको गृहमंत्रालय भारत सरकार, हिन्दी साहित्य सम्मेलन और हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश सरकार से अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं।

आजमगढ़ जनपद के **शरत सोनकर** ने गाजीपुर में प्रशासनिक सेवा में रहकर साहित्यसेवा की है । आपकी तीन कथाकृतियाँ भारती प्रकाशन, गाजीपुर से प्रकाशित हुई हैं-'मौर्य वधू', 'सोनचिरैया' और 'माटी का मोह'।

देवरिया जनपद के निवासी और वहाँ से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'अंचल भारती' के स. सम्पादक **डा. गजानन मिश्र** गाजीपुर रोडवेज कार्यालय में प्रबन्धक पद पर रहे। आप हिन्दी और भोजपुरी के कुशल लेखक हैं। गाजीपुर में रहते हुए आपने यहाँ के नवोदित साहित्यकारों को प्रभावित किया।

श्री आलोक रंजन गाजीपुर में जिलाधिकारी रहे। यहाँ से स्थानान्तरण होने के बाद उन्होंने एक पुस्तक अंग्रेजी में लिखी 'कलक्टर टुडे'। बाद में 'जिलाधिकारी' नाम से हिन्दी में इसका अनुवाद हुआ। यह पुस्तक कथा-कहानी और संस्मरण-रिपोर्ताज के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वाद से पूर्ण है। इसके अतिरिक्त उनकी अनेक पुस्तकें अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार इस जनपद में सन् १९७७-७८ में सेवारत रहे जिलाधिकारी **डॉ. कमल टावरी** एक सिद्धहस्त लेखक हैं और उनकी विविध-विषयों की ढेर सारी पुस्तकें प्रकाशित हैं। प्रमुख पुस्तकों के नाम हैं, 'प्रशासनिक हास्य' , 'इधर-उधर' तथा 'काव्य कलश'।

छपरा (बिहार) के निवासी तथा लखनऊ में बस कर वहाँ के साहित्यिक वातावरण को अपने काव्य से उत्फुल्ल बनाने वाले **डॉ. किशोरीशरण शर्मा** सन् १९८३ के इर्दगिर्द कई वर्षो तक राजकीय चिकित्सालय में सेवारत रहे। उनकी काव्य पुस्तकों के नाम हैं- वीणा वादिनि वर दे, कम्पन, माँ, उद्‌बोधन, अनवरत, तोता बोला, अपना गाँव निराला, प्रणयदीप और वन्दना के स्वर आदि। आपकी अनेक रचनाओं में गाजीपुर की धरती की सुगंध है। 'आर्यावर्त' महाकाव्य के रचयिता मोहनलाल महतो 'वियोगी' के अनुज कवि **पन्नालाल महतो 'हृदय'** गाजीपुर में 'लोकसेवक' के सहायक सम्पादक के रूप में कार्यरत रहे।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय में डी. लिट्. का प्रथम शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने वाले **डॉ. जनार्दन राय** नरही (बलिया) के रहने वाले हैं और गुणउर इन्टरकालेज में अंग्रेजी के प्रवक्ता हैं। वे कविकर्म से इस प्रकार सघनता के साथ जुड़े हैं कि एक उपनाम ही हो गया है, 'कवि जी'। इनके डी.लिट्.वाले शोधप्रबन्ध का निर्देशन **डॉ.. मान्धाता राय** ने किया है और उसका विषय है, 'विवेकी राय के उपन्याससाहित्य में आंचलिकता'।

डॉ. चौथीराम यादव (पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, काशी हि.वि.वि.) जौनपुर के निवासी हैं। आठवें दशक के आरंभ में कुछ वर्षों तक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर के हिन्दी विभाग में सेवारत रहे। प्रगतिशील विचारधारा के डॉ. यादव ने कई पुस्तकों की रचना की है। इनके प्रकाशित शोधप्रबन्ध का नाम 'छायावादी काव्य:एक दृष्टि' है।

'व्रजगरिमा' (मथुरा) के पूर्व सम्पादक, समीक्षक और निबन्धकार **डॉ. भगवान सहाय पचौरी** गाजीपुर में सन् ८३ के इधर-उधर जिलाविद्यालय निरीक्षक रहे। डॉ. पचौरी का जन्म मथुरा में सन् १९२६ में हुआ। आपकी कृतियों के नाम हैं- 'अंगार', 'मध्यान्तर के स्वर' और 'महाकवि ग्वाल का व्यक्तित्व और कृतित्व'। कवि **श्री देवनारायण सिंह 'राकेश'** (आजमगढ़) गाजीपुर जनपद में विद्यालय उपनिरीक्षक रहे (सन् १९९०-९१)। आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हैं, 'धरती की साँस', 'शिक्षा शतक' और 'झरबेरी के काँटे'।

गाजीपुर जनपद के लोकप्रिय अपर जिलाधिकारी (सन् १९९८-२००२) **श्री राकेश चन्द्रा** (जन्म १९५५ई.) एक उच्च रुचि के सुलझे हुए साहित्यमर्मज्ञ रचनाकार हैं। आप अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में काव्यरचना करते हैं। आपकी हिन्दी तथा अंग्रेजी की कृतियों के नाम हैं,'मून इज ब्लेक' और 'तुम्हारे लिये'। आप लखनऊ के रहने वाले हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक साहित्यसेवी और सफ़ल प्रशासक के रूप में गाजीपुर को आपका मूल्यवान् अवदान मिला। आपकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम चन्द्रा ने जो **नीलम राकेश** के नाम से हिन्दी कथालेखिकाओं के बीच प्रतिष्ठित हैं ,कई पुस्तकों का सृजन गाजीपुर में रहते हुए किया।

नीलम राकेश (१९६२) की कहानी 'खुला आकाश' पर आधारित एक नाटक का मंचन इसी नाम से 'अप्रैल २००२ में हुआ। संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली के सहकार से नाट्यसंस्थान, गाजीपुर द्वारा प्रस्तुत इस नाटक का निर्देशन उक्त संस्थान के निर्देशक **डॉ. शिवमूरत सिंह** ने किया। उक्त कहानीसंग्रह के बाद लेखिका का दूसरा संकलन 'एक कदम सूरज की ओर' प्रकाशित हुआ। नीलम राकेश की सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके बालसाहित्य को लेकर है। 'मनोरंजक कहानियाँ,'सुनो कहानी बचपन की', (बालकहानी ब्रेल), 'अनोखी छुट्टियाँ' (बालकहानी), 'अनजाने द्वीप में ' (बाल उपन्यास), 'गुरु दक्षिणा' (लघुकथा-संग्रह) और 'हिम्मत ने जीती बाजी' आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के अनेक बालसाहित्य संस्थानों से आप पुरस्कृत और सम्मनित हो चुकी हैं। इनमें कामता प्रसाद 'दिव्य' सम्मान (सागर-म.प्र.), चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट सम्मान (दिल्ली), बाल साहित्य संसद पुरस्कार (कानपुर) और नागरी बालपुरस्कार (बलिया) प्रमुख हैं। आपकी पुत्री **मृणालिनी** और पुत्र **आश्विन** भी बाल रचनाकारों के बीच पत्र-पत्रिकाओं में स्थान पाने लगे हैं।

श्री चन्द्रभाल 'सुकुमार' (१९५०) गाजीपुर जनपद में न्यायाधीश के पद पर १९९९ ई. के इधर-उधर आसीन रहे। आप यहाँ एक सहृदय सिद्ध कवि, विशेष रूप से गजल रचनाकार के रूप में साहित्यिक जनों के बीच समादृत रहे। आपके दो गजल-संकलन प्रकाशित हैं जिनके नाम हैं,'कंठ नीला हो गया है' और 'शब्दों के रुद्राक्ष'।

इक्कीसवीं शताब्दी के आंरभ के इर्दगिर्द दो बाहरी जनपदों के निवासी प्रबुद्ध साहित्यकार अधिकरियों ने यहाँ के साहित्यिक जगत् को समृद्ध करने में दीर्घकाल तक योगदान किया है। इन दोनों अधिकारियों में से **श्री डी. एन. राय** आजमगढ़ के निवासी और प्रोबेशन अधिकारी हैं तथा **श्री पी.सी.तिवारी** बलिया के निवासी और डिप्टी कलक्टर हैं। राय साहब अत्यन्त सहृदय,भावुक और उत्कृष्ट कोटि के गीतकार हैं। इसके साथ ही अत्यन्त कर्तव्यनिष्ठ कुशल अधिकारी हैं। आपके दो काव्यसंकलन प्रकाशनाधीन हैं। तिवारी जी कवि, लेखक और सम्पादनकला-कुशल हैं। आप भारत ज्ञान विज्ञान समिति, गाजीपुर की परामर्शदात्री समिति के विशेष सक्रिय सदस्य हैं। आप चितबड़ा गाँव (बलिया) के निवासी हैं और वहाँ के प्रसिद्ध समाज-सेवी 'भाई जी' के परिवार के सदस्य हैं। आप गाजीपुर के समाजसेवियों और साहित्यसेवियों के बीच सेतु का काम करते हैं।

गाजीपुर जनपद की धरती में अनन्त साहित्यिक ऊर्जा है और यहाँ आकर, निवास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर तथा यहाँ से जुड़ कर कोई भी अनुभव करता है कि वह ऊर्जा उसकी चेतना में ढल कर उसे पूर्वापेक्षया अधिक तरंगित तथा सृजनसक्रिय कर देती है। हिन्दी हितैषी डॉ. जान गिलक्राइस्ट साहब फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना (१८०० ई.) के पूर्व कुछ दिन तक गाजीपुर-प्रवास में रहे। अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर श्री स्वरूपानन्द सरस्वती की शिक्षा गाजीपुर के रामपुर गाँव स्थित बिछुड़न राय महादेव संस्कृत पाठशाला में हुई थी। राष्ट्रीय कवि बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' सन् ४२ के जनान्दोलन में गाजीपुर जेल में कैदी जीवन बिता रहे थे। यहाँ के कारागार में रहते हुए उन्होंने ढेर सारी कवितायें लिखीं जो उनके काव्यसंकलन 'हम विषपायी जनम-जनम के' में संकलित हैं। प्रसिद्ध कथालेखिका **शिवानी** का जन्मस्थान गाजीपुर है। तब उनके अभिवावक यहाँ किसी अधिकारी के रूप में सेवारत थे। इसी प्रकार प्रख्यात कथालेखिका **ऋता शुक्ल** के पूर्वज गाजीपुर जनपद से ही जाकर बिहार में बस गये थे, ऐसा उन्होंने बताया था। इसी प्रकार हाजीपुर (बिहार) के प्रसिद्ध गीतकार तथा अपनी गंभीर साहित्यिक विधाओं के लिए पूरे बिहार में समादृत **उमाकान्त वर्मा** के पूर्वज गाजीपुर जनपद से ही बिहार में जा बसे थे। वर्मा जी बराबर गाजीपुर की धरती से अपने को जोड़कर बात करते थे। उनकी कई काव्यकृतियाँ प्रकाशित हैं। उनका पूरा परिवार साहित्यसेवी है।

रामदास 'अकेला' (डाक अधीक्षक, गाजीपुर १९९७-९९)वाराणसी जनपद के निवासी हैं। आप गाजीपुर में बहुत लोकप्रिय रहे। आपके गजलों का संग्रह 'बोलते आइने' है। **डॉ. अशोक सिंह** (धीना-गाजीपुर) का नवगीतसंकलन प्रकाशित है। आप डिग्रीकालेज, भुड़कुड़ा में प्राध्यापक हैं। **सतीशचन्द्र शुक्ल 'भावुक'** (इलाहाबाद) पुलिस सबइंस्पेक्टर (सैदपुर) के काव्यसंकलन का नाम 'बिल्वपत्र' है। कवि **अनूप कालपुरुष** पश्चिमी बंगाल के हैं और सम्प्रति मरदह में कार्यरत हैं। आपका काव्य संकलन प्रकाशनाधीन है। **रामनाथ ऐलिया** राजस्थान के हैं। आप जन्मान्ध हैं। सम्प्रति गाजीपुर में संगीतशिक्षक हैं और बालगीत लिखते हैं। संकलन अप्रकाशित है। आई.टी.आई. में अध्यापक रहे **स्व. प्रेम तिवारी** कुशल सुकवि थे। वे बस्ती के निवासी थे। वाराणसी के **अनुरागशंकर वर्मा** गीतकार हैं और इण्टरकालेज,भुड़कुड़ा में सेवारत हैं।

हिन्दी की चोटी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले कवि और कहानीलेखक **श्री राकेश सिंह** सन् ९४-९५ के इर्दगिर्द गाजीपुर में पुलिस उपाधीक्षक के पद पर सेवारत थे। आप वाराणसी के निवासी और प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. बन्धन सिंह के भतीजे हैं। आपके कहानीसंकलन का नाम है, 'कुछ अलग हटकर'।

डॉ. कीर्तिकुमार सिंह सन् २००१ से डिग्री कालेज, मुहम्मदाबाद में दर्शन, विभागाध्यक्ष हैं और कवि तथा कथाकार हैं। दर्शन से सम्बन्धित उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं परन्तु उन्हें ख्याति कहानीसंग्रह 'दारागंज वाया कटरा' से मिली। उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवितासंकलन का नाम 'दिल्ली के दोपाया कुत्ते' है।

गाजीपुर की साहित्यिक पत्रिका 'परिचय' के लिए बराबर लिखने वाले प्रबुद्ध कहानीकार , आलोचक और कवि **अमृतांशु** (१९६८ई) गाजीपुर के यूनियन बैंक में सन् १९९५ से सेवारत हैं। आपने भारत ज्ञान विज्ञान समिति, गाजीपुर की स्मारिका 'संकल्प २००२' का कुशल सम्पादन किया है।

इस संक्षिप्त सूची से स्पष्ट है कि गाजीपुर की धरती ने बाहर से आये साहित्य सेवी लोगों को अपना प्यार देकर उनकी भावाभिव्यक्तियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। दूसरी ओर गाजीपुर की साहित्यिक चेतना के विकास में इन साहित्यकारों की सेवाओं से जो एक उत्साहवर्धक वातावरण बना वह भी अविस्मरणीय है। **डॉ. किश्वर सुलताना** इलाहाबाद की रहने वाली हैं। आप गाजीपुरस्थित स्नाकोत्तर महिला महाविद्यालय के हिन्दीविभाग में प्राध्यापक रहीं। आपका शोधप्रबन्ध प्रकाशित है और उसका नाम है, 'पंत काव्य में कला, शिल्प और सौन्दर्य' (प्रकाशन-१९८४)।

गजल विधा के सिद्ध रचनाकार **डॉ. हरिओम** (१९७१) आई.ए. एस. गाजीपुर में सन् २००२ में सी.डी.ओ. पद पर आसीन होकर आये। आपके गजलों के संकलन का नाम 'धूप का परचम' है। इसकी भूमिका त्रिलोचन शास्त्री ने लिखी है। गांधी और अम्बेडकर दोनों के प्रति आस्थावान् कर्तव्यनिष्ठ और तेजस्वी अधिकारी हरिओम जी सुलतानपुर जनपद के कटारी नामक गाँव की विभूति हैं। आपकी विदुषी पत्नी **डॉ. मालविका** की हिन्दी-कथासाहित्य में विशेष रुचि है। आपने 'जगदीशचन्द्र के उपन्यासों में यथार्थवाद' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। रामविलास शर्मा और नामवर सिंह से प्रभावित डॉ. मालविका ने कृष्णा सोबती के कथासाहित्य पर गंभीर लेखन का कार्य किया है।

............और इस प्रकार बाहर से आये विद्वान् साहित्यकारों के योगदान का यह क्रम चल रहा है, चलता रहेगा और गाजीपुर की रसवती धरती अपना रस बाँटती रहेगी।

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलिया की साहित्यिक परम्परा

बलिया जिले की साहित्यिक परम्परा एक ओर अनुश्रुतियों के आधार पर सुदूर वैदिक काल में मंत्र-द्रष्टा आप्त महर्षियों यथा भृगु, गर्ग, पराशर, च्यवन और भरद्वाज तक जाती है और दूसरी ओर आदि कवि वाल्मीकि से उसकी साधना का स्रोत सम्पृक्त कहा जाता है। उच्च चिन्तन का यह अविच्छिन्न क्रम इधर से प्राप्त प्रमाणों के प्रकाश में तत्त्व -साधक शिवराम, सन्त शिवनारायण, रामचन्द्र पंडित और सुवचनादासी आदि की कृतियों में हम पाते हैं।

बलिया जनपद की साहित्यिक परम्परा का आरम्भ बाबा शिवराम से होता है। अट्ठरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'भक्ति जयमाल' की उन्होंने रचना की। प्रसिद्ध सन्तकवि नारायण- स्वामी, भीखासाहब, बुलाकीदास, तथा 'विद्यासागर' के रचयिता विश्रामभगत भी बलिया से जुड़े हैं। इन संत कवियों के साथ देवकीनन्दन साहब का नाम भी उल्लेखनीय है जिनकी रचना 'शब्दावली' प्रख्यात है। चन्दाडीह के कवि रामचन्द्र की 'रामचन्द्रिका' में रामायण का प्रस्तुतीकरण हुआ है। रामचन्द्र के अतिरिक्त रामकथा के कवियों में गजराज सिंह 'गजेन्द्र शाहि' और उनके वंशज रघुनन्दनप्रसाद सिंह का नाम आता है। हरिसेवक साहब, शिवानन्द, रामप्रसाद और रामावतार ओझा आदि भी अपनी भक्ति -परक रचनाओं से इस परम्परा को आगे बढ़ाते हैं। कहते हैं कि कुण्डलिया काव्य के सिद्ध कवि बाबा दीनदयाल गिरि भी वास्तव में बलिया जिले के अमहर ग्राम के निवासी थे। पंचदेव शर्मा की तीन कृतियाँ हैं: 'पंचदेव रामायण' 'पंचदेव प्रकाश' और 'पंचदेव विलाप'। ये तीनों ही भक्तिभाव से पूर्ण रचनाएँ हैं। शर्मा जी रेवती -निवासी थे।

वास्तव में बलिया जनपद का मुख्य रचनात्मक स्वर भक्ति का है जो अठरहवीं शताब्दी से आरम्भ होकर भी टूटने नहीं पाया। उक्त प्राचीन संत -कवियों के अतिरिक्त उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जिन भक्ति, ज्ञान अथवा अध्यात्म-दर्शन में डूबे कृतिकारों की कृतियों का परिचय मिलता है, उनमें कुछ प्रमुख लोग हैं, जयकृष्ण लाल ('संत मत-सार') लक्ष्मण तिवारी, राधारमण प्रसाद सिंह, दूधनाथ उपाध्याय,(हरेराम पचीसी) पशुपति उपाध्याय 'हरेराम चालीसी', सुवचनादासी (प्रेम तरंगिणी), रमाकान्त पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(प्रेमसुधा रत्नाकर), धनुषधारी सिंह (कृष्णचरित चन्द्रोदय), नकछेदी तिवारी आदि। इस काल में पद्मदेव नारायण ने नीतिकाव्य लिखा। शृंगार रस पर कार्य करने वाले बच्चू लाल 'कृष्ण' हैं, जिन्होंने 'नवरस बिहार' लिखा है। दूसरे शृंगारी कवि बख्शराम पाण्डेय 'सुजान' हैं। हल्दी राजपरिवार के नारायणदेव लाल ने 'पावस प्रलाप' लिखा जो शृंगारग्रंथ है। मुसलमानों की हिन्दीसेवा भी इस जनपद से शून्य नहीं है। इसी काल में कवि 'अब्दुल सत्तार प्यारे' ने अपनी रचनाओं द्वारा ख्याति पाई। देश में राष्ट्रीय कविताओं की धूम मची और इस जनपद के आरम्भिक राष्ट्रीय कवियों में 'पिंजरे का व्याघ्र' और 'गन्धी स्तोत्र' के कवि श्री जगन्नाथ सिंह का नाम उभरता है। मदनमोहन सिंह के काव्य में भी वीर रस का स्रोत मिलता है। इस प्रकार एक बहुत ही समृद्ध साहित्यिक परम्परा का प्रत्यावर्तन होता है जो आगे चलकर हिन्दीजगत् में महत्तम उपलब्धियों के द्वार मुक्त करती है।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के मित्र रामदीन सिंह (ग्राम-रेपुरा) ने पटना में खड्ग विलास प्रेस की स्थापना कर हिन्दी की श्रीवृद्धि का शुभारम्भ किया। यह हिन्दी साहित्य के नवोत्थान का काल है। भारतेन्दु स्वयं बलिया में यहाँ के हिन्दीप्रेमी कलक्टर के निमंत्रण पर पधारे थे और अपने 'सत्य हरिश्चन्द्र' के अभिनय में हरिश्चन्द्र की भूमिका में उतर पड़े थे। उस काल के साहित्य-सेवियों में बख्शराम पाण्डेय (हल्दी) तथा केशव पंडित के नाम पाये जाते हैं। रेवती के अयोध्याप्रसाद तो साहित्यप्रेरणा में पूरा भारत ही घूम आये थे और उनकी कृति 'भारत भ्रमण' महाकवि देव के 'जाति विलास' की याद को ताजा कर देती है। बाद में हरिकृष्ण राय, शिवप्रसाद सिंह और जानकी प्रसाद ने 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की और तब से अब तक यह संस्था बलिया में साहित्यिक जागृति की प्रेरणा बनी हुई है। 'मतवाला' के कथासम्पादक नवजादिक लाल को कथासाहित्य के प्रेमी अब तक याद करते हैं। विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह ने भी पर्याप्त यश अर्जित किया। आज यहाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की शाखा 'जनपद साहित्य सम्मेलन' भी हिन्दी की सेवा में सक्रिय है।

साहित्य की शिखरसाधना

बलिया -निवासियों को 'बलियाटिक' नाम से अभिहित कर एक विशेष अर्थ में समझने वालों को अब अपनी धारणा बदलनी पड़ेगी। यहाँ भारतीय ब्राह्मणत्व का जागृत, सजग और विशुद्ध चिन्तक स्वरूप अपना प्रगाढ़ पाण्डित्य और विशाल मानववादी दृष्टिकोण लिए दृष्टिगोचर हो रहा है। इस दृष्टिकोण की विविधता में साहित्य,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिहास,भूगोल, धर्म, दर्शन, अर्थशास्त्र, पुरातत्त्व और कला आदि सभी विषय हैं। कतिपय अखिल भारतीय ख्याति के विद्वान् साहित्यकारों यथा पद्मभूषण आचार्य डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, सन्तसाहित्य -मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पं. बलदेव उपाध्याय, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, डॉ. उदयनारायण तिवारी, श्री वासुदेव उपाध्याय और डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय आदि नाम तो उक्त तथ्य को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं ही, हम नयी पौध के साहित्यकारों में भी यही बात पाते हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म सं० १९६४वि० में बलिया के ओझवलिया ग्राम में हुआ था। शान्तिनिकेतन तक पहुँचने(सन् १९३०) के पूर्व ही आपकी प्रतिभा का पूर्ण विकास हो चुका था और आपकी रचनाएँ 'वीणा'. आदि प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करती थीं। यहाँ विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन जैसे मनीषियों के सान्निध्य ने आपकी गम्भीर कारयित्री प्रतिभा को और खोल दिया। यहाँ आपने अपभ्रंश और मध्यकालीन हिन्दीसाहित्य पर आधुनिक ढंग से शोधकार्य किया। १९५० ई० से आप काशी के हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दीविभाग के अध्यक्ष रहे। आपने हिन्दीसाहित्य के अध्ययन की विस्तृत भूमिका नये तथ्यपूर्ण दृष्टिकोण से प्रस्तुत की है। आपका दृष्टिकोण सांस्कृतिक, क्रम ऐतिहासिक, पक्ष शास्त्रीय और शैली काव्यकला की लोकरंजक ध्वनि से पूरित है। हिन्दी आलोचना को निस्संदेह आपने नयी दिशा दी है। आचार्य जी की बहुमुखी प्रतिभा निबन्धों में निखरी हुई मिलती है। साधारण विषयों पर मनोरंजक शैली में प्रगाढ़ अध्ययन और उच्च चिन्तन को आप इस सहज ढंग से रख देते हैं कि पाठक चमत्कृत हो उठते हैं। भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बाद आप चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। इसके बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को पूर्ववत् आपकी संवायें मिलीं। आपकी रचनाओं में 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', ' नाथ सम्प्रदाय', 'हिन्दीसाहित्य का आदि काल', 'कबीर', 'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'कल्पलता', 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'मध्यकालीन धर्मसाधना', 'चारुचन्द्र लेख', 'मेघदूत : एक पुरानी कहानी' आदि लगभग दो दर्जन कृतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त विद्वानों के ग्रन्थों की भूमिकाएँ और विविध विषयों पर लिखे आपके विद्वत्तापूर्ण निबन्ध हैं जो आपकी शास्त्रीय तथा शोध-शैली के ज्वलन्त उदाहरण हैं। 'मध्यकालीन बोध', आपकी चिन्तनपरक कृति है।

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी बलिया की विभूति हैं। आपकी एकान्त साधना ने हिन्दी साहित्य को अनमोल रत्न प्रदान किया है। सन्तसाहित्य के आप मर्मज्ञ हैं। अतीत की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विस्मृत सांस्कृतिक वाणियों का आपने गम्भीर शोधकार्य द्वारा पुनरुद्घाटन कर एक नवीन परम्परा स्थापित की है। अपनी विद्वत्ता, उत्कृष्ट प्रतिभा, गहन अध्ययन एवं प्रकाण्ड पाण्डित्य द्वारा प्रभूत साहित्य-निधियों का आपने अर्जन किया। 'उत्तरी भारत की सन्तपरम्परा' 'हिन्दीकाव्यधारा में प्रेमप्रवाह' 'वैष्णव धर्म', 'सन्तकाव्य', 'सूफी काव्य-संग्रह', 'मीराबाई की पदावली','रामचरित मानस की भूमिका', 'मध्यकालीन प्रेमसाधना','नव निबन्ध', 'कबीर साहित्य की परख' और 'गार्हस्थ्य जीवन' आदि ग्रन्थों के कर्ता के रूप में आपका निष्णात चिन्तक का रूप निखर आया है। आपकी ख्याति का स्वर्णस्तम्भ 'सन्त काव्य' है, जिसके प्रकाशित होते ही हिन्दी-साहित्य में एक नया मोड़ उपस्थित हो गया। इसके अतिरिक्त आपकी अविश्रांत लेखनी अभी अपने उत्कृष्ट ग्रंथों का जो प्रणयन करती चली जा रही है, वह हिन्दी साहित्यसंसार के लिए महान् गौरव का विषय है। अभी आपको 'सूफी काव्यों की प्रेमाख्यानक काव्यपरम्परा' पर प्रान्तीय सरकार से पुरस्कार मिला है। पाण्डित्य के प्रतीक और साहित्य के मूर्त्तरूप आप हैं। आपकी स्वभावज शालीनता मणिकांचन संयोग उपस्थित कर साहित्य के शिशु साधकों के लिए आपको चिरश्रद्धेय बना रही है। आप वयोवृद्ध ही नहीं तपःसिद्ध भी हैं। गंगा की धारा सा आपका पवित्र, लोकोपयोगी और सर्वसुलभ व्यक्तित्व बलिया को गौरवान्वित करता है। 'भक्तिसाहित्य में मधुरोपासना', 'भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा', 'शान्त रस', 'रहस्यवाद', 'मध्यकालीन शृंगारिक प्रवृत्तियाँ' 'भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ' और 'बौद्ध साहित्य की साहित्यिक झलक' आदि चतुर्वेदी जी की नवीन रचनाएँ हैं, जिनमें उनका शोधपरक चिन्तक व्यक्तित्व और अधिक निखरा है।

बलदेव उपाध्याय ने हिन्दीसाहित्य को बहुत ही महत्त्वपूर्ण कृतियों से परिपूर्ण कर दिया है। 'भारतीय दर्शन' आपकी महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसमें आपने भारतीय दर्शन का सांगोपांग विवेचन किया है। हिन्दी में इस प्रकार का साहित्य विरल है। भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन पर आपका अध्ययन बहुत गम्भीर है। सर्वसुलभ शैली में आधिकारिक रूप से गम्भीर विषयों को हिन्दीजगत् के सम्मुख रखने के कारण आपको पर्याप्त सम्मान मिला है। 'बौद्ध दर्शन', 'संस्कृत साहित्य का इतिहास', 'आर्यसंस्कृति का मूलाधार', 'भारतीय साहित्यशास्त्र' और 'भागवत सम्प्रदाय' आदि आपके उच्चकोटि के ग्रंथ हैं। सफल शास्त्रचिन्तक के रूप में आप सुप्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति के तत्त्वचिन्तकों में रामजी उपाध्याय का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है।

बलिया की वसुन्धरा ने जितनी भी असाधारण प्रतिभाओं को पैदा किया है उनमें डॉ. भगवतशरण उपाध्याय अपने वैशिष्ट्य के कारण पृथक् हो जाते हैं। भारतीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिहासकार और साहित्यकार के रूप में आपने अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। आप उजियार(गड़हा परगना) के एक सुसंस्कृत परिवार में विकसित हुए और आज तो उच्च कोटि की शिक्षा-दीक्षा और संस्कार का म्रानदण्ड ही आपके परिवार को समझा जाता है। आप काशी नागरी प्रचारिणी सभा में विश्वकोष -सम्पादक रहे और आजकल विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्राचीन इतिहास, भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष हैं। आपका दृष्टिकोण प्रगतिशील है और उस दृष्टिकोण के प्रकाश में प्राचीन भारत का जो चित्र आपने अपनी कहानियों में दिया है वह पर्याप्त प्रेरणाप्रद है। विश्व इतिहास और विश्वसाहित्य पर आपने अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है। न केवल हिन्दी में अपितु अंग्रेजी में भी आपने महत्त्वपूर्ण साहित्य का सृजन किया है। आपकी अनेक पुस्तकें पुरस्कृत हो चुकी हैं। आपकी 'इंडिया इन कालिदास' प्रख्यात पुस्तक है जो 'कालिदास का भारत' के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। 'विश्व साहित्य की रूपरेखा' आपकी बहुचर्चित गम्भीर कृति है। आपकी निबन्ध, शोध, समालोचना और बाल-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें बहुत उपयोगी और मार्मिक हैं। आपने लगभग एक सौ तीन पुस्तकों की अब तक रचना की है।'मैंने देखा', 'कादम्बरी', 'बुर्जियों के पीछे', 'सागर की लहरों पर', 'इतिहास साक्षी है', 'सबेरा', 'संघर्ष गर्जन' और 'वो दुनिया' आदि आपकी पुस्तकें बहुत समादृत हैं।

इतिहास के उच्चकोटि के विद्वानों में पटना विश्वविद्यालय के प्राध्यापक वासुदेव उपाध्याय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आपके कई ग्रंथ इतिहास की प्रामाणिक कृतियाँ माने जाते हैं। 'गुप्त साम्राज्य का इतिहास', 'भारतीय सिक्के', 'भोजपुरी लोकसाहित्य और संस्कृति' तथा 'पूर्व मध्यकालीन भारत' आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

डॉ. उदयनारायण तिवारी और डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने भोजपुरी भाषा और साहित्य पर स्मरणीय कार्य किया है। दोनों विद्वानों ने अपने शोध का यही विषय बनाया और भोजपुरी का सांगोपांग अध्ययन प्रस्तुत कर भोजपुरी भाषा-भाषियों को गौरवान्वित किया है। भोजपुरी में आज जिस प्रकार की सशक्त अभिव्यक्ति की परिकल्पना साकार होती दिखाई पड़ रही है, उसे देखते हुए उक्त दोनों का कार्य महत्त्वपूर्ण तथा प्रेरणाप्रद है। भोजपुरी के भीतर सर्वप्रथम एक व्यवस्थित भाषा की अभिव्यंजनाशक्ति और साहित्यिक प्राण-तत्त्व की विवेचना सामने आई। डॉ. उदयनारायण तिवारी का कार्य और भी विस्तृत है। हिन्दी की सम्पूर्ण बोलियों पर किया गया उनका कार्य अप्रतिम है। 'वीर काव्य' आपका हिन्दीसाहित्य के आदिकाल का अध्ययन करने के लिए एक प्रामाणिक ग्रंथ है। हिन्दीसाहित्य के प्रचार -प्रसार में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के अनुज नर्मदेश्वर चतुर्वेदी का कार्य हिन्दीसाहित्य में विशेष महत्त्व का है। अपनी पहली कृति 'बापू का सपना' के बाद से आप बराबर हिन्दी की श्रीवृद्धि में लगे हैं। साहित्य के साथ आपकी रुचि संगीत में भी है। 'तानसेन और उनका काव्य' तथा 'संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ' आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

सुरेन्द्र बालूपुरी की आलोचनाएँ तथा अन्य रचनाएँ काफी प्रभावोत्पादक होती हैं। कमालाकान्त वर्मा सफल कहानीलेखक हैं। देवनाथ उपाध्याय की 'बलिया में क्रान्ति और दमन', हरिवंश सिंह शास्त्री की 'सौन्दर्यशास्त्र' तथा कमलेश की 'मुसलमानों की हिन्दीसेवा' नामक प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। रमाशंकर तिवारी, शुकदेव दूबे, सरयू प्रसाद द्विजेन्द्र, रामबालक शास्त्री, सूर्यनारायण सिंह बलियावी, जनार्दनप्रसाद चतुर्वेदी और हरिहरनाथ शास्त्री आदि की सेवायें मूल्यवान् हैं। 'वाचाल बाँकापुरी' हिन्दी साहित्य में विख्यात हैं। जयनारायण पाण्ड़ेय की उत्कृष्ट शैली प्रतिष्ठित है। श्याम मनोहर पाण्डेय सिद्ध कवि तथा लेखक हैं।

कथा साहित्य

बलिया जनपद ने केशवप्रसाद मिश्र, अमरकान्त, दूधनाथ सिंह और भैरवप्रसाद गुप्त को जन्म देकर हिन्दी कथासाहित्य को गौरवान्वित किया है। इन तीन कथाकारों ने एक विशिष्ट इतिहास बनाया है। केशवप्रसाद मिश्र का एक कहानीसंग्रह प्रकाशित है। उनकी एक कहानी 'कोयला भई न राख' बहुत प्रसिद्ध हुई। 'कोहबर की शर्त' और 'देहरी के आर-पार' उनके उपन्यास हैं। पहला आंचलिक उपन्यास है और दूसरे में नगरबोध पर ग्रामबोध छाया हुआ है। अमरकान्त ने कथासाहित्य को एक मोड़ दिया है। ग्रामजीवन को आपने बहुत कलात्मकता के साथ स्पर्श किया है। 'कँटीली राह के फूल', 'ग्राम सेविका', 'जिन्दगी और जोंक' ,'देश के लोग', 'सूखा पत्ता' और 'पराई डाल का पंछी' आपकी चर्चित कृतियाँ हैं। भैरवप्रसाद गुप्त ने बहुत अधिक लिखा है। 'मंजिल', 'मशाल', 'महफिल', 'सपनों का अन्त' ,'शोले' आदि दर्जनों रचनाओं के साथ 'धरती' आपका उपन्यास है। गुप्त जी ने अपने उपन्यासों में सामन्तवादी यथार्थ की चेतना को नये स्तर पर उपस्थित करने की चेष्टा की है और उन्हें सफलता भी मिली है। सर्वहारा-संघर्ष को वाणी देने के संदर्भ में कथासाहित्य में आपका विशिष्ट स्थान है। डॉ. भगवतशरण उपाध्याय ने भी तीन कथा-कृतियाँ दी हैं: 'संघर्ष', 'सबेरा' और 'गर्जन'। इन तीनों को एक जगह संकलित करके एक सुन्दर सा संस्करण इधर भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ है। नवोदित कथाकारों में मुहम्मद इसराइल अंसारी का नाम आता है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनका उपन्यास 'अचला' (१९०१ ई.) में प्रकाशित हुआ है। इसमें मँगई नदी के किनारे स्थित एक छोटे से ग्राम के उस संघर्ष को चित्रांकित किया गया है जिसकी पृष्ठभूमि गांधीवादी है। हरिहर ओझा 'तरुण' ने सामंतीय व्यवस्था के घिनौनेपन पर करारा प्रहार करने वाले तीन अंकों के एक 'झंझा' नामक नाटक की रचना की है। ये कहानी लेखक भी हैं। व्रजभूषण पाण्डेय, सुरेश्वर, शिवदत्त श्रीवास्तव तथा रमाशंकर पाण्डेय भी कहानियाँ लिखते हैं। मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' और लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी भी कहानीकार के रूप में निखार ले रहे हैं। उजियार के दयानन्द तिवारी ने कई उपन्यासों की रचना की है। गणित के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित अवध उपाध्याय ने भी 'अविद्या' नामक एक उपन्यास लिखा है। देवबली सिंह (नगरा) ने पचासेक उपन्यास लिखे हैं।

नये कथासाहित्य नभ का सर्वाधिक सशक्त प्रकाशमान नक्षत्र दूधनाथ सिंह हैं। आप नरही के पास सोबन्था नाम के एक छोटे से गाँव के निवासी हैं और आजकल प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दीप्राध्यापक हैं। आपकी पुस्तकें 'सपाट चेहरेवाला आदमी' और 'अपनी शताब्दी के नाम' बहुचर्चित हुईं। आपने विद्रोहधर्मी आधुनिकता को सघन संवेदनीयता दी है और सतत संघर्षक्रम से अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। विजय 'बलियाटिक' पहले हास्य रस के कवि, पुनः हास्य-व्यंग्यपरक कहानीलेखक के रूप में उभरे। आप मूलतः कथाकार हैं। आपके व्यंग्य बहुत पैने होते हैं। खड़ी बोली के अतिरिक्त भोजपुरी में आप सशक्त रचना करते हैं। चन्द्रदेव सिंह और कवि केदारनाथ सिंह का नाम भी कथाकारों में आता है।

'चतुरी चाचा की चिट्ठी' नाम से 'आज' में क्रमिक रूप से प्रकाशित होने वाली डॉ.मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' की भोजपुरी रचनाओं में कहानी ही प्रमुख रूप से उभरती थी। 'मूसल के माई' की सिलसिलेवार रूप से चर्चा करके तिवारी जी ने ग्रामजीवन की समस्याओं को बड़े ही कौशल से तौल कर सामने रख दिया है। भोजपुरी गद्य को उन्होंने साहित्यिक प्रतिष्ठा दिला कर सूक्ष्मतम भावों की कलात्मक अभिव्यक्ति में सक्षम बना दिया है। 'चतुरी चाचा की चिट्ठी' के लेखक जैसी लोकप्रियता हिन्दीसाहित्य के इतिहास में विरले भाग्यवानों को मिलती है। पूर्वी जिलों में जहाँ जाइए घर में, खेत में, दूकान में, रास्ते-घाट में, और यत्र तत्र सर्वत्र चतुरी चाचा छाये हैं। शैली नहीं जादू है चतुरी चाचा की चिट्ठियों में भोजपुरी गद्य की दिग्विजयगाथा है। 'चतुरी चाचा की चिट्ठियाँ' नामक एक पुस्तक ही प्रकाशित हो चुकी है। इण्टर कालेज, चितबड़ा गाँव के वाणिज्य प्राध्यापक मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' अथवा 'चतुरी चाचा' चितबड़ा गाँव स्टेशन के पास के आशापुर नामक एक छोटे से कस्बे के निवासी हैं। १९०४ के लगभग 'भारतमित्र' से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशित 'शिवशम्भु के चिट्ठे' बालमुकुन्द गुप्त लिखा करते थे, जिसका आधार राजनीति थी किन्तु चतुरी चाचा की चिट्ठियों का आधार समाज है। तारकेश्वर तिवारी ने गद्य में नया प्रयोग किया। उनका हास्य-प्रहसन 'बाबू जीवजोगावन सिंह' काफी लोकप्रिय हुआ।

विविध विषय

पुरातत्त्व और भाषाविज्ञान पर हरिकृष्ण राय (वाजिदपुर) की रचनाएँ मिलती हैं।'गणित भास्कर', 'हिन्दी भाषा की उत्पत्ति', 'वाल्मीकिरामायण रहस्य' और 'भाषा क्रान्ति भंजिका' आपकी रचनायें हैं। राजेश्वर त्रिपाठी (बालूपुर) ने 'सती','प्रताप नाटक', 'गल्प गुच्छ'और 'निबन्धावली' नामक पुस्तकें लिखीं। शिवप्रसाद सिंह अर्थशास्त्री हैं और राजनारायण सिंह(गायघाट) भाषाशास्त्री। जगदीशनारायण राय(सुरही) गांधीवादी चिन्तक हैं। आपकी निबन्ध-पुस्तक'बोलते क्षण' के नाम से प्रकाशित हुई है। सुरही गाँव के डॉ. सत्येन्द्रनाथ राय की एक यात्रावर्णन सम्बन्धी पुस्तक 'विदेश यात्रा के संस्मरण' प्रकाशित हुई है। 'नीलांचल एक्सप्रेस की डायरी' और 'कैथरीन-कथा' आपके दो उपन्यास हैं, आप की अन्य पुस्तकों में अपने व्यक्तित्व को पहचानिये, अपने मनोभावों को पहचानिये कैसे सुखमय हो आप की जीवनसंध्या और कनाडा दर्शन है। जगदीशनारायण त्रिपाठी (हेमन्तपुर) की कृतियों में 'उपन्यास तरंग', 'सनातन धर्म', 'दुर्योधन वध' और 'भक्ति रहस्य' प्रसिद्ध हैं। सरजू पाण्डेय (दुबहर) ने व्याकरणशास्त्र पर पुस्तकें लिखी हैं। विपिनविहारी लाल (बाँसडीह) की पुस्तकें चिकित्साशास्त्र से जुड़ी हैं।डॉ. रमाशंकर लाल ने पूर्वी जिलों की आर्थिक स्थिति पर महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किया है। आप स्थानीय मुरलीमनोहर डिग्रीकालेज के प्रधानाचार्य हैं। विश्वनाथ तिवारी ने दर्जनों स्तरीय भूगोलविषयक पुस्तकें लिखी हैं। आपकी मानचित्र सम्बन्धी पुस्तक उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत हो चुकी है। अर्थशास्त्र पर डॉ. कपिलदेव उपाध्याय की पुस्तक प्रख्यात है। पं. अवध उपाध्याय (बभनौली) गणित के प्रकाण्ड विद्वान् थे। आपने इस सम्बन्ध में उच्चस्तरीय शोध किया था। आपकी अनुसंधानात्मक उपलब्धियाँ विदेशों में प्रकाशित हो चुकी हैं। अंकगणित और बीजगणित पर आपकी पुस्तकें प्रख्यात हैं। जगपति चतुर्वेदी(आसचौरा) ने भूगोल का उत्कृष्ट अध्ययन 'वायुमण्डल पर विजय', 'दूरी पर विजय' और 'समुद्र पर विजय' आदि अपनी पुस्तकों में किया है। अवधविहारी पाण्डेय ने शिक्षाशास्त्र पर कई पुस्तकें लिखी हैं। महादेव सिंह ने 'सेंगर वंश का इतिहास' लिखा है। चन्द्रभान सिंह बालोपयोगी साहित्य की रचना करने वालों में अग्रणी हैं। बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुशल समालोचक हैं। उनके कई आलोचनात्मक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। कुलदीपनारायण 'झड़प' की वृत्ति शोध-परक है। उन्होंने तुलसी, सेनापति आदि कवियों की जन्मभूमि पर शोध करने के साथ कुल-गोत्र और वंशपरम्पराओं के सन्दर्भ में बहुमूल्य अनुसंधान किया है। आपकी प्रकाशित पुस्तकों के नाम हैं,'गोस्वामी तुलसीदासः जीवनवृत्त और व्यक्तित्व' एवं 'विकास की एक धारा'। बालसाहित्य पर डॉ. भगवतशरण उपाध्याय और लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी ने कार्य किया है। संगीतविषयक साहित्य के लिए नर्मदेश्वर चतुर्वेदी को याद किया जायेगा। डॉ. नागेन्द्र भट्ट ने बलिया की समस्याओं पर अच्छे निबन्ध लिखे हैं। हरिहर ओझा 'तरुण' के निबन्धों का विषय सांस्कृतिक सामाजिक और राजनीतिक हुआ करता है।

डॉ. उदयशकंर श्रीवास्तव 'माधव' ने शोध तथा आलोचना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। हिन्दी के सूफियेतर मुसलमान कवियों पर उनका शोधकार्य महत्त्वपूर्ण है।'मध्यकालीन निर्गुण सन्तों में अप्रस्तुत योजना' डॉ. माया श्रीवास्तव का शोधकार्य उनकी विश्लेषणात्मक –आलोचक दृष्टि का परिचायक है। माया श्रीवास्तव 'शबनम' कहानीकार भी हैं। अब तक पच्चीस कहानियाँ 'धारा', 'प्रवाह', 'वैदही','रश्मिरेखा' 'नारीजगत्','सजनी'आदि प्रकाशित हो चुकी हैं। 'प्यार की सीमा', 'मुस्कुराते आँसू' तथा 'आँधी और अरमान' नामक तीन उपन्यास भी अबतक प्रकाशित हैं। बालसाहित्य में 'सपना साकार हुआ' तथा 'बीस कवियों की कथा' क्रमशः एकांकीसंग्रह और कहानीसंग्रह का प्रकाशन हो चुका है। डॉ. वसन्त सिंह का शोधकार्य भी महत्त्वपूर्ण है।

काव्यसाधना

काव्य के सम्बन्ध में बलिया का नाम लेते ही एक सुन्दर सा नाम सामने आ जाता है जगदीश ओझा 'सुन्दर' का। 'विद्रोही बलिया' के क्रान्तिगीतों के गायक ने 'मजूर की गली' के ओजस्वी प्रगतिशील गीतों से आगे बढ़ गीतकार के मर्यादित व्यक्तित्व को उभार कर रख दिया है। 'भिखारिन' आपका खण्डकाव्य है। इस सर्वप्रशंसित खण्डकाव्य के अतिरिक्त एक अप्रकाशित खण्डकाव्य 'दमयन्ती' भी है। 'क्रान्ति के बीज' आपकी कहानियों का संग्रह है। सुन्दर जी ने कवि के रूप में बलिया का नाम ऊँचा किया है। आपकी सबसे बड़ी सेवा यह है कि आपने इस जनपद में सजीव साहित्यिक वातावरण पैदा कर दिया है। 'पथ पर' के महाकवि आचार्य तारकेश्वर उपाध्याय यद्यपि कार्यक्षेत्र की दृष्टि से अधिकांश समय तक गाजीपुर में रहे। 'युग किरण' आपका राष्ट्रीय प्रबन्धगीत है। कामेश्वर धाम पर आपने एक खोजपूर्ण पुस्तक लिखी थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामसिंहासन सहाय 'मधुर' की दो पुस्तकें प्रकाशित हैं: 'मधुर लहरी' और 'मधुबिन्दु' की भूमिका रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी है। आप सिद्ध कवि के रूप में काफी समादृत हैं।

श्यामसुन्दर ओझा 'मंजुल' की कवितापुस्तक 'अरुणिमा' गीतकाव्य का उत्कृष्ट नमूना है। सभी गीत, लय, ताल और छन्द की ऐसी सरस, सूक्ष्म झंकृति से आपूरित हैं जिससे भावों की व्यंजना में चार चाँद लग गया है।

मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' हास्य रस के कवियों में प्रमुख हैं परन्तु आपकी स्थायी कीर्ति का आधार 'गुलछर्रे' है।मर्यादित हास्य के साथ सुरुचिपूर्ण कविताओं को काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। अपने क्षेत्र में 'बेसुध' का कोई जोड़ नहीं। भोजपुरी गद्य के 'भारतेन्दु' हैं। आपकी एक गंभीर और विश्लेषणात्मक मानक कृति 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे' इधर प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में पहली बार कवि और भोजपुरी ललितनिबन्धकार एक समीक्षक और शोधकर्ता के रूप में दिखाई पड़ता है। 'सूफी अध्यात्मदर्शन का मध्यकालीन हिन्दी सन्त कवियों पर प्रभाव' विषय पर आपको काशी विद्यापीठ से पी.एच-डी. की उपाधि प्राप्त हुई है।

बेसुध ने जहाँ हँसाया है, वहाँ हरिहर वर्मा (जन्म- सन् १९००ई.)ने रुलाया है। आपका खण्डकाव्य 'उपेक्षिता' एक तिरस्कृत नारी की करुण कहानी है जो आँसुओं से लिखी गयी है। कवि की दूसरी कृति 'कैकेयी' है जो मनोवैज्ञानिक ढंग से महारानी कैकेयी की कहानी उपस्थित करती है। इसमें खण्डकाव्य के सभी लक्षण मिलते हैं। सुबोध शैली में कवि ने जानी-पहचानी कथा को इस आकर्षक ढंग से रखा है कि भरपूर रस मिलता है। आपका कार्यक्षेत्र चितबड़ा गाँव रहा है। उजियार गाँव के डॉ.अनिलकुमार 'आंजनेय' का भोजपुरी निबन्धों का संग्रह 'विचार बन्ध' बहुत प्रशंसित हुआ है।

भोजपुरी की सेवा और उसे प्रारम्भ में बल विकास एवं गति प्रदान करने के उपलक्ष्य में जनता ने डॉ. रामविचार पाण्डेय को 'भोजपुरी रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया है। 'बिनिया बिछिया' उनकी एक दर्जन कविताओं का संग्रह है।'आस' नामक अपनी लम्बी कविता में आपने सूक्ष्म भावों को भोजपुरी के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है। पाण्डेय जी की एक कविता 'अँजोरिया' काफी चर्चित है। स्व. सम्पूर्णानन्द जी ने एक बार कहा था कि वे और कुछ भी न लिखें तो भी इस कविता के बल पर अमर रहेंगे। ये पेशे से डाक्टर हैं। इन्होंने साठ वर्ष की आयु में एम.बी.बी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण कर के एक कीर्तिमान स्थापित किया। आपकी एक पुस्तक 'जीवन गीत' है और एक भोजपुरी नाटक 'कुँवर सिंह' है।

प्रसिद्धनारायण सिंह ने व्यवस्थित शैली में 'बागी बलिया' लिखा है। पूरी पुस्तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीररस -प्रधान है और प्रवाह ऐसा है कि पाठक पढ़ते समय भूल जाते हैं कि हम भोजपुरी कविता पढ़ रहे हैं। भोजपुरी में यह पहली काव्यपुस्तक निकली जिसमें खड़ी बोली के अभ्यस्त पाठकों को कृत्रिमता और कठिनाई नहीं प्रतीत होती। पुस्तक में स्वतंत्रतासंग्राम का विधिवत् चित्रण एक खण्डकाव्य के स्तर पर हुआ है। कथावस्तु यद्यपि बलिया से सम्बन्धित है तथापि कई अध्याय स्वतंत्र और मुक्त वीरगीत सा आनन्द प्रदान करते हैं।

सोहाँव के रामप्रवेश राय 'निठुर' की एक पुस्तक प्रकाशित है, नाम है 'तितलौकी' हास्य रस की आपकी कविताएँ काफी चुभती हुई सी होती हैं। श्री राय ने बाद में अपना हास्य रस के कवि वाला प्रारम्भिक रूप विसर्जित कर सर्वोदयी और गांधीवादी चिन्तक के रूप में अपने को अभिव्यक्त किया है। आपकी कृति 'सामाजिक विश्लेषण: एक स्वस्थ चिन्तन' है। छोटी-मोटी अन्य अनेक कृतियाँ भी हैं, जिनमें गांधीवादी दृष्टिकोण का निखार है।'योगी' नाम का एक सहयोगी उपन्यास शरद कुमार 'साधक' आदि के साथ आपने लिखा था। ये गांधी शान्तिप्रतिष्ठान में सेवारत हैं।

कुलदीपनारायण 'झड़प' की रचना 'विभूति सतसई' हिन्दी की सतसइयों की परम्परा में अपना एक गौरवपूर्ण स्थान रखती है। आपकी रचनाओं के नाम हैं, 'दीपदान', 'बात क बात', 'अरघ' और 'गोस्वामी तुलसीदास: जीवन और व्यक्तित्व'। डॉ. श्याममनोहर पाण्डेय ने राष्ट्रीय स्तर पर कुछ लोकगीतों पर शोध किया है। आप कवि और समीक्षक भी हैं। आप ने इंग्लैण्ड और अमरीका के विश्वविद्यालयों में हिन्दी-सेवा की है।

सोहाँव गाँव के बैजनाथ राय ने हिन्दी की सराहनीय सेवा की है। आपके 'सिंहगढ़ विजय' आदि तीन-चार नाटक और कविताओं के संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी की प्रतिभा बहुमुखी है। कविता में आपकी प्रवृत्ति स्वाभाविक है। कविताओं का संग्रह आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शुभाशीर्वाद के साथ 'मधुरिमा' नाम से प्रकाशित हुआ है। 'मधुरिमा'मधुर भावों को रसवन्ती निर्झरिणी है। भारतीय संस्कृति, दर्शन और अध्यात्म का आप पर विशेष प्रभाव है। लोक कथाओं पर भी आपने कार्य किया है। कुल प्रकाशित पुस्तकों की संख्या चार है। कवि,पत्रकार, अध्यापक और स्वतंत्रतासंग्राम सेनानी के रूप में आप बहुत यशस्वी हैं।

प्रभुनाथ मिश्र ने भोजपुरी गीत को गति और गौरव प्रदान किया है। यह सौभाग्य है कि आप आपादमस्तक भोजपुरी रंग में रँगे हैं। आपने जनभाषा को जनजीवन के सुख-दुख का वाहन बनाना ही उचित समझा है। पं. रामविचार पाण्डेय की कविताओं में खड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोली से प्रतियोगिता है तो आपकी कविताओं में लोकगीतों का माधुर्य। आपकी भोजपुरी कविताओं का संग्रह 'हरियर हरियर खेत में' है। आप गद्य में न प्रवृत्त होकर कविता की ही साधना करते तो उत्तम होता।

नगेन्द्रनाथ भट्ट के शब्दों में गन्ध, स्वर में कोमलता और भावों में सौरभ सी प्रसरणशीलता तथा तज्जन्य उत्फुल्ल वातावरण दिखाई पड़ता है। नगेन्द्र जी ने खड़ी बोली और भोजपुरी दोनों में गीत लिखे हैं। काव्य संकलन प्रकाश्य है।

काशीप्रसाद 'उन्मेष', राधामोहन 'धीरज', शम्भुनाथ उपाध्याय, विजयशंकर पाण्डेय, रमाशंकर पाण्डेय 'नवल', श्रीरामसिंह 'उदय', स्व. डॉ. शिवदत्त श्रीवास्तव 'सौमित्र', मणीन्द्रभूषण त्रिपाठी 'मधुर', शिवशंकर 'विनोद', वासुदेव पाण्डेय 'विश्वबन्धु', गंगेश्वर पाण्डेय 'चंचल', मंगलाप्रसाद पाण्डेय, वृजविलास दास, बलदेव तिवारी 'देव', महाबल द्विवेदी, सर्वदेव सिंह 'पागल', अरुण जी, चन्द्रभान सिंह, पतंग जी, राजनारायण पाण्डेय तथा मदनमोहन सिन्हा 'मनुज' बलिया के अन्य उल्लेखनीय कवि हैं। दैनिक 'क' के सम्पादक 'उन्मेष' के काव्य में व्यंग्य, धीरज में करुणा, शम्भुनाथ उपाध्याय में ग्राम-परिवेश की अभिव्यक्ति, उदय में बहुमुखी प्रतिभा, सौमित्र में हास्यव्यंग्य, विनोद के गीतों का संवेदनात्मक कोण,महाबल द्विवेदी की गांधीवादी राष्ट्रीयता, अरुण की राष्ट्रीय 'चेतना' तथा व्यंग्य, चन्द्रभान सिंह की इतिवृत्तात्मकता तथा पतंग जी का प्रकृति–चित्रण उल्लेखनीय है। मदनमोहन सिन्हा 'मनुज' पटना रेडियो स्टेशन से सम्बद्ध हैं। खड़ी बोली तथा भोजपुरी दोनों में गीत लिखने वाले मनुज जी की कविताओं में जन-मन का आलोड़न तथा सौन्दर्यपरक बिम्ब समान रूप से उभरते हैं।

कल्पनाशील तथा भावुक कवि परमेश्वर राय 'राजेश' के गीतसंग्रह 'किरण बाँसुरी' ने उन्हें कवि रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव 'माधव' बलिया में नयी कविता के समर्थ कवि हैं। डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा सम्पादित 'नयी कविता' में उनकी कविताओं का संग्रह भी आ चुका है।

पत्रकारिता

बलिया के पत्रकार भारतवर्ष के कोने-कोने में पत्रों के माध्यम से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। रमापति राय 'आज', ईश्वरदेव मिश्र (सन्मार्ग), राजकिशोर सिंह (सन्मार्ग), राधाकृष्ण ओझा (सन्मार्ग) हरिशंकर द्विवेदी (नवभारत टाइम्स, बम्बई) उदय नारायण सिंह (भारत) तथा मुहम्मद इसराइल अंसारी (नवभारत टाइम्स- कलकत्ता)का नाम उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त रामअशीष सिंह, जगदीशनारायण तिवारी, रघुवंश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेय, दयानन्द सिंह, राजवल्लभ ओझा, शिवराम वर्मा, रघुनाथ पाण्डेय, भुवनेश्वर उपाध्याय तथा नर्मदेश्वर सिंह की सेवायें भी स्मरणीय हैं। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में 'बिहान' साप्ताहिक 'बलिया समाचार', 'बलिया टाइम्स', दैनिक 'क', रसड़ा का दैनिक 'अन्तर्लोक', साप्ताहिक 'युगान्तर' तथा कुछ अंकों तक ही निकलने वाली विशुद्ध साहित्यिक मासिक पत्रिका 'विद्या' और साप्ताहिक 'लाल बुझक्कड़' का नाम उल्लेखनीय है। 'भृगुक्षेत्र' नामक साप्ताहिक पत्र बलिया से निकलता है और 'गाधिक्षेत्र' नामक साप्ताहिक गाजीपुर से।

विशेष टिप्पणी

'बलिया जनपद की साहित्यिक परम्परा' शीर्षक मेरा उक्त निबन्ध बहुत पहले अर्थात् सन् १९७० के आसपास लिखा गया था। इसे मैंने रुचि पूर्वक तैयार किया था और यह उन्हीं दिनों 'आज' (वाराणसी) में प्रकाशित हुआ था। अपनी कृति 'गाजीपुर संवाद' के परिशिष्ट में इसे सम्मिलित करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सका और इसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर दिया है।

ऊपर संकेतित तीन दशकों से अधिक की बीती कालावधि में बलिया जनपद के साहित्य-जगत् में सृजनरत बलिया जनपद की आधुनिक युगीन यशस्वी पीढ़ी के रचनाकार महारथियों, सेनानियों और सैनिकों की, जिनकी चर्चा उक्त निबन्ध में हुई है, उपलब्धियाँ और अधिक ऊँचाइयों पर पहुँचीं तथा आगे बढ़ीं। इस तथ्य को आचार्य परशुराम चतुर्वेदी (१८९४ ई.), डॉ. उदयनारायण तिवारी (१९०३ ई.), रामसिंहासन सहाय 'मधुर' (१९०३), आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी(१९०७), डॉ. भगवतशरण उपाध्याय(१९१०ई.), आचार्य कुलदीप नारायण 'झड़प' (१९११), जगदीश ओझा 'सुन्दर' (१९१३), और भैरवप्रसाद गुप्त (१९१८ ई.) आदि के नाम प्रमाणित करते हैं।

यही स्थिति मध्य पीढ़ी की है। अमरकान्त (१९२५ ई.), डॉ. मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (१९२७), रामप्रवेश शास्त्री (१९३०) डॉ. अनिलकुमार 'आंजनेय' (१९३४), डॉ. केदारनाथ सिंह (१९३४), डॉ. दूधनाथ सिंह,(१९३६), डॉ. मनोहरश्याम पाण्डेय (१९३६ ई.) और डॉ.कृष्णबिहारी मिश्र (१९३६) आदि के रचनात्मक अवदान का ग्राफ भी इन्हीं बीते दशकों में उत्तरोत्तर ऊपर उठा है। यश और सम्मान के ऊँचे शिखर पर डॉ. केदारनाथ सिंह की मेरे उक्त निबन्ध में चर्चा भर है। परन्तु 'जमीन पक रही' (१९८०) से लेकर 'बाघ' (१९९८)तक उनकी लगभग एक दर्जन गंभीर कृतियाँ हिन्दी साहित्य जगत् की श्रीवृद्धि कर रही हैं। प्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक और 'सर्वोदय जगत'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(वाराणसी) के सम्पादक रामप्रवेश शास्त्री की कुल मानक रचनायें सन् ७० के बाद की ही हैं। 'सत्यपथ' (महाकाव्य) से लेकर 'सब घट मेरा साइयाँ' (ललितनिबन्ध), सन् २००० तक उनकी बीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें काव्य, महाकाव्य, निबन्ध और गांधीदर्शन आदि विषयक कृतियाँ हैं। ऐसी ही स्थिति डॉ. दूधनाथ सिंह और डॉ.कृष्णबिहारी मिश्र आदि की है। बलिया की धरती से उपजी यह आधुनिक मध्य पीढ़ी वास्तव में बहुत गौरवास्पद है। इसने विविध विधाओं और क्षेत्रों में यश अर्जित किया है।

अब रही बात नयी पीढ़ी की । वास्तव में इसकी उपलब्धियाँ लगभग सन् १९७० के बाद की हैं। डॉ. अशोक द्विवेदी, डॉ. आद्याप्रसाद द्विवेदी, डॉ. भगवतीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल' , लालजी सहाय 'लोचन', हरिहर ओझा 'तरुण' , डॉ. रघुवंशमणि पाठक, कन्हैया पाण्डेय, भोलाप्रसाद आग्नेय, पद्मदेव 'पदम', सीताराम पाण्डेय 'प्रशान्त', पं.दीनानाथ चतुर्वेदी 'सुहृद', अनन्त प्रसाद रामभरोसे, त्रिभुवन प्रसाद प्रीतम, जितेन्द्र भारती, शंभुनाथ उपाध्याय, केदारनाथ पाण्डेय, हरिवंश तिवारी, शिवानंद 'पतंग', वीरेन्द्र विद्यार्थी, कमला सिंह 'कमलेश', श्रीराम सिंह 'उदय', सुरेश द्विवेदी, नगेन्द्र भट्ट, राजेश्वर प्रसाद, (राजगुप्त) राधामोहन उपाध्याय, हीरा लाल 'हीरा', श्री कृष्ण बालापुरी, राजेन्द्र भारती, रमाशंकर पाणडेय, 'नवल', बद्रीनारायण तिवारी शांडिल्य, विजय बलियाटिक, तारकेश्वर मिश्र 'राही', सूर्य कुमार पाण्डेय, जनार्दन राय, कलीमुल्लाह कलीम, बृजेन्द्र सिंह वैरागी, अवधविहारी तिवारी, राकेश पाण्ड्या, बलराज पाण्डेय, और बद्रीविशाल मिश्र आदि ने अपने अपने क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

कुमारी विनीता दत्त (बालूपुर) ने 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में बलिया जनपद का योगदान' शीर्षक एक विशाल शोध प्रबन्ध डॉ.आद्याप्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में (पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के लिए) बहुत परिश्रम के साथ तैयार किया है। इस विषय के सांगोपांग अध्ययन के लिए उस शोधप्रबन्ध को पढ़ा जाना चाहिए।

मेरे निबन्ध से पाठकों को संक्षेप में बलिया जनपद की साहित्यिक परम्परा की महत्त्वाकांक्षी झाँकी भर मिल जाय तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा। (लेखक)

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक की कुछ अन्य कृतियों में गाजीपुर के संदर्भ और संस्मरण

१. **'नया गाँवनामा'**– *(कुल ३१ ललित निबन्धों के इस संकलन में तीन निबन्ध)*

क- फूलनपुर के काँटे (गाजीपुर सिटी स्टेशन के समीपवर्ती फूलनपुर गाँव का चित्रण)

ख- 'कैसे बुझेगी यह आग' (करण्डा गाँव की एक विशेष स्थिति का चित्रण)

ग- 'एक गँवार पद्मश्री' (शेरपुर गाँव के सीताराम पाल का संस्मरण)

२. **'आँगन के बन्दनवार'**–*(पूर्वी उत्तरप्रदेश के विशिष्ट व्यक्तियों के इस ४३ संस्मरणों के सन् २००२ में प्रकाश्य संकलन में से बारह संस्मरण)*

क- महाकवि श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश': अविस्मरणीय युगपुरुष

ख- कर्मयोग बनाम लेखनयोग के सिद्ध पुरुषः डॉ. भोलानाथ तिवारी

ग- 'अँजुरी भर मोती का गायकः भोलानाथ गहमरी

घ- रवीन्द्रसाहित्य के हिन्दी साधकः-डॉ. सरजू तिवारी

ङ- लोकरस गंधी विशेषज्ञता की सृजनात्मक भूमिः- कवि रामवृक्ष राय 'विधुर'

च- सर्मपित पत्रकारः विजयकुमार

छ- समाजवादी योद्धा ऋषिः- दलशृंगार दूबे

ज- सिद्धेश्वरप्रसाद सिंह : स्वाध्याय का साथ रहा

झ- राजेश्वरप्रसाद सिंह : अन्यतम समाज सेवी

ञ- राधामोहन राय : अविस्मरणीय हाकी खिलाड़ी

ट- कर्मकुशल योगी : चन्द्रमा शर्मा 'रसेश'

ठ- एक शिष्य मित्र :शेषनाथ राय

३. **'मेरे सुहृद श्रद्धेय'**–*(भारत के विशिष्ट व्यक्तियों और साहित्यकारों के इस ४३ संस्मरणों के सन् २००३ में प्रकाश्य संकलन में से सात संस्मरण)*

क. आधुनिक निबन्ध के शिखर साधक :कुबेरनाथ राय

ख. रामनाथ त्रिवेदी : राहुल जी के एक सहयोगी (रामनाथ त्रिवेदी जमानिया के टिसौरी गाँव के थे)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग. नजीर हुसैन : सिपाही कभी सेना का नायक और कभी भोजपुरी फिल्मों का।

घ- स्वामी सहजानन्द सरस्वती और उनका गाँव देवा

ङ- अब्दुल हमीद : परमवीरचक्र -विजेता

च- डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ : समीक्षा क्षेत्र का आश्वास्तकारी भविष्य

छ- मेरी माता जी

४. गँवई गन्ध गुलाब – *(रेखाचित्र और ललित निबन्ध की कुल बाइस रचनाओं में से छः रचनायें)*

क- बँगलेवाली माँ जी *(गोराबाजार स्थित एक घोष बाबू के परिवार की माताजी का रेखाचित्र) लेखक सन् १९६७ के इर्दगिर्द वहाँ किरायेदार रहा।)*

ख. खेदू *(जहाँ आदर्श विद्यालय (महुआबाग) है वहीं पहले क्षत्रिय छात्रावास था और खेदू उसी में चपरासी था, उसी का रेखाचित्र)*

ग-बउरहिया *(कमसड़ी गाँव की एक हरिजन वृद्धा का रेखाचित्र)*

घ. बड़े बाबू *(स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर में कार्यरत एक बाबू (५६-५७ के इर्द गिर्द का रेखाचित्र)*

ङ- मौलवी साहब *(गाजीपुर शहर के रजदेपुर मुहल्ले के रहने वाले जनाब मुहसिन अली साहब मिडिल स्कूल महेंद में लेखक के गुरु रहे)*

च- 'गँवई गन्ध गुलाब' *(सर्वोदय इन्टरकालेज, खरडीहा के एक आदर्श अध्यापक श्री शिवमंगल राम का रेखाचित्र)*

५. फिर बैतलवा डाल पर (ललितनिबंध-संग्रह)– *(लेखक की कुल तेइस रचनाओं में से दो रचनायें)*

क-दूखन *(लेखक के गाँव सोनवानी का एक श्रद्धाजीवी आस्तिक बूढ़ा जो बाद में लेखक के एक उपन्यास 'पुरुष पुराण ' का नायक बना।*

ख- प्रेत के लीला *(लेखक के खरडीहा इन्टरकालेज, गाजीपुर वाले जीवन की एक घटना के परिप्रेक्ष्य में)*

६. राम झरोखा बइठि के (भोजपुरी फीचर संकलन)– *(कुल तीस रचनाओं में से पाँच रचनायें)*

क- टिकइत केतना टिकाऊ बा *(१३ नवम्बर ८८ को किसाननेता टिकइत की जो पंचायत लंका मैदान में आयोजित थी, उसी का चित्रण)*

ख- लोकप्रियता के शिखर सरजू पाण्डेय *(गाजीपुर के कम्युनिस्ट नेता सरजू पाण्डेय से जुड़ा एक विशिष्ट संदर्भ)*

ग- नेत्रदान : गाँव की गली से सड़क तक (कोटवा नारायणपुर के पास स्थित मसोन गाँव के एक नेत्रचिकित्सा -शिविर पर आधारित फीचर)

घ- 'रेखांकन पट्टिका के सड़कि बनि गइलि' (बलुआ तराँव गाँव के रेखाचित्रकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और कलाकार रमेशकुमार पर आधारित फीचर)

ङ- 'कुकुरमुत्ता उगाये से है उगता' (कुंडेसर स्थित अशोक संस्थान के अन्तर्गत मसरूम (कुकुरमुत्ता) के उत्पादन पर आधारित रिपोर्ताज)

च- 'कृषि क्रांति कहाँ से कहाँ तक चोंहपलि' (विश्वम्भरपुर गाँव के बाबू राघव शरण राय का रेखाचित्र)

७- 'आम रास्ता नहीं है'(ललित निबन्ध)– *(कुल चौवालिस रचनाओं में से तीन रचनायें)*

क. मेरा गाँव

ख. मेरा लेखक

ग. अवध में होरी खेले रघुबीर *(अपने गाँव के होली-गायन का वर्णन)*

८- जगत तपोवन सो कियो (ललित निबन्ध): *कुल अट्ठाइस रचनाओं में से दो रचनायें।*

क. एक छोटा सा इतिहासपुरुष *(अपने गाँव के बिन्द जाति के सोखा नामक लोकप्रिय व्यक्ति का चित्रण)*

ख. 'सतरंग खेलौं अपने पिया संग'*(गाँव के होलिकोत्सव के एक विशिष्ट रोमांचक अवसर पर सम्पन्न वैचारिक यात्रा)*

९- श्वेतपत्र(उपन्यास)

(इस उपन्यास में सन्१९४२-४३ के जनान्दोलन में गाजीपुर के कुछ गाँवों की भागीदारी को उन गाँवों के कुछ स्वाधीनचेता समर्पित व्यक्तियों के चित्रांकन के साथ प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है।)

१०-पुरुष पुराण (उपन्यास)

(इस उपन्यास में लेखक के अपने गाँव सोनवानी के एक अतिवृद्ध और पुरानी पीढ़ी के श्रद्धाजीवी व्यक्ति का औपन्यासिक रेखांकन है। उस व्यक्ति का नाम दूखन है और वह कुम्हार जाति का है, अर्द्धशिक्षित है परन्तु अपने विश्वास के बल पर समस्त शिक्षित जगत् को चुनौती देता है। वह अतिदुर्बल होकर परमवीर, असहाय होकर भी सबका सहायक है तथा स्वयं में गंभीर प्रश्न होकर भी अत्यन्त मनोरंजक उत्तर है)

११- जलूस रुका है (रिपोर्ताज और ललित निबन्ध) – *(कुल बाइस रचनाओं में से दो रचनायें)*

क- चौमुख बाबा का गाँव- *(गाजीपुर के ऐतिहासिक गौसपुर-कठौत ग्राम पर आधारित रचना। यहाँ राजा मान्धाता की राजधानी रही है। यहाँ से ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक महत्त्व की वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं।)*

ख. 'पाँच पानी खेत में पचास पानी खलिहान में' *(यह रिपोर्ताज २९अगस्त ७१ के*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मयुग में छपा था। इसमें गाजीपुर के करइल अंचल में हुई अतिवृष्टि का चित्रण है। यह रचना इतनी चर्चित हुई कि अगले वर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की सेकेण्डरी कक्षाओं के पाठ्यक्रम में स्वीकृत हो गयी और 'विविधा' नामक पाठ्यपुस्तक में प्रकाशित हुई)

१२- आस्था और चिन्तन(निबन्धसंग्रह) –*(कुल पच्चीस रचनाओं में से एक रचना)*

क. भगती उपजी भुड़कुड़ा *(बाबरी सम्प्रदाय के भीखा-गुलाल आदि सन्तों की साधना स्थली का ऐतिहासिक चित्र-विवरण)*

१३. गंगा यमुना सरस्वती:(भोजपुरी-विविधविधा)--*(कुल १८ रचनाओं में से दो रचनायें)*

क- झिरिहिरी- *(बाढ़क्षेत्र के गँवईं नौका-विहार पर आधारित)*

ख- हरियर हरियर महादेव *(हल-बैलों द्वारा पुरानी खेती में रबी की बुआई के एक दुर्लभ रोमांचक संदर्भ पर आधारित)*

१४- भोजपुरी साहित्यः प्रगति की पहचान – *(इस विशाल समीक्षात्मक ग्रन्थ में निम्न तीन समीक्षायें)*

क- 'हृदयेश' जी की *'भोजपुरी सतसई'*

ख- राजेश्वरी शांडिल्य की रचना *'गूलर के फूल'*

ग- अचल जी का उपन्यास *'सुन्नर काका'*

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ. विवेकी राय : लेखकीय परिचय

डॉ. विवेकी राय एम्. ए., पी-एच-डी.(जन्म : १९ नवम्बर, सन् १९२४)। अध्यापकीय जीवन का आरम्भ १९४३ ई. से हुआ और १९८७ में स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर के 'हिन्दी विभाग' से अवकाशप्राप्ति हुई। सन् १९५० से लेखक और पत्रकार जीवन का आरम्भ हुआ। विशिष्ट शैलीकार के रूप में हिन्दी की उच्चकोटि की पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहे। प्रकाशित रचनाओं का विवरण निम्नलिखित है –

काव्य

अर्गला, रजनीगंधा, यह जो है गायत्री, दीक्षा, लौटकर देखना।

उपन्यास

बबूल, पुरुष पुराण, लोक ऋण, सोनामाटी, समर शेष है, मंगल भवन, नमामि ग्रामम्, अमंगलहारी, देहरी के पार।

ललितनिबन्ध

फिर बैतलवा डाल पर, जलूस रुका है, गँवई गंध गुलाब, मनबोध मास्टर की डायरी, नया गाँवनामा, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, आम रास्ता नहीं है, जगत तपोवन सो कियो, जीवन अज्ञात का गणित है, वनतुलसी की गन्ध।

कहानीसंग्रह

जीवन परिधि, गूँगा जहाज, नयी कोयल, कालातीत, बेटे की बिक्री, चित्रकूट के घाट पर, विवेकी राय की श्रेष्ठ कहानियाँ, श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ, विवेकी राय की तेरह कहानियाँ (प्रकाश्य)।

निबन्ध, शोध-समीक्षा और अन्य

त्रिधारा, गाँवों की दुनियाँ, किसानों का देश, अध्ययन आलोक, स्वातंत्र्योत्तर कथासाहित्य और ग्रामजीवन, हिन्दी उपन्यास :उत्तरशती की उपलब्धियाँ, हिन्दी कहानी : समीक्षा और सन्दर्भ, समकालीन हिन्दी उपन्यास : विविध आयाम, आस्था और चिन्तन, गणदेवता से गुडअर्थ तक, गुरुगृह गयउ पढ़न रघुराई, कल्पना और हिन्दी साहित्य, संगम का साहित्यिक सिद्ध, आँगन के बन्दनवार, गाजीपुर संवाद, मेरे सुहृद श्रद्धेय (प्रकाश्य)

लेखक की भोजपुरी रचनायें

के कहल चुनरी रँगा ल (ललित निबन्ध), जनता के पोखरा (काव्य), भोजपुरी कथासाहित्य के विकास (समीक्षा), ओझइती (कहानीसंग्रह), गंगा यमुना सरस्वती (विविध विधा), राम झरोखा बइठि के (फीचर), अमंगलहारी (उपन्यास), कथुली गाँव(भोजपुरी कथासंकलन), भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विविध साहित्यसेवा

(पूर्व) हिन्दी समिति उत्तर प्रदेश सरकार लखनऊ, भोजपुरी अकादमी बिहार सरकार पटना, आकाशवाणी इलाहाबाद, अखिल भारतीय लेखक संगठन दिल्ली, विश्व भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना, विश्व भोजपुरी सम्मेलन देवरिया, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना, भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद् मुजफ्फरपुर, अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद् उजियार (बलिया) और अन्य अनेक साहित्यिक सामाजिक संस्थाओं से सदस्य, उपाध्यक्ष, अध्यक्ष और संरक्षक रूप में जुड़े। आकाशवाणी और दूरदर्शन के लेखक। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में डॉ. राय के साहित्य पर हो चुके और हो रहे शोध-कार्यों की संख्या ३ दर्जन से ऊपर है। उन्होंने सन् १९४२ के स्वतंत्रतासंग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया था। हिन्दी की स्तरीय पत्रपत्रिकाओं में विगत आधी शताब्दी का मूल्यवान् रचनात्मक अवदान।

प्रमुख सम्मान और पुरस्कार

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद, अ. भा. भोजपुरी सा. सम्मेलन पटना, साहित्य मंडल श्रीनाथ द्वारा (राजस्थान), भोजपुरी साहित्य मण्डल बक्सर (बिहार), अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद् उजियार (बलिया), साहित्यायन गाजीपुर, अंचल प्रकाशन एवं विचार मंच देवरिया, साहित्य-संगम सिकन्दरपुर बलिया, हिन्दी विद्यापीठ देवघर, अ. भा. लेखक संगठन दिल्ली, स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर, अशोक विचारमंच पटना, रोटरी क्लब गाजीपुर, गाजीपुर संघ कलकत्ता आदि द्वारा सम्मानित-पुरस्कृत।

२. हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'सोनामाटी' पर प्रेमचन्द पुरस्कार (८७)

३. केडिया सांस्कृतिक संस्थान देवरिया, (उ.प्र.) द्वारा 'मंगल भवन' पुरस्कृत और आनन्द सम्मान प्राप्त।

४. विक्रमशिला विद्यापीठ , गांधी नगर, ईशीपुर (भागलपुर) द्वारा 'विद्यासागर' तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'विद्यावाचस्पति' एवं 'साहित्य महोपाध्याय' की मानद उपाधि।

५. हिन्दी संस्थान, उ.प्र. सरकार लखनऊ द्वारा साहित्यभूषण सम्मान (१९९४)

६. नगरपालिका गाजीपुर द्वारा बड़ीबाग, गाजीपुर की सड़क का 'डॉ. विवेकी राय मार्ग ' नामकरण (१९८३)।

७. दूरदर्शन लखनऊ(सन् १९८०), दूरदर्शन गोरखपुर (सन् १९९५) और दूरदर्शन मऊ (सन् २०००) द्वारा लेखन पर वृत्तचित्र -निर्माण।

८. मध्य प्रदेश शासन द्वारा सन् १९९६-१९९७ का राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान प्राप्त।

९. बिहार सरकार राजभाषा विभाग द्वारा १९९४-९५ का आचार्य शिवपूजन सहाय पुरस्कार लेखक की पुस्तक 'जगत तपोवन सो कियो' पर प्राप्त।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०. हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विभिन्न वर्षों में चार पुस्तकें पुरस्कृत।

११. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) द्वारा 'अमंगलहारी' (भोजपुरी उपन्यास) पर 'अभय आनन्द पुरस्कार'।

१२. स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज (दिल्ली) का स्वामी सहजानन्द सरस्वती सेवा-पुरस्कार।

१३. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य सप्तशताब्दी महोत्सव(पंचगंगा घाट ,काशी) के अवसर पर प्राप्त प्रशस्तिपत्र (गाजीपुर-२०००ई.)

१४. साहित्य मंडल नाथ द्वारा (राजस्थान) द्वारा हिन्दीसेवी सम्मान १९९९ ई.।

१५. अ. भा. भोजपुरी परिषद् उत्तर प्रदेश, लखनऊ द्वारा भोजपुरी भास्कर की उपाधि १९९४ ई.।

१६. वी.ब.सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर द्वारा २०००ई. में 'पूर्वांचल रत्न' सम्मान।

१७. साहित्यकार संसद, समस्तीपुर (बिहार) द्वारा शिखर साहित्यिक सम्मान २००२ ई. (लेखक की कृति 'दीक्षा' पर)।

१८ .केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, दिल्ली के अन्तर्गत) द्वारा दीर्घकालीन साहित्यसेवा के लिये 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन सम्मान' सन् २००२ ई.।

रचनाओं का भाषान्तर

१. लेखक की कहानियों का उर्दू अनुवाद मुहम्मद इसराइल अंसारी (कलकत्ता) द्वारा।

२. कहानियों का पंजाबी अनुवाद फूलचन्द मानव (चंडीगढ़) द्वारा।

३. कहानियों का मराठी अनुवाद प्रकाशबाबू कांबले (सतारा) द्वारा।

४. 'श्वेतपत्र' उपन्यास का उड़िया अनुवाद श्रीमती शैलबाला दास कान्तावनियाँ (कटक) द्वारा।

डॉ. विवेकी राय के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाशन

१. माटी की महक सं.- डॉ. सत्यकाम

२.टूटे हुए गाँव का दस्तावेज (लोक ऋण : बनगंगी मुक्त है)सं. डॉ. सर्वजीत राय

३. अर्द्धशती-सृजनयात्रा सं.- डॉ. अनिलकुमार 'आंजनेय'

४.सृजन यज्ञ जारी है सं.- डॉ. अनिलकुमार 'आंजनेय'

५. अक्षर बीज की हरियाली -ले. डॉ. वेदप्रकाश 'अमिताभ'

सम्पर्क

डॉ. विवेकी राय

डॉ. विवेकी राय मार्ग, बड़ी बाग, गाजीपुर उ.प्र.

पिन : २३३००१, फोन : (०५४८) २२१६१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

.... कुछ और परिचय

डॉ. विवेकी राय नैष्ठिक विद्याव्रती, एकान्तव्यासंगी एवं समर्पित साहित्यसाधक हैं। आचार-विचार से सात्त्विक और सम्पूर्णत : एक अराजनीतिक व्यक्ति हैं। होश सँभालने से लेकर अब तक घर-गृहस्थी के दुर्वह प्रपंचों और उत्तरदायित्वों से दबे-दबे लेखनकार्य चलाते रहने के लिए लेखक सदा विवश रहा है। उसका आधा जीवन अपने छोटे से, संचारसाधन -हीन, अविकसित, धुर देहाती गाँव में अध्यापकजीवन और किसानों के बीच बीता। बाद में एक शहर में आने का संयोग मिला भी तो वह शहर पूर्वी उत्तर प्रदेश के अति पिछड़े शहरों में से एक निकला। अवरोधक नियति सदा उसके पीछे लगी रही। मिडिल स्कूल के बाद लेखक की शेष शिक्षा गाँव-घर में रहकर व्यक्तिगत छात्र के रूप में ही चलती गयी।

लेखक की संबलहीन जीवनयात्रा से यह प्रत्यक्ष है कि स्थान-बल, परिवार-बल, परिवेश-बल, पद-बल, परिचय-बल, सहयोगी-बल,(उच्चस्तरीय सहपाठी अथवा सहकर्मी शिक्षक) राजनीतिक बल, सहधर्मी लेखक बल या खेमे का बल और इस तरह के लेखनकार्य में सहायक बलदाक्षिण्य का सौभाग्य उसे नहीं मिला। मिलीं निदारुण उपेक्षाएँ, जिनके बारे में लेखक की स्वीकारोक्ति है कि इन्हीं उपेक्षाओं से उसे निरन्तर अन्तःप्रेरणा की अक्षय शक्ति और निःशेष ऊर्जा मिलती रही है। लेखक की जो भी उपलब्धि रही, वह उद्देश्यनिष्ठ-एकोन्मुख अनवरत संघर्ष, आत्मबल, साध और साधना की फलश्रुति ही है। यह संयोगाधीन नहीं है, दानप्राप्त भी नहीं है, यह है स्वायत्त धर्मकर्म-विपाक। इस विवेकी आस्थावान् निःस्पृह कर्मयोगी का सृजनयज्ञ भारतीय जनजीवन के योगक्षेम अथवा लोकमंगल के उद्देश्य से प्रमादहीन भाव से अविराम चलता रहा। धरती से संसक्ति को प्रमाणित करती उसकी गंभीर, मौलिक तथा विविध विधाओं की मानक कृतियाँ प्रकाश में आती गयीं। धरतीराग से संश्लिष्ट अनवरत साधना और नितान्त एकान्तनिष्ठा का ही यह फल है कि अनेक विधाओं और क्षेत्रों में लेखक का अवदान महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक हो गया।

—*'अर्द्धशती सृजनयात्रा'* से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रमणिका

अक्षयवर पाण्डेय	६६, ६७	आनन्द संधिदूत	६२
अच्युतानन्द मिश्र	८५, ८६	आनन्दकृष्ण	७६
अजय राय	८८	आलोकरंजन	९२
अजीज गाजीपुरी	७३	आवारा गाजीपुरी	८८
अजीतकुमार राय	६९, ८०	आशुतोष	७२
अतवारूलाल 'मुग्ध'	७०	आश्विन	९४
अनंतप्रकाश वर्मा	६८	आसी	४२
अनन्तदेव पाण्डेय	६७, ७७	ओंकारनाथ लाल	८८
अनिरुद्ध पाण्डेय	६०	ओंकारनाथ शर्मा	९२
अनिलकुमार 'अनिलाभ'	८७	इन्तजार अहमद	७३
अनुरागशंकर वर्मा	९५	इन्दीवर	७२
अनूप कालपुरुष	९५	इन्द्रजीत राय	७२
अभयनारायण सिंह	८८, ८९	इन्द्रदेव सिंह	४१,५६, ७६,७७
अमरनाथ 'अमर'	८१	इन्द्रदेव सिंह 'इन्द्र'	७६
अमरनाथ श्रीवास्तव	६६	ईश्वरीप्रसाद सिंह 'ईश'	६१
अमरेन्द्र राय	८८	उदय नारायण राय	६३
अमृतांशु	९६	उदयप्रताप सिंह	७१
अम्बिका राय 'अम्बु'	६२	उपेन्द्र सिंह	६७
अर्जुनदास केसरी	७३	उबैदुर्रहमान	७४
अलखनारायण राय	८४	उमाकान्त वर्मा	९५
अलीशेर खाँ	७३	उमाशंकर	६४
अवधविहारी राय	७१, ८१	उमाशंकर तिवारी	५७, ६९, ८०
अवधेश प्रधान	५२	उमाशंकर सिंह	८०
अवधेश प्रीत	51, 87	उमाशंकर सिंह 'पथिक'	६३
अवधेशनारायण राय	६८	उर्मिला तिवारी	६८, ८०
अवधेशनारायण सिंह	८१	उर्मिलेश	८७
अविनाश प्रधान	५४	उषा राय	६७
अशोक द्विवेदी	६०, ८२	उस्मान	४२
अशोक सिंह	९५	ऋचा राय	६७, ७०
अश्विनीकुमार सिंह	८८	ऋता शुक्ला	९५
आत्माराम पाण्डेय	८८	ऋषिमुनि तिवारी	६४
आनन्द प्रधान	६९, ८७	ए. वाई. अब्बासी	८०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एम. डी. सिंह ६७
कपिल मुनि 'पंकज' ६९
कपिलदेव द्विवेदी ७४, ८२
कमल टावरी ९३
कमलापति प्रधान ६४
कमलाप्रसाद शर्मा ८३
कमलाशंकर त्रिपाठी ५२
कामताप्रसाद सरावगी ६४
कामेश्वर दूबे ७०
कामेश्वर द्विवेदी ६८
कार्तिककुमार चटर्जी ८९
काशीनाथ द्विवेदी ७४, ७९, ८०
कासिद बकार फरीदी ७३
किरणबाला शर्मा ६८
किशोरीलाल गुप्त ७१
किशोरीशरण शर्मा ९३
किश्वर सुल्ताना ९६
कीर्तिकुमार सिंह ९५
कुबेरनाथ राय ४६,४७,५०, ५२
कुमार शैलेन्द्र ६७
कुमारी चन्दन ६८
कृपाशंकर राय ६८
कृष्णकुमार सिंह ७१
कृष्णचन्द्र दूबे ६८
कृष्णबिहारी मिश्र ८४
कृष्णमोहन ८७
कृष्णानन्द राय ६०, ८२
के. डी. राय ७८
केदारनाथ भारती ७३, ७५
केद..नाथ सिंह ६८
कैलाश पासवान ७२
कैलाश मिश्र ५२, ७९
कैलाशनाथ पाण्डेय ६५
कैलाशनाथ राय ६८
कैसर शमीम ७३
खुर्शीद खाँ ७३
गंगाधर पाण्डेय ६६
गंगासागर राय ७४, ८७
गजाधर प्रसाद 'गंगेश' ८७
गजाधर शर्मा ८८
गजानन मिश्र ९२
गणेश उपाध्याय 'गोबर गणेश' ६७, ६९
गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' ८२
गिरिराज शाह ९२
गीता गुप्त ६७
गुरुभक्त सिंह 'भक्त' ९१
गुलाल साहब ४१
गैब बाबा ७७
गोपाल तन्हा ६८
गोपाल प्रधान ५४
गोपालकृष्ण द्विवेदी ६८
गोपालराम गहमरी ४३, ८३
गोवर्धन राय शर्मा ५४
गोवर्धन राय नामी ७२
गोविन्द साहब ४१
गौरीशंकर चतुर्वेदी ७६
गौरीशंकर मिश्र ६१
गौरीशंकर राय 'विमल' ६२
चक्र जी ७७
चन्द्रदेव राय ८७
चन्द्रदेव शर्मा 'निशेश' ६३, ७३
चन्द्रबली राय ६४
चन्द्रबली सिंह 'हंस' ६७, ७६, ८०
चन्द्रभान मिश्र ६९, ७१
चन्द्रभाल सुकुमार ९४
चन्द्रमा शर्मा 'रसेश' ८२
चौथीराम यादव ९३.
जगदीश्वर प्रसाद 'मारुकि किंकर' ७७
जगदीश ओझा 'सुन्दर' ९२
जगदीश्वर राय ६८. ७७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगरदेव पाण्डेय ८७
जनार्दन ज्वाला ६७
जनार्दन राय ९३
जनार्दन सिंह ७०
जयनारायण उपाध्याय ८३
जयनारायण राय ६१
जायसी ४२
जितेन्द्र राय ८०
जितेन्द्रकुमार सिंह ७९, ८०
जितेन्द्रनाथ पाठक ४९,५७, ७०,८१
जितेन्द्रनारायण राय ६८
जैनेन्द्र वात्स्यायन ६८
ज्ञानानन्द सरस्वती ७८
ज्योत्स्ना गहमरी ७०
डण्डा ६८
डी. एन. राय ९४
तुलसीनारायण सिंह. ५२
त्यागी मुखदेव सिंह ८८
त्रिभुवननाथ 'वेणु' ६८
त्रिभुवननाथ पाण्डेय ६८, ६९
त्रिवेणीप्रसाद खालिश ७०
दयानंद श्रीवास्तव ५४
दयाशंकर उपाध्याय ६८
दयाशंकर चतुर्वेदी ७६, ७८
दानिश जमाल सिद्दीकी ७३
दामोदर पाण्डेय ६६
दिनेश राय ६८
दिनेशचन्द्र शर्मा ६७
दीप्ति श्रीवास्तव ६७
दुबरी राय ६८
दुर्गाप्रसाद तिवारी ६८
देवताप्रसाद गहमरी ८३
देवनारायण शर्मा ८४
देवनारायण सिंह 'राकेश' ९३
देवेन्द्रप्रताप सिंह ९०
धर्मदेव राय ८९
धर्मनारायण मिश्र ७९
नंदलाल पाठक ६४
नन्दकिशोर राय 'राकेश' ६८
नन्दलाल यादव ६९
नन्दलाल राम गुप्त ६३
नफीस आलम ७४
नरेन्द्र श्रीवास्तव ७२
नरेन्द्र सिंह ६३
नर्मदेश्वर राय ५२
नागानन्द वात्स्यायन ६७
नारायणदत्त त्रिपाठी ७४
नित्यानन्द तिवारी ४९
नीलम राकेश ९४
पन्नालाल महतो 'हृदय' ९३
परमानन्द चतुर्वेदी ८८
परमानन्द शर्मा ६४, ६५, ८४
परमानन्द शुक्ल ६८
परमानन्द सिंह ५६, ७९, ८०, ८८
परमेश्वर राय 'राजेश' ७१
परशुराम तिवारी ६१
पराहू सिंह 'प्रबुद्ध' ६७
पल्टू साहब ४१
पवनकुमार वर्मा ६९
पी. सी. तिवारी ९४
पुरी साहब ४१
पुरुषोत्तम वर्मा ६९
प्यारेलाल ७०, ७२
प्रतिमा वर्मा ४९
प्रदीप पुष्कल ६७
प्रमोदकुमार दीक्षित ६६
प्रवीणकुमार ६९
प्रसिद्धनारायण सिंह ७२
प्राची राय ६७
प्रेम तिवारी ९५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेमशंकर चौबे ६७
फजीहत गाजीपुरी ६७
फूलचन्द भारती ८८
बच्चनप्रसाद गुप्त ६८
बटुकदेव शर्मा ६४,८४
बब्बन पाण्डेय ८५, ८७
बरमेश्वरनाथ राय ६८
बलदेव सिंह ६८
बवण्डर जी ६८
बाबूलाल बलवन्त ६४
बालकृष्ण यति ७६
बालमुकुन्द सिंह गहमरी ८८,८९
बालेश्वर दीप ८७
बालेश्वर राय ५४
बालेश्वर राय 'व्यथित' ६७
बिशन लाल कपूर ९२
बुलाकी ४१
बूला साहब ४१
बृजमोहन चंचल ६३
बैजनाथ राय ८४
ब्रजमोहन चतुर्वेदी ७५
ब्रह्मानन्द सिंह ७०
भगवान सहाय पचौरी ९३
भरत आनन्दकर ६१
भागवत मिश्र ४४
भारतेन्दु द्विवेदी ५३
भीखा साहब ४१
भोलानाथ गहमरी ५५,७०
भोलानाथ तिवारी ४६. ,५७,६८
मँगरू साहब ७६
मंगलाप्रसाद श्रीवास्तव ९२
मदनगोपाल सिन्हा ६९
मदनमोहन चतुर्वेदी ७६
मधुकर दूबे ७४
मधुरेश ६९, ७२
मधुरेश दूबे ८८
मनोज ६९
मनोज पाण्डेय 'मनमीत' ६८
महादेवराम विश्वकर्मा ७६
महावीरप्रसाद गहमरी ४३, ८३
महेन्द्रकुमार सिंह 'नीलम' ६४
महेन्द्रनाथ राय ५१
माताप्रसाद गहमरी ४४
माधुरी मिश्र ८०
माधुरी वर्मा ६८
मानव दूबे ७४
मान्धाता राय ५०, ७३, ८१, ९३
मान्धाता सिंह ७६, ८८
मायानन्द ४१
मारकण्डेय राय ८३
मालती तिवारी ८०
मालविका ९६
मिथिलेश गहमरी ६७
मुकुल प्रियदर्शिनी ६८
मुख्तार सिंह दीक्षित ६०
मुनीश रजा ५४
मुन्शी उदितनारायण लाल ४३
मुरलीधर सिंह 'अंश' ९२
मृणालिनी ९४
मृदुललता ७१
मोती सिंह ९२
मोहन उपाध्याय ६९
मोहन कुशवाहा ६९
यशवन्त सिंह 'यश' ७१
यशोधर दूबे ७४
युधिष्ठिर तिवारी ६८, ८०
योगेश विक्रान्त ८२
रंगनाथ राकेश ६९
रंजना श्रीवास्तव रंजू ५९
रईस शहीदी ७३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रघुनाथप्रसाद वर्मा ८८
रजी अहमद बेखुद ६७
रत्नाकर पाण्डेय ८४
रमापति चतुर्वेदी ६८
रमापति पाण्डेय ७०
रमारमण राय ७१
रमाशंकर पाण्डेय ७०
रमाशंकर बटोही ६१
रमाशंकर राय ६७
रमाशंकर सिंह ९०
रमेशकुमार राय ७२
रमेशचन्द्र उपाध्याय ८७
रमेशचन्द्र खरवार ८८
रवि नन्दन वर्मा ८१
रविकुमार मयंक ७०
रवीन्द्रनाथ ठाकुर ९०
राकेश चन्द्रा ९३
राकेश सिंह ९५
राधा मोहन राय ७७
राजकमल राय ८८
राजकुमार त्रिपाठी ८८
राजदेव राय 'प्रियदर्शी' ५९
राजनारायण सिंह राजा ६३
राजरूप शुक्ल ८८
राजाराम तिवारी ६९
राजेन्द्र अरुण ८६, ८७, ८८, ९१
राजेन्द्र सिंह ६९
राजेन्द्र सिंह 'इन्द्र' ६६
राजेन्द्रनाथ खरे ७८
राजेन्द्रप्रसाद पाण्डेय ९१
राजेन्द्रप्रसाद वियोगी ६३
राजेश सिंह ८८
राजेश्वरी शांडिल्य ८१,९२
राजेश्वरी सक्सेना ५८, ८४
राधामोहन राय ७७
राधेश्याम राय ६६
राम उपदेश सिंह ७६
राम नाथ ऐलिया ९५
राम प्रसिद्ध प्रधान ८०
राम बरन दास ७७
राम सिंह यादव ६८
रामअवतार पाण्डेय ७६
रामअवध शास्त्री ५०
रामअवध सिंह यादव ७२
रामऔतार ८९
रामकिशोर चौबे ८८
रामकुँवर राय ५१
रामगोविन्द शास्त्री ४४, ८४
रामचन्द्र शर्मा ७४
रामचन्द्र सिंह यादव ७२
रामचरित उपाध्याय ४४
रामजन्म राम ७२
रामजन्म सिंह ६७
रामजन्म सिंह 'शिरीष' ८२, ८७
रामजी राय ६८, ७१, ८४
रामजी सिंह ६९
रामजीत ६८
रामदत्त राय शर्मा ८७, ८६
रामदास अकेला ९५
रामदेव राय ६८
रामधीरज राय 'खोरा' ६७, ७०
रामनयन सिंह ७८
रामनाथ उपाध्याय 'राकेश' ७६
रामनाथ त्रिवेदी ६४
रामनारायण तिवारी ६८
रामनिधि राय ६७
रामबचन शास्त्री 'अँजोर' ६२
रामबदन राय ६३
रामबहादुर राय ८५
रामयश सिंह ७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामवृक्ष राय 'विधुर'	५६	विष्णुदत्त पाण्डेय 'विलीन'	६९, ८०
रामव्यास पाण्डेय	८४	वीरेन्द्र कुमार सिंह	६७
रामसिंहासन शास्त्री	८२	वीरेन्द्र भरत	७७
राहीमासूम राजा	४७	वीरेन्द्र सारंग	७०
रीना सिंह	६७	वेद्प्रकाश अमिताभ	५३
लक्ष्मीकान्त 'सरस'	८२	वेद्प्रकाश पाण्डेय	७०
लक्ष्मीनारायण पाण्डेय	६७, ७२	व्यासमुनि राय	६८
लालकवि	४२	शंभुनाथ सिंह 'मधुप'	६८
लालजी वर्मा	८८	शत्रुसूदन यादव	८८
लौटू सिंह गौतम	६७	शरत सोनकर	९२
वंशनारायण मनज	६९	शशिप्रभा शुक्ल	६८
वंशराज सिंह	६९	शहजाद वारसी	७३
वाराणसी प्रसाद त्रिवेदी	६७, ७६	शाह जावेद अहमद खाँ	७३
वासुदेव पाण्डेय	६६	शिवनारायण	४१
विक्रमादित्य गहमरी	८७	शिवमंगल राय	५१, ६१
विजय अग्रहरी 'आलोक'	९२	शिवमूरत यादव	६८
विजय कुमार	८४	शिवमूरत सिंह	५७, ७२, ८१, ९४
विजयनारायण तिवारी	८८	शिवशंकर राय	५४
विजयबहादुर पाण्डेय	७६	शिवानी	९५
विजयशंकर 'पंकज'	५२, ८७	शीतला प्रसाद उपाध्याय	८३
विजयशंकर त्रिपाठी	६२, ७५, ७७	शुकदेव सिंह	४८
विजयशंकर राय	७२	शेख जैनुल आब्दीन	७३
विजयानन्द	५९	शेषनाथ राय	८८, ८९
विनय राय 'बबूरंग'	६२	श्यामविहारी राय	५२
विनोदकुमार राय	६५	श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'	४७, ६१,७०,७९
विनोदबाला अरुण	८८	श्रीकृष्णचन्द्र दूबे	६८
विन्ध्याचल पाण्डेय	६८	श्रीनाथ मिश्र	६७
विन्ध्याचल राय अचल	५५	श्रीनारायण राय	६६
विमला राय	७५	श्रीनिवास चतुर्वेदी	७५
वीरेश्वरनाथ राय	४४, ४५, ६७	श्रीनिवास शर्मा	८४
विश्वनाथ पाण्डेय 'बेखटक'	९१	श्रीप्रकाश शुक्ल	५६, ८०
विश्वनाथ राय	६४, ६७	श्रीराम सिंह गहलौत	६३
विश्वनाथ वर्मा	७५	श्रीवर पाण्डेय	७२
विश्वनाथ सिंह	६४	संजय सैदपुरी	६९
विश्वनाथप्रसाद श्रीवास्तव	९१	संजयकृष्ण	८०, ८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संज्ञा चौबे ७०
संतोष कुमार सिंह ८०
सच्चिदानन्द तिवारी ९२
सतीशचन्द्र शुक्ल 'भावुक' ९५
सतीशचन्द्र श्रीवास्तव ६७
सत्यकेतु दूबे ६५
सत्यनारायण सिंह गहमरी ८३
सत्यप्रकाश असीम ८८
सत्यमित्र दूबे ६५, ८७
सत्यानन्द ६८
सरजू तिवारी ५७, ६१, ८०,९०
सरफराज अहमद आसी ७३
सरिता शिवम् ६७, ६८
सरोजेश गाजीपुरी ८७
सर्वजीत राय ५३
सहदेव साहब ७६
साजिद गाजीपुरी ७३
सिंहासन राय 'सिद्धेश' ६४
सिद्धेश्वर ६८
सीताराम पाण्डेय ८८
सीरी हरिजन ६८
सुधाकर तिवारी ७७
सुबोध नाथ झा ७३
सुमन दूबे ६७, ६८
सुरेन्द्र प्रताप सिंह ८५
सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी 'बवंडर' ६८, ८८
सुरेन्द्रनाथ मिश्र ६८
सूबेदार सिंह 'अवनिज' ६६
सूर्यकुमार सिंह ८८
सूर्यनाथ पाण्डेय ५४
सूर्यनारायण पाण्डेय 'अज्ञ' ६९
सैफुर्रहमान अब्बाद ७३
सोटा ६८
सोमेश्वरनाथ 'मुफलिस' ६३
स्वामी आत्मानन्द ७७
स्वामी निर्वेदानन्द ९०
स्वामी विवेकानन्द ९०
स्वामी शरणानन्द ७७
स्वामी सहजानन्द सरस्वती ४४, ८६
स्वामीनाथ पाण्डेय ६८, ७२
हजारी प्रसाद द्विवेदी ४२
हरदेव पाण्डेय ६८
हरिओम् ९६
हरिद्वार प्रेमी ७२
हरिनारायण 'हरीश' ६२
हरिनारायण यादव ६३
हरिनारायण श्रीवास्तव ६८
हरिवंश पाठक 'गुमनाम' ७१
हलधर ४२
हवलदार पाण्डेय ८८
हसनैन कादरी ७३, ८८
हारून रशीद खान ७३, ८०, ८८
हीराराम गुप्त ८१
हीरालाल सिंह ५४
हृदयेश सिंह 'हृदय' ६८
हृषीकेश ६७
हेमंत कुमार ७१

◆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृतिकेन्द्र

(स्वामी जी के दुर्लभ साहित्य का प्रकाशनसंस्थान)

प्रकाशित साहित्य

१. महारुद्र का महाताण्डव	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	२५/-
२. झूठा भय और मिथ्या अभिमान	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	२५/-
३. अब क्या हो?	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	५५/-
४. स्वामी सहजानन्द सरस्वती के भाषण भाग-१		६०/-
५. स्वामी सहजानन्द सरस्वती के भाषण भाग-२		६०/-
६. स्वामी सहजानन्द सरस्वती के भाषण भाग-३		६०/-
७.सामाजिक कामों में क्यों पड़ा?	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	६०/-
८- ब्राह्मण समाज की स्थिति	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	६०/-
९-गौतम बुद्ध से स्वामी सहजानन्द तक	त्रिपुरारी राय	१५/-
१०-पुनर्जागरण का शलाकापुरुष स्वामी सहजानन्द सरस्वती-	कुबेर नाथ राय	१५/-
९-गौतम बुद्ध से स्वामी सहजानन्द तक	त्रिपुरारी राय	१५/-
११- संगम का साहित्यिक सिद्ध	डॉ. विवेकी राय	१००/-

प्रकाशनाधीन साहित्य

१. किसानों के दावे और कार्यक्रम का खरीता — स्वामी सहजानन्द सरस्वती

२. आधार शिला- (स्वामी जी का छात्रजीवन)

३. स्वामी जी के सांस्कृतिक निबन्ध

४. स्वामी जी के राजनीतिक निबन्ध

५. स्वामी जी के अध्यक्षीय भाषण

  क- बिहार प्रान्तीय किसान सभा

  ख- जिला किसान सभा आदि के सम्मेलनों के भाषण

अन्य योजनायें

१. स्वामी जी से सम्बन्धित चित्रों का संकलन

२. स्वामी जी के पत्रों का संकलन

३. स्वामी जी से सम्बन्धित संस्मरणों का संकलन

४. स्वामी जी से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की अप्रकाशित या प्रकाशित सामग्री का संकलन

५. स्वामी जी की प्रकाशित पुस्तकों के पुनर्मुद्रण के लिए प्रयास

६. स्वामी जी के किसान आन्दोलन से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन

७. स्वामी जी से सम्बन्धित शिक्षण आदि से जुड़ी संस्थाओं की सूची तैयार करना

सम्पर्क

स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मृतिकेन्द्र

मातृमन्दिरम्, डॉ. विवेकी राय मार्ग, गाजीपुर उ.प्र.

०५४८(२२३७७८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो महाकवियों की दृष्टि में गाजीपुर

नगर-गौरव

गाज़ीपुर उत्तम अस्थाना, देवस्थान आदि जग जाना।
गंगा मिलि जमुना तहँ आयी, बीच मिली गोमती सुहाई।
तिरधारा उत्तम तट चीन्हा, द्वापर तहँ देवतन तप कीन्हा।
पुनि कलिजुग महँ बसगित भई, जानहु अमरपुरी बसि गई।
ऊपर कोट हेठ सुरसरी, देखत पाप बिथा सब हरी।
बसहिं लोग बुध बहु-विज्ञानी, सैयद सेख बसै गुरु ज्ञानी।
ज्ञान छाड़ि मुख आन न भाषा, सुने सन्तोष देखि अभिलाषा।
ज्ञान ध्यान कहँ देवता, समर सभै पुनि सूर।
तप महँ मौन सभा चतुर, अरिमुख सिंह सुदूर।।

(उसमान कवि की 'चित्रावली' से)

आंचलिक छवि

बैठी अपने अँगने गेहूँ पीसें दो बहनें
गाती हैं गीत बिना थकान।
पक्का कुआँ, तरु नीचे कन्या, वहाँ पानी खींचें
तेज धूप से है मुख म्लान।
दूर नदी, बीच चर बैठ के मचान पर
अगोरें किसान निज खेती।
बच्चे चरवाहे आयें, खेलें-कूदें, नाचें-गायें
दूर कहीं नायें हैं चलती।
कित्ते काम, कित्ते खेल, कित्ते जन रेल-पेल
सुखी-दुखी भाव हैं अशेष–
उन्हीं बीच कुहू-स्वर, एकतान सकातर
पाता भला, कहाँ से प्रवेश?

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'मानसी' से : भावानुवाद डॉ.सरजू तिवारी)

CMC PRINTS: (0548) 224376

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.